

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180967

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.6 / M 216

Accession No. JH.1474

Author मेहरजन, विद्याचर ।

Title गांधी - चरित - मानस । 14-4

This book should be returned on or before the date last marked below.

श्री गांधी-चरित-मानस

[महामना गोस्वामी तुलसीदासजी की अमर कृति श्री रामचरितमानस
के ढंग पर दोहा चौपाइयों के रूप में विश्ववन्द्य प्रातःस्मरणीय
राष्ट्रपिता महात्मा मोहनदास करमचन्द गांधी की
अलौकिक तथा परमपुनीत जीवनी का काव्यमय
भाषा में विशद वर्णन]

लेखक

विद्याधर महाजन

एम. ए., पी. ई. एस.

पञ्जाब युनिवर्सिटी कालिज,
होशियारपुर

प्रकाशक

हिन्दी-भवन

जालंधर और इलाहाबाद

जून १९५४]

[मूल्य १॥=]

प्रकाशक—

इंद्रचंद्र नारंग

हिन्दी-भवन

३१२ रानी मंडी

इलाहाबाद ३

प्रथम मुद्रण

मुद्रक—

इन्द्रचन्द्र नारंग

कमल मुद्रणालय

३१२ रानी मंडी

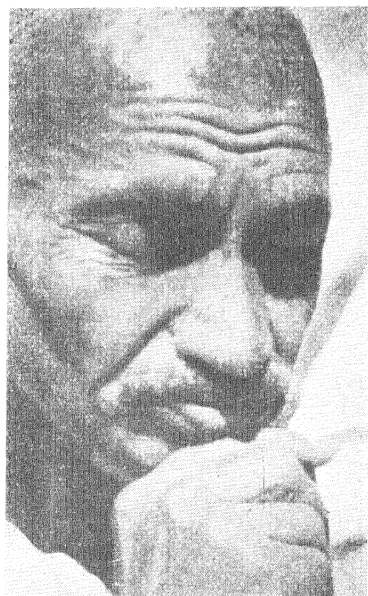
इलाहाबाद ३

बापू के चरणों में

विनीत
विद्याधर

श्री गांधीचरित दिग्दर्शनः—

जनमे प्रथम गांधि सुखभौना , दूजे कीन अफ्रिक प्रति गौना ।
तीजे चारु चरित्रविकासा , चौथे सत्यप्रभाव प्रकासा ॥
पञ्चम असहयोग कर साधन , छठे 'सुराज-देव' आराधन ।
सप्तम सुभ सुतन्त्रता-लाहू , पै पुनि गांधीनिधनकृत दाहू ॥
अष्टम गांधि-चरित-उपदेसू , बरनन कीन 'प्रसाद' विसेसू ।
गांधिचरित कर अष्ट सुपाना , अमरजियन सुभसरनि समाना ॥
अमरजियन कर अष्टअस , मानव चढ़ि सोपान ।
जीवत जग गौरव लहै , अन्तकाल निरवान ॥



महात्मा गांधी

दांडी यात्रा में ठीक पहले की संस्था को
श्री जयचन्द्र विद्यालंकार के सौजन्य से उनकी पुस्तक
'हिन्दुत्व प्रवेश' से उद्धृत

प्रकाशक की सफाई

पष्ठ सोपान का १५वाँ दोहा कवि की पांडुलिपि के अनुसार ही छपा है। परन्तु पांडुलिपि भेज देने के बाद कवि ने मुझे लिखा था कि इस दोहे को बदल कर इस प्रकार छपा जाय—

उत्तिस सौ उनतीस सन, तिथि एकोत्तर तीस ।

बरस अन्त स्वातन्त्रपन, लीनो कोटि वनीस ॥

परन्तु मेरे प्रमाद से यह संशोधन न हो सका। इसके लिए मैं कवि तथा पाठकों के समस्त क्षमाप्रार्थी हूँ। पाठकों से मेरी प्रार्थना है कि पुस्तक पढ़ना आरंभ करने से पहले उक्त संशोधन कर लें।

अगस्त १९५३ के अंत में पुस्तक के अन्तिम प्रूफ देख चुकने के बाद कवि ने श्रीयुत जयचन्द्र विद्यालंकार से “इतिहास-प्रवेश” में छपा गांधीजी का डांडी-यात्रा का चित्र श्रीगांधीचरितमानस में उद्धृत करने की अनुमति माँगी तथा उनसे पूछा कि पुस्तक की प्रस्तावना लिखने के लिए किस विद्वान् से प्रार्थना की जाय। विद्यालंकार जी ने चित्र उद्धृत करने की अनुमति देने हुए प्रस्तावना लिखवाने के लिए श्रीयुत काका साहब कालेलकर का नाम सुझाया।

इस पर कवि ने ११ सितंबर को ऋषिकेश से मुझे लिखा—

“...प्रस्तावना-लेखक संबंधी उनका (विद्यालंकार जी का) सुझाव मुझे सर्वथा मान्य है और मैं समझता हूँ कि आपको भी ठीक जँचेगा। आप सीधे ही वि० अ० जी को अथवा काका साहब को छपी पोथी के फार्म भेजने का कंठ स्वीकार करें तो मेरे विचार में अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि इससे समय की बहुत बचत हो जायगी।

मैं १४ सितम्बर को प्रातः यहाँ से चल कर हरद्वार में एक-दो दिन ठहर कर १६ के लगभग होशियारपुर पहुँच जाऊँगा। आप इस पत्र का उत्तर यहाँ न भेज कर होशियारपुर के पते पर भेजें।”

पत्र पाते ही मैंने छपी पोथी के फर्में काका साहब की सेवा में भेज दिये और कवि को होशियारपुर के पते पर पत्र लिखा कि काका साहब को

पत्र लिखें। उसके बाद और भी दो-तीन पत्र मैंने उन्हें लिखे, पर उत्तर न मिला। उनकी इस चुप्पी पर मैं हैरान था। ५ अक्टूबर को मुझे जालंधर से सूचना मिली कि 'महाजनजी का अचानक हृद्गति रुक जाने से देहान्त हो गया है। स्वर्गवास तो उनका कई दिन हुए हो चुका है, पर मुझे आज ही मालूम हुआ है।' और तब मैं समझ पाया कि '?? सितम्बर का पत्र कवि का अन्तिम पत्र था।

कवि के जीवनकाल में उनकी पुस्तक प्रकाशित न हो पाई, इसका मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। परन्तु कवि की इच्छा के अनुसार मैंने काका साहेब से पुस्तक की प्रस्तावना लिखने की प्रार्थना की। विद्यालंकारजी ने भी काका साहेब से अनुरोध किया। विद्यालंकारजी के बहुत दबाव डालने पर काका साहेब ने प्रस्तावना लिखना स्वीकार भी कर लिया। परन्तु आज तक वे इस काम के लिए समय न निकाल सके। अंत में मुझे उनके मंत्री का निम्नलिखित पत्र मिला—

‘पूज्य श्री काका साहेब को बड़ा अफसोस है कि डिसेम्बर के अंत तक तो वे ‘गांधीचरितमानस’ की प्रस्तावना नहीं लिख सकेंगे क्योंकि पिछड़े वर्ग कमिशन के काम में वे विलकुल फंसे हुए हैं। इस लिए पुस्तक का प्रकाशन अभी रोकना ठीक नहीं होगा।’

काका साहेब देश की अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या—पिछड़े वर्ग की समस्या—को सुलझाने में व्यस्त हैं। उनके सुझाव के अनुसार इस समय पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। पर जब भी वे फुरसत पा कर इस पुस्तक पर अपने विचार प्रकट करेंगे, उनको पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जायगा।

पुस्तक में व्यक्त हुए भाव और विचार कवि के हैं, प्रकाशक का उनसे सर्वत्र सहमत होना अनिवार्य नहीं।

विषय-सूची

मंगलाचरण—

१-४

ईश-वन्दना, गुरु-स्तुति, ईश-कृपामाहात्म्य, कवि-
कामना, पूर्व कवि स्तुति ।

प्रथम सोपान—जन्म तथा शैशव ।

५-२४

देश-वर्णन; कर्मचन्द-दम्पति का सुखी जीवन; पुतलि-
बाई का स्वप्न—भगवान् का वरदान, गांधी-जन्म वा बाल-
लीला, मोहनदास नाम, शिक्षा, कस्तूराबाई से विवाह,
पुत्रजन्म, पिता की मृत्यु, कुलगुरु का उपदेश, पुत्र के
विलायत भेजे जाने का प्रस्ताव सुन कर माता की
व्याकुलता, ज्येष्ठ पुत्र द्वारा आश्वासन—माता का
मोहन से ३ वचन ले कर विदेश-गमन की आज्ञा देना,
लंडन का प्रलोभन-पूर्ण जीवन मोहन को विचलित नहीं
करता, बैरिस्टर बन कर लौटना, माता की मृत्यु का
दुःखद समाचार सुन कर मोहन का विलाप, ज्येष्ठ भ्राता
द्वारा आश्वासन, विरह-व्याकुल कस्तूराबाई से भेंट,
राजकोट में वकालत आरम्भ, एक कटु अनुभव—
आत्माभिमान का परिचय ।

द्वितीय सोपान—अफ्रीका-गमन ।

२५-३८

मोहनदास जी की वकालत के प्रति घृणा, दक्षिण
अफ्रीका से सेठ अब्दुल्ला का बुलावा, अफ्रीका-गमन,
रेलवेगार्ड द्वारा अपमान, सेठ अब्दुल्ला व सेठ तैयब
जी के भगड़े का पंच-फैसला, प्लीमथ संप्रदाय के
ईसाइयों का मोहनदास को ईसाई बनाने का प्रयत्न,
मोहनदास की हिन्दु-धर्म में दृढ़ निष्ठा, अफ्रीका में
कांग्रेस की स्थापना, मोहनदास का भारत लौटना,

तिलक आदि नेताओं से भेंट, मुम्बई में प्लेग फूटने पर सेवा करना ।

तृतीय सोपान—चरित्र-विकास ।

३९-५५

अफ्रीका से फिर बुलावा, मोहनदास का पत्नी-पुत्र सहित वहाँ पहुँचना । गोरों द्वारा मोहनदास गांधी पर घातक आक्रमण, सुपरिटेंडेंट पुलिस की पत्नी द्वारा रक्षा, उनके मित्र एस्कम्ब (Ascomb) की दुष्टों पर मुकद्दमा चलाने की सम्मति, गांधी जी इस परामर्श को अस्वीकार कर अपराधियों को क्षमा कर देते हैं, गोरों का पश्चात्ताप । कांग्रेस को नवजीवनदान । भारतीय बालकों के लिये उचित शिक्षा प्रणाली के प्रबन्ध का प्रयत्न, रोगी-सेवा । अंग्रेजों और बोयर्स के युद्ध में गांधी जी के नेतृत्व में भारतीय सेवक दल की ओर से घायलों की सेवा, कृतज्ञ भारतीयों की ओर से गांधी जी को उपहार भेंट करने की उत्कट अभिलाषा, गांधी जी की अस्वीकृति, सेवक को प्रतिफल की चाह नहीं होनी चाहिये, भारत लौट कर गोखले आदि नेताओं से दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों के कष्ट-निवारण की प्रार्थना ।

चतुर्थ सोपान—सत्याग्रह ।

५६-७६

गांधी-परिवार, शिशु-शिक्षा । मणिलाल का रोगी होना, डाक्टरों का परामर्श—इसे मुर्गे का शोरवा दो तो इसके प्राण बच सकते हैं, गांधी जी इस प्रस्ताव को ठुकरा देते हैं, भगवान् पर दृढ़ निष्ठा रख कर गांधी जी स्वयं मणिलाल का औषधोपचार करते हैं, राम नाम का अलौकिक प्रभाव । फीनिक्स आश्रम की स्थापना, भारनमत नामक समाचारपत्र का प्रकाशन । गांधी जी का ब्रह्मचर्य व्रतधारण करने का निश्चय, ब्रह्मचर्य की महिमा, कस्तूरबाई की अनुमति । जनरल

स्मट्स की भारतीय-पीड़नपरायण नीति का सत्याग्रह के रूप में गांधी जी द्वारा प्रबल विरोध, सत्याग्रह का अभूतपूर्व तथा अलौकिक युद्ध, शान्तिमय प्रतिरोध की विलक्षण नीति की अप्रत्याशित रूप में विजय, गांधी जी की सत्याग्रहनीति की सफलता की सर्वत्र चर्चा, 'कर्मवीर गांधी' नाम से प्रसिद्धि, सत्याग्रह-महिमा का वर्णन ।

पञ्चम सोपान—असहयोग

७७-९९

गांधी जी का भारत लौटना, शान्ति-निकेतन में कविश्रेष्ठ रवीन्द्रनाथ ठाकुर के दर्शन, 'महात्मा'-पद-प्राप्ति, काली-मन्दिर में पशुबलि का घृणित दृश्य, काशी में विश्वनाथ-दर्शन—पुरोहितों के लोभ को देख कर उदासी, हरद्वार के कुम्भ पर अनेक प्रकार के अनाचार देख कर गांधी जी की उद्विग्नता, गुरुकुल में महात्मा मुंशीराम जी के साथ भेंट, प्राचीन शिक्षा-प्रणाली के प्रति गाढ़तर प्रवृत्ति, साबरमती आश्रम की स्थापना । १९१६—लखनऊ-कांग्रेस—हिंदू-मुसलिम समझौता । प्रथम महायुद्ध में भारत सरकार की सहायता । चम्पारन में निलहे गोरों के अत्याचारों के विरुद्ध सफल सत्याग्रह—बाबू राजेन्द्र प्रसाद से प्रथम बार भेंट, खेड़ा में किसान सत्याग्रह, चल्लभ भाई पटेल की 'सरदार' पद-प्राप्ति । रौलट-एक्ट (Rowlatt Act) के विरुद्ध हड़ताल, १९१६ अमृतसर हत्या-काण्ड, असहयोग-आन्दोलन, चौरीचौरा की दुर्घटना, असहयोग-आन्दोलन स्थगित, महात्मा गांधी की गिरफ्तारी और ६ वर्ष कैद की सजा, कृष्ण-मन्दिर में 'आत्मकथा' की रचना, साम्प्रदायिक दंगे, २१ दिन का उपवास, १९२४ बेलगाम (बिल्वग्राम) कांग्रेस के प्रधान पद पर प्रतिष्ठित, स्वराज्य दल की स्थापना । गांधी जी का राजनैतिक जीवन से अलग हो कर दलितोंद्वारा

के काम में लगना, दलित जनों के लिये 'हरिजन' शब्द का प्रयोग। स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान, १९२७—साइमन कमीशन का आगमन और कांग्रेस द्वारा बहिष्कार, ला० लाजपतराय की मृत्यु, नेहरू-रिपोर्ट। १९२९—में लाहौर—कांग्रेस में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास, पं० जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के प्रधान।

षष्ठ सोपान—स्वाधीनता-समर।

१००—१२७

भारत में महाभारतकालीन अधःपतन से ले कर सन् १९३० तक स्वतन्त्रता के संग्राम का वर्णन, २६ जनवरी १९३० को पूर्ण स्वाधीनता की प्रतिज्ञा। १२ मार्च को नमक कानून तोड़ने के लिये महात्मा जी की डांडी-यात्रा, गिरफ्तारी व कैद, पेशावर में लालकुर्ती-सेवक दल पर गोली चली, बारदौली में कर-निषेध सत्याग्रह, बम्बई में 'वांग्मे-राज्य' के दृश्य—विदेशी वस्त्रों तथा मदिरा का सफल बहिष्कार, २५ जनवरी १९३१ को जेल से रिहाई, ६ फरवरी को पं० मोतीलाल नेहरू की मृत्यु, ५ मार्च को गांधी-अर्विन समझौता। दूसरी गोलमेज कान्फ्रेंस, महात्मा गांधी कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि, कान्फ्रेंस में उपस्थित भिन्न-भिन्न दलों के नेताओं तथा उनकी विचार धारा का वर्णन। आंग्लपति जार्ज पञ्चम द्वारा महात्मा जी का स्वागत। कान्फ्रेंस की समाप्ति पर भारत लौटना, लार्ड विलिंगडन द्वारा गांधी-अर्विन-समझौते का तोड़ा जाना तथा दमननीति का अपनाना, सत्याग्रह फिर से आरम्भ, ४ जनवरी १९३२ को महात्मा जी की गिरफ्तारी, २० सितम्बर को यरवडा जेल में ब्रिटिश प्रधान मन्त्री रैमजे मैकडानल की दलित जनों की सवर्ण हिन्दुओं से पृथक् करने की कूटनीति के विरुद्ध आमरण उपवास, २४ सितम्बर को

पूना-समझौता, २६ सितम्बर को उपवास समाप्त, मई १९३३ में रिहाई। सेवाग्राम आश्रम की स्थापना। १९३७ में कांग्रेस का पद-ग्रहण, प्रान्तों में कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों की स्थापना, महात्मागांधी का जिन्ना से मिल कर कांग्रेस के प्रति सद्भावना उत्पन्न करने का निष्फल प्रयत्न, कांग्रेस के सभापतिपद के निर्वाचन में बाबू सुभाषचन्द्र तथा पट्टाभि सीतारमैया में प्रतिद्वन्द्विता, सुभाष की प्रधानपद-प्राप्ति, फिर पद-त्याग तथा अग्र-गामी दल (Forward Bloc) की स्थापना, राजकोट में महात्मा जी का आमरण अनशन, वायसराय के हस्ताक्षेप से ४ दिन बाद समाप्त, ८ नवम्बर १९३६ को कांग्रेस मन्त्रिमण्डलों द्वारा पद-त्याग।

राष्ट्रम सोपान—स्वतन्त्रता-प्राप्ति तथा निर्वाण। १९८-१६३

३ सितम्बर १९३६ को द्वितीय महायुद्ध का आरम्भ, जर्मनी के तानाशाह हिटलर की विजय-परम्परा से अंग्रेजों की व्याकुलता, भारत-सरकार की युद्धसामग्री तथा सैन्य-संग्रह के लिए उद्विग्नता, कांग्रेस का जनमत के विरुद्ध युद्ध में भाग लेने से इनकार, महात्मा जी का जिन्ना से मिल कर कांग्रेस-लीग समझौते के लिए निष्फल प्रयत्न। १९४०—लाहौर में लीग-अधिवेशन-पाकिस्तान प्रस्ताव पास। १९४१—जर्मनी-इटली-जापान संघ की युद्ध में विलक्षण प्रगति। चर्चिल-रुजवेल्ट-संधि। १९४२ कांग्रेस का फिर से महात्मा जी द्वारा नेतृत्व क्रिप्स मिशन तथा उसकी असफलता, ८ अगस्त को 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास, कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी, आगाख़ाँ के महल में म० गांधी, कस्तूरा-बाई व महादेव देसाई को कारावास, देश भर में सरकार की प्रचण्ड दमन नीति के विरुद्ध आन्दोलन, समाजवादी नेता बाबू जयप्रकाश नारायण, अरुणा

आसफअली अच्युत पटवर्धन आदि का हिंसामय आन्दोलन । अग्रगामी दल के नेता सुभाष बाबू का वेष बदल कर अंग्रेजों की कैद से निकल कर जर्मनी पहुँचना और वहाँ आजाद हिन्द फौज तैयार करना, जापानियों का सिंगापुर पर अधिकार तथा वर्मा-विजय, सुभाष बाबू की उनसे सन्धि तथा भारत-विजय का प्रयत्न, आजाद हिन्द सेना का पुनः निर्माण वा संगठन, रूस तथा अफ्रीका में जर्मन सेनाओं के भाग्य का पासा पलटा, मित्र राष्ट्रों—अमरीका वा इंग्लैंड—के लिये निराशा में आशा का प्रादुर्भाव, आजाद हिन्द फौज की पराजय, नेता जी सुभाष की मृत्यु, आ० हि० फौ० के अफसरों को कारावास । १९४४—फरवरी २२ को माता कस्तूराबाई का देहान्त, बंगाल में भीषण अकाल, श्री राजगोपालाचार्य की जिन्ना से भेंट तथा समझौते का निष्फल प्रयत्न, ६ मई को म० गाँधी की कारागृह से मुक्ति, गाँधी-जिन्ना वार्तालाप । १९४५—लार्ड वेवेल की अभिभावकता में शिमला कान्फ्रेंस, साम्प्रदायिक दलों के नेताओं के मतभेद के कारण असफलता, पहले जर्मनी और फिर जापान का पराजय, इंग्लैंड में चर्चित मन्त्रिमंडल का पराजय तथा समाजवादी एटली के मन्त्रिमण्डल की स्थापना । १९४६—कैबिनेट (Cabinet) मिशन—सर स्ट्रैफर्ड क्रिप्स, मिस्टर एलैंगज़ैण्डर और पैथिक लारैन्स नामक ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल के तीन सदस्यों का भारत में आगमन, देहली कान्फ्रेंस—कैबिनेट मिशन की स्कीम—उसकी असफलता, पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अन्तरिम शसन की स्थापना—मुसलिम लीग द्वारा उसका बहिष्कार, १६ अगस्त को मुसलिम लीग द्वारा 'सीधी कार्यवाही' (Direct Action) दिन का मनाया जाना,

देशभर में साम्प्रदायिक दंगे, बंगाल में हिन्दुओं पर मुसलमानों के भीषण अत्याचार—म० गांधी का नवा-खाली (पूर्वी बंगाल का एक जनपद) का दौरा, भ्रातृ-भाव की शिक्षा ; अखिल-एशियाई-देशों की देहली में कांग्रेस, नेहरू-लियाकत मन्त्रिमण्डल का अन्तरिम शासन—१५ अगस्त, १९४७ को स्वतन्त्रता दिवस समारोह, लार्ड माऊंटबैटन की गर्वनर जनरल के रूप में नियुक्ति, बाबू राजेन्द्रप्रसाद का राष्ट्र-अधिप होना तथा पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में सर्वदल सम्मिलित मन्त्रिमण्डल की स्थापना, स्वतन्त्रता-समारोह के उल्लासजनक अवसर पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की नवाखाली में पैदल यात्रा तथा सत्य वा अहिंसा के पवित्र मंत्र का प्रचार, स्वतन्त्रता-उत्सव के रंग में भंग, पञ्जाब तथा बंगाल के विभाजन के भीषण परिणाम, बंगाल (विशेषतः कलकत्ता) में महात्माजी की विद्यमानता तथा उनके प्रेम-सन्देश का अलौकिक प्रभाव—हिन्दु-मुसलमानों ने मिल कर ईद का उत्सव मनाया, १३ जनवरी १९४८ को देहली में अनशन व्रत—शांति-समिति द्वारा आश्वासन दिये जाने पर ५ दिन के पश्चात् व्रत की समाप्ति, एक पञ्जाबी शरणार्थी युवक का बिरलाभवन में बम फेंकना, सरदार पटेल का महात्माजी से अंगरक्षक-नियुक्ति के लिये अनुरोध, महात्माजी की अस्वीकृति, ३० जनवरी को नाथूराम विनायकराव नामक हत्यारे के हाथों राष्ट्र-पिता गांधी की अमरत्व-प्राप्ति, अन्त्येष्टि संस्कार, कांग्रेस नेताओं की व्याकुलता, श्रीराजगोपालाचार्य का इनको आश्वासन देना ।

अष्टम सोपान—गांधीचरित-मानस-सुधासार । १६४—२०३
ईश-विनय, संतचरित माहात्म्य । गांधी-चरित-शिक्षा-

सार, देहली में प्रमुख कांग्रेस-नेताओं का समागम—गांधी-गुण-गौरव-गाथन, कलि-काल वर्णन—वर्णाश्रम धर्म का उल्लंघन; सामाजिक, धार्मिक व नैतिक मर्यादा की हानि; अधर्म, अनीति तथा पाप का प्रसार, महात्मा गांधी के द्वारा धर्म का पुनरुद्धार, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, अन्य नेताओं की प्रार्थना पर, महात्मा गांधी के धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शिक्षा सम्बन्धी तथा अन्य सार्वजनिक-हित-संबन्धी सिद्धान्तों की विशद व्याख्या करते हैं। गांधी-अनुमोदित वर्ण-व्यवस्था के सम्बन्ध में पण्डित नेहरू की शंका, राजन बाबू द्वारा उसका समाधान, श्रीमती अमृतकौर का महात्माजी की महिला-सुधार-मूलक कार्य शैली के सम्बन्ध में प्रश्न, राजन बाबू का उत्तर, महात्माजी के श्रमिक जन-उद्धार के कार्यक्रम के सम्बन्ध में जगजीवनरामजी का प्रश्न तथा उसका उत्तर, मौलाना अबुलकलाम का महात्माजी की शिक्षा-पद्धति के सम्बन्ध में प्रश्न और उसका उत्तर, सरदार वल्लभभाई पटेल का महात्माजी की धर्मनीति के सम्बन्ध में प्रश्न तथा राजन बाबू का उत्तर, महात्मा गांधी के रामराज्य-सम्बन्धी विचारों के सम्बन्ध में श्री राजगोपालाचार्य का प्रश्न तथा उसका उत्तर; सब नेता मिल कर राजेन्द्रप्रसादजी का धन्यवाद करते हैं और महात्मा गांधी के चरण-चिह्नों पर चलने का प्रण करते हैं।

उपसंहार

२०४-२१४

महात्मा गांधी के सिद्धान्तों तथा उनके पावन चरित से प्राप्त होने वाली शिक्षाओं का संक्षेप से संग्रह।



मंगलाचरणा ।

ईशवन्दना :—

व्यापक ब्रह्म एक अविनासी , विनु व्रन स्नायु अतनु सुखरासी ।
 पापरहित सुचि परम कवीसा , अज अविकार विभू जगदीसा ॥
 नियमवान सिरजै जग सारा , सकल पदारथ सुविधि सँवारा ।
 सत चित अरु आनन्द सुहावा , जा कर भेद काहु नहिं पावा ॥
 न्यायसील अरु परमदयाला , प्रनतपाल पातक जिन घाला ।
 दुखनासक सुखदायक स्वामी , पापतापहर अन्तरजामी ॥
 पुन्य - प्रभाउ ईस जगराया , सब जग मोह रही तुव माया ।
 विरचि जगत पालै अरु घालै , साजन-हित दानव-हिय सालै ॥
 तेजपुंज परमेस्वर , पूरन परमानन्द ।

तुव प्रसाद पावहुँ प्रभो , कविता सक्ति अमन्द ॥१॥
 तुव प्रसाद निरधन नृप होई , भूप अधन संपति सब खोई ।
 तुव प्रसाद मृग केहरि मारै , छुद्र मसक गजराज पछारै ॥
 तुव प्रसाद लोचन लहि अंधा , लखत समोद सकल जगधंधा ।
 तुव प्रसाद गिरि-सेखर पंगू , धावहि तुरत रहत जग दंगू ॥
 तुव प्रसाद पावत गिर मूका , पेखत भानु-प्रभा जड़ घूका ।
 'गांधि'-बिमलजसजलधि अपारा , हौं प्रभु लघु इक मीन बिचारा ॥
 चरित अथाह थाह किमि पावौं , मूढ़ जथामति गुनगन गावौं ।
 अस करि कृपा देहु वरदाना , कारज सफल होय भगवाना ॥
 'विद्याधर' मतिमंद हौं , 'गांधि'-चरन-रस-लीन ।
 तुव प्रसाद बल पाय कै , 'चरित'-रचन चित दीन ॥२॥

गुरु-स्तुति :—

बंदों गुरु-पद - पदम-परागा , जाके परस मोह-तम भागा ।
 ग्यान-प्रकास भयो मन माहीं , जा बल सकल बिकार नसाहीं ॥
 जिमि रवि-उदय तत्त्व प्रकटाहीं , सकल पदार्थ सहज लखाहीं ।
 ग्यान-विकास बिसद बुधि सोहै , राग-विराग-नास मन मोहै ॥
 ग्यान-प्रभाकर तेज पसारी , मोह-मेघ सब देत बिडारी ।
 आतम-बोध खडग कर लीने , अरि सटवरग मरदि तिन दीने ॥
 भवसागर अति अगम अगाधा , भय-संकुल पूरन बहु बाधा ।
 गुरुप्रसाद बोहित जिन कीना , सुख सन भवसागर तरि लीना ॥

स्त्री गुरु पारस रूप सुभ , मम मानस त्रपु तूल ।

कंचन सम निरमल करै , काटि सकल भ्रम-मूल ॥३॥

गुरुवर-तोस ग्यान-रवि जागे , मोहनिसाचर सत्वर भागे ।
 धरम-जलज कर होत बिकासा , सुजन-मधुप कर पूजत आसा ॥
 विमल विवेक सम्भु तनुधारी , मदन-सत्रु कहँ देत पजारी ।
 माधव-रूप सत्य पुनि धारै , मोह-रूप सिसुपाल पछारै ॥
 परसुराम - सम मन्यु उदारा , चाहत-कोप सहसभुज मारा ।
 बामन - रूप धारि संतोसा , छीनत सकल लोभ-बलि-कोसा ॥
 विनय धारि रघुनायक-रूपा , मदमय हनत लंकपुरि-भूपा ।
 पुनि विराग अरजुन-तनु धारै , अहमिति-रूप जयद्रथ मारै ॥

चित्तनगर महँ चलत नित , देव - दनुज संग्राम ।

दिवस-निसा अतिसै विसम , बिजय देहिं स्त्रीराम ॥४॥

ईशकृपामाहात्म्य :—

रामकृपा मुदमंगलमूला , द्विन महँ हरत सकल भवसूला ।
 रामकृपा पावक सुखमूला , जारत पाप अनल जिमि तूला ॥
 रामकृपा सूरज - उजियारा , संसय-तिमिर सकल कर द्वारा ।
 रामकृपा ममता-निसि बीते , दुखमय सुपन नसहिं नर ही ते ॥
 रामकृपा सुभ मन्तर फूँका , नासत निखिल दरिद-दंदसूका ।
 रामकृपामय विमल मयंका , हरत विसय-तस्कर-कृत संका ॥
 रामकृपा केहरि बलधारी , वृजिन-नाग कहँ देत पड्यारी ।
 रामकृपा - सुरसरि सुखदाई , नासत सकल पाप-समुदाई ॥
 जिमि पावक तृन जारई , भानु करत तम-नास ।
 सकल पाप-संताप तिमि , नासत रमा-बिलास ॥५॥

कवि कामना :—

माँगहुँ सुभ असीस जगराया , समरथ देहु मोहि करि दाया ।
 गांधि-चरित सुभ चहहुँ बखाना , जा कहँ सुनि मोदहिं मतिमाना ॥
 सन्तजनन कर गुनगन गाई , मानस मोर मोद अति पाई ।
 सन्तचरित सुभ-सुमन-समाना , निज सुवास बासत हिय नाना ॥
 सन्तचरित जनु पीयुसधारा , मानस-मृत नवजीवन डारा ।
 सन्तचरित सूरज - सम सोहा , नासत तिमिर लोभमदमोहा ॥
 सन्तचरित भेसज सुखकारी , खलजनउरग-जनित -बिसहारी ।
 सन्तचरित कलिकिलबिखहारी , दुरित बिनासि देय फल चारी ॥
 सन्तचरित जनु बज्र सम , अध-परबत कर नास ।
 सन्तचरित पुनि भानु-सम , साजन-नलिन-विकास ॥६॥

पूर्व कवि स्तुति :—

सतयुग ब्रह्म वेद उपजाया , ईस सुजस मन्त्रन महँ गाया ।
 त्रेता बालमीक मुनिराया , रामचरित रामायन गाया ॥
 द्वापर व्यास आय मुनिनाथा , रुचिर रची भारत कर गाथा ।
 कृस्नचरित - महिमा परकासी , सुरगनिसैनि पापतम - नासी ॥
 कलिजुग कालिदास मतिमाना , रामसुजस रघुवंस बखाना ।
 तुलसिदास उत्तम कविराया , रामचरित 'मानस' महँ गाया ॥
 'सागरसूर' सूर कवि कीना , केसवचरित सुधारस - भीना ।
 अवर अनेक सुकविजन आई , रामसुजस-महिमा सुभ गाई ॥
 तिन सों लहि सुभ प्रेरना , राम - चरन - रस-लीन ।
 रामभगत - गांधी - कथा , कहों कुकवि मतिहीन ॥७॥
 प्रभुवरपुन्य - प्रसाद सों , सफल होय मम काम ।
 गांधी-जस-गाथा विमल , लहै सुजन-उर धाम ॥८॥

— — —

प्रथम सोपान

भारत देस निखिल-महि-मंडन , निज सुखमा नंदन-मद-खंडन ।
प्राकृत दृश्य इहाँ रमनीका , करहिं देस अरुनी कर टीका ॥
सुन्दर सरि-सर-सैल सुहाये , रूप अनूप रसिक-मन भाये ।
वन उपवन मृदु साद्वल सोहैं , नयन-रुचिर दरसक मन मोहैं ॥
सुन्दर स्यामल रुचिर किदारा , करहिं कृसकमन हरख अपारा ।
पावस-सरद-सिसिर-हिम -अन्ता , देयँ प्रमोद निदाघ - बसन्ता ॥
औसध-अन्न-फूल - फल - भारा , अस विधि प्रचुर न जाय सँभारा ।
कृत्रिम दृश्यहु परम सुहाये , रुचिर कला-चरमावधि पाये ॥
नभतलचुंबी सौध तहँ , देवालय अभिराम ।

राजपन्थ सुन्दर बिसद , उपवन ललित ललाम ॥१॥
कनक कलस सुर-मन्दिर सोहैं , धवल धाम दरसक मन मोहैं ।
अतिसै चहल पहल चहुँ ओरा , गाहक बनिक करहिं बहु सोरा ॥
सुन्दरबसन - अभूसन - धारी , फिरहिं बजार अभय पुरनारी ।
पुरजन सकल धरमव्रतधारी , चोर चकार न एक जुआरी ॥
तियसमाज पति-प्रेम-पुनीता , बिमलचरित जस गिरिजासीता ।
धरमनिरत भूसुर तहँ सोहैं , नरपति न्यायसील मन मोहैं ॥
बैस्य धरमजुत करहिं बिहारा , सेवाकरम खूद कहँ प्यारा ।
अस विधि बसहिं सुखी पुरलोका , निजनिज गेह त्यागि भय सोका ॥
सुरग-रूप तहँ प्रात इक , गुर्जर नाम अनूप ।
सुखसंपति धनधान्य सों , देस - सिरोमनि - रूप ॥२॥

पुरबन्दर तहँ नगर सुहावा , सिन्धु समोद अंक तिहि लावा ।
 देस - बिदेस पोत बहु आये , भरि भरि बिबिध पदारथ लाये ॥
 हाटबाट बीथी पथ सारे , तोरन - केतु - बितान सँवारे ।
 परम प्रसन्न तहाँ नरनारी , पाय पदारथ मन-अनुसारी ॥
 'करमचन्द' तहँ सचिव सुहावा , 'गांधि'प्रमुख अतिरुचिर सुभावा ।
 नगर प्रबंध सुबिधि तिन कीना , रिपुजनसीस चरन निज दीना ॥
 ब्रनिक - बंस - अबतंससरूपा , परम उदार दानिकुलभूपा ।
 धरम - धुरन्धर परउपकारी , भूसुर-सुरभि-सन्त-हितकारी ॥

सील - दया - संतोस - जुत , धरमसील गुनवन्त ।

करमचन्द तियजुत लसै , सुखमा-सहित बसन्त ॥३॥

रमनीरतन सकल गुनखानी , प्रेमप्रभाव कन्तहियरानी ।
 रतिसम रूप उमासम सीला , सुभग सची सम तेज रसीला ॥
 सारद सम प्रतिभा सुखदाई , ईस-प्रसाद अमित तिन पाई ।
 कमलासम सुभलच्छन्नवारी , ललनाप्रमुख भई बरनारी ॥
 निजगुनबस परिजन बस कीने , सेवा-बस बृद्धन मन छीने ।
 सखी जनन चित मोद बढ़ायो , तिन कहँ मुदित पेखि सुख पायो ॥
 मृदुल विनीत उदार सुभाऊ , बसीकरन-मनि-तुल्य प्रभाऊ ।
 'पुतरिबाई' संग्या सुभ पाई , बिमल-प्रेम-प्रतिमा जग आई ॥

करमचन्द कुल लच्छमी , सुन्दर तिय तनु धारि ।

गुनपुतरि आई मनौ , तनमन सकल सँवारि ॥४॥

करमचन्द निज भाग सराहै , हरख-पयोधि सतत अवगाहै ।
 समय पाय गृहतरु-फलफूला , संतति-रूप भये अनुकूला ॥
 करमचन्द-दम्पति दिन रूरे , बीतहिं सुख-वैभव सन पूरे ।
 निरखि तासु संपति दिनराती , मुदित मीत धरकत रिपुछाती ॥

भोगहिं लौकिक भोग अनेका , पै नहिं तजहिं सुखद प्रभु टेका ।
मानुस जे मतिमान सयाने , इन्द्रियदास न होयँ अयाने ॥
नाविक जिमि ध्रुव पै टक बाँधे , थिर मन चलत चप्पु धरि काँधे ।
तिमि साजन हरिचरनन माहीं , निसदिन निज अनुराज दृढ़ाहीं ॥

प्रनतपाल जगदीसहू , तिन पै होय दयाल ।

कायिक, बाचिक, मानसिक , सुख सों करै निहाल ॥५॥

प्राकृतजन भौतिक सुख पाई , मानत मोद - प्रमोद अघाई ।
लौकिक - सुखसम्पतिमदमाता , बिसरत सपदि ईस सुखदाता ॥
पै हरि - भगत धरमरुचिवारे , रहत बिसय-करदम सों न्यारे ।
हंम समान गहत गुन नीके , गनहिं जगत सुख संतत फीके ॥
जिमि ध्रुव अटल गगनतल ठाढ़ा , तिन कर नेह ईस सन गाढ़ा ।
निसठा अचल पेखि प्रभु वा की , राखत सीम न कछु ममता की ॥
भगति-परायन तिन कहँ जानी , सुखसम्पति देवत मनमानी ।
ता हित चित धरि दीनदयाला , नरतनु धरत प्रनत-प्रतिपाला ॥

करमचन्द-पतनी परम धरमसील सतवन्त ।

बिसय-बासना त्यागि कै , भजै भाव भगवन्त ॥६॥

एक दिवस सुख - निद्रालीना , पुतरिवाई पतिप्रेमप्रवीना ।
लखि इक मधुर नयनसुख सपना , अनुभव कीन मुदित मन अषना ॥
हियमंडल महँ अमल प्रकासा , सरद - निसीथ - चन्द्रकर-हासा ।
ता मधि नीलनलिनबपुधारी , सायुध सोहत प्रकट मुरारी ॥
सस्मित कहत मृदुल अस बानी , भगतबल्ल कुरुनारसखानी ।
लखि तुव संजमसील सुभाऊ , धरम-रुनेह-भगतिजुत भाऊ ॥
सीता-सम सुभ पति-पद-प्रेमा , बिसय-विराग सुकृत-रतिनेमा ।
अहहुँ मुदित बर-देवन कामा , मांगहु मनबांछित बर बामा ॥

प्रभुपद-पंकज-जुगल महँ , नयन नलिन निज मेलि ।

भावलीन रहि मौन तब , लाज न सकत सकेलि ॥७॥

करुनाकर बोले भगवाना , अभिमत तोर बच्छ मैं जाना ।

लखि तुव भगति प्रीति मन मोरे , पूजहुँ सकल मनोरथ तोरे ॥

इक तुव तनय होय मम रूपा , सुन्दर स्यामल मृदुल सरूपा ।

सो मम भगत होय अति भारी , धरमनिरत संतत अधहारी ॥

सत्य - अहिंसा - अटल - पुजारी , संजमसील धरमधुरधारी ।

विश्व-प्रेम कर परम उपासक , निगमतत्त्व कर विसद प्रकासक ॥

देस - समाज - धरमहितकारी , कुलदीपक होवहि असुरारी ।

सत्यसंध मरजादापालक , पापअनीतिअनृतकुल - घालक ॥

वचन अमोघ सदैव मम , भगत-जनन-हितकारि ।

सपदि होय तुव तनय सुभ , गो-द्विज-सुर-सुखकारि ॥८॥

अस कहि बचन मधुर रस साना , अंतरधान भये भगवाना ।

पुतरिबाई निद्रा सों जागी , गनत आपु कहँ अति बड़भागी ॥

मुदित चित्त भरता पहुँ जाई , सुपन-कथा तिन सकल सुनाई ।

करमचन्द सुनि तिय कर बानी , ईस - प्रसाद - मधुर - रस - सानी ॥

मुदित भयो मानस महँ ऐसे , मुदित मयूर पयद लखि जैसे ।

आपुन भाग सराहन लागा , तृसित पाय जस अमिय-तड़ागा ॥

समय पाय सुभ अन्तरवतनी , रमनीरतन करमचँद-पतनी ।

गूढ़ तेज सन सोहत कैसे , सीप लसत मुकतामय जैसे ॥

छीनवदन सोहत परम , बनिता दोहद काल ।

छीन छपाकर कर कला , जिमि सोहत सिव-भाल ॥९॥

लहि प्रसन्न वीरुध जस सोहै , निज सुखमा मानव-मन मोहै ।

पुतरिबाई गोद लहि खनू , सोभाधन पायो दिनदूनू ॥

संवत्* ऋतु कर निधि ओंकारा , सत्रह आश्विन सुभ सनि वारा ।
 करमचंद-पतनी सुत जायो , मानहु धरम देह धरि आयो ॥
 सुनि सुतजनम परम मनभावन , बाजे बिबिध बजाय बधावन ।
 मंगलगान करै ललनागन , हरख प्रकास करै बहु रागन ॥
 इस्टमित्र - परिजन - परिवारा , देयँ बधाई मुदित हिय द्वारा ।
 जाचक करमचंद गृह आये , सफल मनोरथ मुदित सिधाये ॥

करमचंद निज सुकृत-फल , तनय-रूप सुभ पाय ।

धन्यवाद दै ईस कहँ , दीनो दान अघाय ॥१०॥

कुलगुरु कहँ संदेस पठावा , आगत निरखि चरन सिर नावा ।
 पाय निदेस जनम-संस्कारा , कीने सकल बेद अनुसारा ॥
 जनमकाल ग्रहधिति निरधारी , जनमपत्र सिसु कर सुविचारी ।
 कुलगुरु कहत सुनहु जजमाना , सिसु तव गुननिधि देव-समाना ॥
 सुचि संतोस-त्याग-तप-सीला , जानहि परम विराग रसीला ।
 हिंसा - स्तेय - अनृत - परिहारी , अमित प्रभाउ सत्यव्रतधारी ॥
 निज गुन करम मनुज मन मोहै , जिमि मयंक राका-निसि सोहै ।
 मोहन नाम धरहु सिसु केरा , नाम जथागुन प्रभुवर प्रेरा ॥

गुरुवर आयसु पाय कै , नामकरन सुभ कीन ।

जगमोहन निज तनय कहँ , नाम सारथक दीन ॥११॥

मृदुलमंच सोवत सिसु सोहै , आनन ललित मातु मन मोहै ।
 लखि लखि सुनुबदनजलजाता , अम्बहिये नहिं मोद समाता ॥

* विक्रमी संवत् १९२६, महात्मा गांधी की जन्मतिथि (१७ आश्विन, १९२६) तदनुसार २ अक्तूबर १८६९ ई० । इस पुस्तक में महात्मा जी के जीवन काल की प्रसिद्ध घटनाओं के सम्बन्ध में अन्य सभी स्थलों में ईस्वी सन् का प्रयोग किया गया है ।

जब सिसु नयन खोलि अबलोका , भयो मातु हिय निपट बिसोका ।
 अंक उठाय चूमि मुख माता , मधुर गिरा कह जीवहु ताता ॥
 बाढ़हिं बिधु लेखा इव अंगा , जननी हिय तिमि प्रेम-तरंगा ।
 पुटुरन चलत किलकि जब मोहन , तोतरि बात करत सुखदोहन ॥
 बाल-इन्दु-सम बदन निहारी , रूप अनूप मदन-मद-हारी ।
 इस्ट - जनन - मानस - मुदकारी , जननी-जनक जायँ बलिहारी ॥

सिसु लीला करि मधुरतम , हरत बन्धु-जन-चित्त ।

मुदित करत जननी हृदै , जिमि निरधन कहँ बित्त ॥१२॥
 यस पाय सहचर लै साथा , मोहन करत केलि अरु गाथा ।
 पितु सन सुनि इतिहास-पुराना , आरज-धरम-मरम कछु जाना ॥
 मातपिता भूसुर करि जानौ , निज गुरुदेव देव-सम मानौ ।
 भाखहु साँच करहु सुभ-करमा , सार रूप अस मानव-धरमा ॥
 जनमभूमि भाखा अरु भेखा , इन सन प्रीति करहु सुबिसेखा ।
 तन-मन-धन-धरनी परिवारा , देस-धरम-हित चहियत वारा ॥
 राम प्रताप सिवा दसमेसा , सहे धरम हित कोटि कलेसा ।
 मातृभूमि जननी-सम जानी , ता हित प्रान देन कर ठानी ॥

सप्त बरस बय पाय कै , 'गांधि' गयो चटसार ।

निज गुन-गरिमा सों लसै , बिमल-चन्द्र-अनुहार ॥१३॥
 सात बरस साला महँ बीते , पाठन-पठन करत अति जी ते ।
 विद्या विविध पढ़हि मतिमाना , वस्तु अनेक तच्च तिन जाना ॥
 बरस चतुरदस बय जब पावा , मोहन-मातु-हृदै अस चावा ।
 व्याहन जोग भयो मम मोहन , रूप अनूप सकल जगमोहन ॥
 पति सन आय कही मृदु बानी , पुत्रबधू इक सगुन सयानी ।
 रमनीरतन अमित गुनवारी , स्त्री-सम-रूप-बिलच्छन-धारी ॥

आनहु गृहलच्छमि सम सोऊ , नारिप्रमुख गुनगन सन जोऊ ।
ता छिन द्विजवर आय सुनावा , करन-सुधासम बचन सुहावा ॥

कसतूरी इक कन्यका , रूप-सील-गुन-वन्त ।

जासु सुजस कसतूरि-सम , व्यापै सकल दिगन्त ॥१४॥

सुभलच्छन-जुत सरल सुभावा , नाम जथारथ जस जग छावा ।
आनन निरखि अमल अकलंकू , होय सलज्ज ससंक मयंकू ॥
रूपविलास रुचिर तन छावा , रति-हिय डाह अमित उपजावा ।
मोहन जोग सोऊ सुकुमारी , जोरि जुरै मनिकांचनवारी ॥
करमचन्द जोरे जुग पानी , बिनय समेत कही मृदु बानी ।
द्विजवर मान्य परम मत तोरा , मम हिय होत अनन्द-बिभोरा ॥
सपदि जाय जजमानहि प्रेरौ , कहहु दया करि मम प्रति हेरौ ।
निज तनया-कर-दान-दया सों , करहु कृपा पावहुँ सुख जासौं ॥

भूसुर-सम्मति पाय कै , कसतूरी के तात ।

मोहन-हित मानी तुरत , सुतादान की बात ॥१५॥

करमचन्द तब गनक बुलाये , पत्रा लखि तिन लगन सधाये
सुभ दिन सुभ घरि साजि बराता , समधी-सदन गयो मुदमाता ॥
नृत गीत बाजे बिधि नाना , जनहिं प्रमोद न जात बखाना ।
मंगलगीत - धुनी चहुँ ओरा , 'जयकुमार' 'जयदुलहिन' सोरा ॥
देव असीस गगन सों करहीं , सुमन रूप 'मोहन' सिर परहीं ।
इक तहँ मंडप परम सुहाना , अम्ब कदलिजुत रुचिर बिताना ॥
ता मधि आसन सुबिधि सँवारे , बर-कन्या-हित सुन्दर डारे ।
वंसपुरोहित सम्मुख बैठे , कन्याजनक बेदि महँ पैठे ॥

अनलसाखि सु ति-मंत्रजुत , परिनय-रीति असेस ।

उभयपच्छ पून करी , पायो मोद बिसेस ॥१६॥

गावहिं मधुर गीत कुलनारी , बर पै जाय सासु बलिहारी ।
 जननी धन्य तनय अस जाया , जिन निज बंस नाम उजराया ॥
 पुनि बरात कहँ भोज जिमाई , दुलहिन भूसन-बसन-सजाई ।
 बिभव-पदारथ बहु करि दाना , कन्या-मातु कहै मतिमाना ॥
 कसतुरि नाम परम सुकुमारी , दुहिता अहहि नाथ मम बारी ।
 मृदुल सुमनसम बिधुसम गोरी , परम सुसील बिसय-रस-भोरी ॥
 अब लगि नयनपुतरिसम राखी , साँच कहौ बिधि-हर-हरि साखी ।
 सो अब नाथ भई तुव थाती , रखहु सँभारि जथा नृप-पाती ॥

समधि-जुगल अति प्रेम सों , मिलन परस्पर कीन ।

धन्यवाद करि ईस को , सफल मनोरथ कीन ॥१७॥

पुरवन्दर मुरि आई बराता , धाई तब पुलकित बर-माता ।
 सखिन-संग सुभ स्वागत कीना , बरबधु कहँ सुभ आसिस दीना ॥
 प्रेम-समेत गही बधु-पानी , बोली मधुर गिरा तियरानी ।
 धन्य धरी घर मोहन आयो , निरखि बधू लोचन-फल पायो ॥
 आउ सुता निज सदन सँभारौ , होय मनोरथ सफल हमारो ।
 जनि कछु मानहु चित्त गलानी , निज पितुमातुसदनसम जानी ॥
 नरमनि ससुर जनक-सम तोरा , जननि-समान गनहु पद मोरा ।
 गुनसागर नागर मनमोहन , पूजा जोग देवसम मोहन ॥

अचल होय अहिवात तब , कृपा करैं भगवान ।

निजगुनगरिमा सों लसौ , रमनी-रतन-समान ॥१८॥

समय पाय कसतुरि सुत जाया , जिमि रतनाकर ससि उपजाया ।
 रूप मनोहर पितुसमतूला , अंगबिलास मदनमन भूला ॥
 भाल विसाल धवल मन-मोहा , बिमल मयंक गगन जिमि सोहा ।
 लोचन लोल लसहिं रसपूरे , जल महँ सरहिं मीन बिय रूरे ॥

बक्रनास सुक - तुंड सुहावा , करनलास कुण्डल मन-भावा ।
आनन ललित जलज जिमि फूला , माता-मन-मधुकर लखि भूला ॥
ललित ललाम सुतनु अति प्यारा , लखत बाल सुखमाकरसारा ।
जननी जनक जायँ बलिहारी , सिसु चिरजीवि करै त्रिपुरारी ॥

पुरजन आय बधाय तब , करमचंद कहँ दीन ।

मोदकमय निज कामना , हरखि हस्तगत कीन ॥१९॥
संजमसील प्रेम - गुन - खानो , कसतुरि नारिरतन मृदु बानी ।
सासु ससुर परिजन बस कीने , जननी जनक बन्धु सम चीने ॥
प्रेम-प्रभाउ कन्त बस कीना , तासों अछल प्रेम बर लीना ।
अस बिधि कतिपै बरस बिहाने , भोगत भोग सुखद मनमाने ॥
काल कराल दीठि तब कीनी , करमचंद-आयुस हरि लीनी ।
उठ्यो जठर इक सूल कराला , भभक उठी जिमि पावक ज्वाला ॥
करहि उपाय अनेक न लाहू , समन न होय बढ़त उर दाहू ।
जा छिन मानुस आयुस छीजै , तहँ उपचार कवन विधि कीजै ॥

ब्याधि-ताप तब पाय कै , करमचंद-तन छीन ।

जग प्रपञ्च सों छूटि कै , भयो पंच तत लीन ॥२०॥
हाहाकार मच्यो तहँ घोरा , निपट कठोर मीचु अस सोरा ।
क्रन्दन करुन करहि नरनारी , सोक प्रवाह न सकत सँभारी ॥
आरजसुत भरता जियनाथा , अस कहि पतनि धुनत निजमाथा ।
पीटत उर खँचत निज केसा , सोक-मलिन मन दूसित बेसा ॥
खाय पछार परी ब्रिति कैसे , बिटपपात मृदु बीरुध जैसे ।
मोहन नयन बहत जलधारा , लोचनपन्थ द्रवत हियसारा ॥
दारुन सोक-अनल हिय बाढ़ा , उस्न उसास धूम सम काढ़ा ।
सोक-पयोधि तरंग बिसाला , चाहत धीरज-बोहित घाला ॥

कुलगुरु अनुसासन कियो , ग्यान - बिराग - समेत ।

सुखप्रद भेसज सम भयो , बिकल हृद के हेत ॥२१॥

निगमागम इतिहास पुराना , हितकर रुचिर विविध उपखाना ।

गीता जोग-बसिष्ठ सुनावा , धरम मरम बहु भाँति सुभावा ॥

अमर जीव छिनभंगुर काया , बिस्व-प्रपंच प्रकट प्रभु-माया ।

जिमि सैलूस रचत निज माया , खेल अलौकिक जनमनभाया ॥

छिन दीखै छिन माँझ बिलाई , प्रभु लीला तिमि जानहु भाई ।

जनम जीव जेते जग पावैं , समय पाय मीचू मुख जावैं ॥

फल पाको जिमि भूतल आवै , तिमि तनु त्यागि मरन नर पावैं ।

बसन पुरातन तजि नव धारै , तिमि तजि प्रथम देह नव धारै* ॥

जनम - मरन - बंधनबिथा , लोभ - मोह - भय - ताप ।

देह धरम सब जानि कै , नहिं बुझ करहिं बिलाप ॥२२॥

करमचन्द-सुत प्रथम बुलाई , कुलगुरु बात कही समुभाई ।

सुरपुर-गमन जनक तुव कीना , तो कहँ गृहपति-पद सुभ दीना ।

सेवा करहु मातु कर ताता , सुत सम गनहु अनुज निज भ्राता ।

निज कुलधरम करहु चित लाई , होय जथा परिवार भलाई ॥

गुरु सन बचन कह्यो सुविनीता , रुचिकर हित तुव सीख पुनीता ।

सादर सीस सदा निज धरिहौं , बचन प्रमान मातु कर करिहौं ॥

सुत सम गनहुँ अनुज निज भ्राता , होवहुँ ताहि सदा सुखदाता ।

गुरुवर सोउ मनुज बड़भागी , निज कुलधरमकरम-अनुरागी ॥

इस्ट-बंधु-परिवार कहँ , जो देवत सुख-चैन ।

सेवा महँ मानत सदा , हरख अमित दिन रैन ॥२३॥

* वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ (गीता)

मोहन मोहि प्रानसम प्यारा , साँच कहूँ मम लोचनतारा ।
जा सन तासु परम हित होई , निसचै करम करौं द्रुत सोई ॥
मातु हिये जस होय हुलास , बचन प्रमान करौं तस तास ॥
मात - पिता - परिजन - परिवार , जासों लहहिं जगत सुख-सार ॥
जीवन सफल होय तिस केरा , अस विधि धरम साख-सुति प्रेरा ।
मम मन इक अभिलास उदारा , मोहन प्रेसिय सागर-पारा ॥
जिमि लहि उच्च न्याय कर ग्याना , पूरन करहि सुजनमनभाना ।
लहहि बिभव उन्नत पद पाई , बरधहि निज कुल मान बढ़ाई ॥

गुरु सों अनुमति पाय कै , कही अम्ब सों बात ।

सिंधुपार मोहन - गमन , मो कहँ उचित लग्नात ॥२४॥
तनयबियोग अकनि अकुलानी , जनु हिमपात नलिनि कुमलानी ।
कहत सनु सन आरत बानी , मृदुल प्रेमपूरन मधु-सानी ॥
मो कहँ मोहन जीवनमूरी , मोहन बिनु जिमि सब जग धूरी ।
बच्छबिहीन सुरभि जिमि दीना , नीर-बिहीन बिकल जिमि मीना ॥
दिनकर बिनु नलिनी कुमलाई , बनिक बिकल जिमि बिभवगँवाई ।
मोहनगमन बात सुनि काना , मानस मम सुत तिमि अकुलाना ॥
मोहन मम सुकुमार सुभाऊ , कुटिल जगतगति जान न काऊ ।
रहि बिदेस किमि करहि निबाहू , किमि प्रवास कर पावहि लाहू ।

नंदन नगर समृद्ध अति , प्रचुर प्रलोभन पूर्न ।

तहँ नरनारि बिलासरत , परहिं पाप-पथ तूर्न ॥२५॥

नंदन नगर बिलास-प्रधाना , मिलहिं प्रलोभन पग पग नाना ।
तहँ नरनारि बिसय-रसभोगी , पापनिरत अरु धरमबियोगी ॥
मम सुत तात बिसय-सुख-भोरा , बचिहै किमि बिसयानल घोरा ।
तब तिन बचन कहे कर जोरी , जननी बिनय सुनहु इक मोरी ।

पापबिरोधि धरमरत मोहन , प्रतिभासील निगममतदोहन ।
 सो जनि संक करहु मन माहीं , तासु पतन इमि संभव नाहीं ॥
 जा कर ईस होय रखवारा , को नर ताहि मिटावनहारा* ।
 आसिस देहु बिदेस सिधार्ई , आवहि सीघ्र मनोरथ पाई ॥

जननी कहँ समुझाय अस , मोहन - अग्रज धीर ।

माता मन धरि तनय हित , सहहु बिरह की पीर ॥२६॥
 तब बुलाय मोहन महतारी , सूँधि सीस मृदु गिरा उचारी ।
 मोहन मम जीवनधन ताता , जाहु बिदेस चहत अस धाता ॥
 बाल बयस तनु अति सुकुमारा , गमन बिदेस कस्ट अति भारा ।
 नयन ओट कबहुँ नहिं कीना , गृह बाहिर कहँ जान न दीना ॥
 अब किमि कहउँ जाव तुम ताता , मो कहँ सब बिधि वाम बिधाता ।
 पै हिय धारि तात हित तोरा , पठिहौं उर धरि उपल कठोरा ॥
 आसिस मोर पाय सुत जाहू , तुव प्रतिपाल करैं जगनाहू ।
 जाय बिदेस करहु निज काजा , आवहु लौटि कुसल मम राजा ॥

कियो मात उपदेस तब , मोहन कहँ सुनु तात ।

सदा चित्त महँ राखियो , तीन हमारी बात ॥२७॥
 छाँड़हु तात प्रथम मदपाना , मद्य पिये खर होत सयाना ।
 दूजे तजहु पिसित कर भोजन , मांस-अहार नरक-आयोजन ॥
 मातुसमान गनहु परनारी , तीजी सीख हदै मम धारी ।
 तब तिन चरन गहे जननी के , बोल्यो मातु बचन तुव नीके ॥
 निज हियपटल रैनदिन धारौं , चलि तुव सासन चरित सुधारौं ।
 आयसु देहु मोहि अब माता , आसिस तुव मुदमंगल-दाता ॥

* जा को राखै साइयाँ मारि सकै नहिं कोय ।

बार न बाँको करि सकै जो जग बैरी होय ॥ कबीर ।

जाय विदेस विद्या गहि रूरी , रखिहौं सीस चरन जुग धूरी ।
बचन बिनीत अकनि मृदु नीके , धीरज हृदय भयो जननी के ॥

मोहन अस विधि पाय कै , निज जननी-निरदेस ।

सुभ बासर अरु सुभ घरी , गह्यो पन्थ परदेस ॥२८॥

मोहन चलत बिकल अति जाया , उर उदबेग न जात छुपाया ।
हृदय हूक मन व्याकुल भारी , सोक सरित नहिं जाय सँभारी ॥
गदगद कएठ, बचन नहिं आवा , धधकत उर-अन्तर दुख-दावा ।
पीतम अंग धाय लपटानी , जिमि रसाल तरु बीरुध रानी ॥
प्राननाथ तुम चलहु विदेसा , मम हिय होवत अमित अँदेसा ।
तुम सन बिलुरि रहौं पिय कैसे , नीर-बिहीन मीन मृत जैसे ॥
पुनि तुव हित चित धरि जियनाथा , ईस-निदेस जानि नत-माथा ।
पीतम तोर प्रेमरसराती , करिहौं ईस-बिनय दिनराती ॥

विस्वनाथ जगदीस्वर , दीनबन्धु भगवान ।

करुना करि निस दिन करौ , प्रभु प्रीतम कल्याण ॥२९॥

तब मोहन सुभ धरि अनुसारा , सागर तरि नंदन पगु धारा ।
नंदन नगर* सुरग सम सोहा , निजबैभव सुर-नर-मन मोहा ॥
नंदन नगर लसत जनु लङ्का , सुवरन-सदन धरत निज अङ्का ।
नंदन नगर मांसमदभोजन , परतियगमन सतत आयोजन ॥
नंदन नगर बंक नर-नारी , फिरहिं सुखन्द लाज तजि सारी ।
नंदन नगर अनंग-अहेरी , संजम-हरिन हनत बिनु देरी ॥
नंदन नगर लोभ कर पासा , रंककपोत फँसहि धरि आसा ।
नंदन नगर मोह-मद-माया , चहुँदिसि कोप कपट छल छाया ॥

नगर सुधर नंदन लसै , धन-बैभव-सुख -धाम ।

धरमसील मोहन सिख , पत राखै स्त्रीराम ॥३०॥

बरस तीन नंदन करि बासा , प्रतिभा-तेज विमल परकासा ।

चारु-चरित गुरुवर तिन मोहे , छात्रन माहिं सिरोमनि सोहे ॥

अमित प्रलोभन पथ महँ आये , सत्यसंध नहिं जायँ डिगाये ।

*लघुद्रुमपाटनकुसल प्रभञ्जन , किमि करि सकत हिमाचलभञ्जन॥

जब जब परख काल तहँ आवा , गांधिविमलजस उन्नति पावा ।

हेम-सकल जिमि पावक डारा , कुन्दन होय बाँडि मल सारा ॥

निज सुवास मानव-मन-नन्दन , घसि घसि महक लहै अति चंदन ।

मातु असीस रखक तिस केरी , आपतकाल कवच सम हेरी ॥

गुरुजन अभिवादन सदा , सुख-संपति-जस -देन ।

गुरु असीस जानहु सदा , पारससम सुख-ऐन ॥३१॥

बहुरि 'बाट' डिगरी तिन पाई , सफल प्रयास भयो सुखदाई ।

ईस-प्रसाद पाय फल धीरा , बिसरत तुरत सकल स्रम-पीरा ॥

जिमि बहु काल कृसक स्रम करई , लहि कै सस्य मोद मन भरई ।

गुरुजन कर पुनि आयसु पाई , चल्यो सुदेस हिये हुलसाई ॥

सागर-उर जावत जलजाना , भाव उठत मोहन मन नाना ।

आवन गृह प्रति सुनि मम माता , मानस मुदित पुलकजुत गाता ॥

धावहि मोहि मिलन हित कैसे , सुरभि सप्रेम बच्छ प्रति जैसे ।

अग्रज मम हितकर जस ताता , होवहि मुदित अछत लखि गाता ॥

पुरबन्दर सुभ जलधि तट , पहुँच्यो जब जलजान ।

मोहनहिय जननीमिलन ललक उठी सुमहान ॥३२॥

इस्ट - मित्र - परिजन-परिवारा , पुर-नर-नारि-समाज उदारा ।
 स्वागत हित तहँ सकल पधारे , प्रेम-सुमन मोहन गर डारे ॥
 देय बधाय कहत मृदु बानी , बात रुचिर अबितथ हम जानी ।
 धन्य जनक जननी सुत जासू , हरत सोक हिय करत हुलासू ॥
 धन्य बंस नरमनि जहँ जाया , बिमल कीन कुलकीरतिकाया ।
 धन्य पुनीत धरा जहँ आई , आरजधरमरीत दरसाई ॥
 मोहन प्रेमसहित मृदु बानी , उचरी भावभरित रससानी ।
 इस्ट - मित्र - परिजन - परिवारा , धन्यवाद सब गहहु हमारा ॥

लहि तुमरी सुभ कामना , जगपति आसिस पाय ।

पुर-परिजन-परिवार कर , सेवा करहुँ अघाय ॥३३॥
 तब निज सदन जाय पगु धारा , मातु मिलन हित चाव अपारा ।
 अग्रज-पूत-चरन तट जाई , प्रेम सहित निज मस्तक नाई ॥
 करि अभिवादन आसिस पाई , सुरपतिवरसम अति सुखदाई ।
 मोहन कहत पूज्य मम आता , भटिति बतावहु कित मम माता ॥
 नेह-सलिल-रतनाकर भारी , ममता - रूप - सुधारस - धारी ।
 सो मम अम्ब कहहु कित नाथा , बिनु दरसन ठनकत मम माथा ॥
 लोचननलिन बारि भरि आवा , गदगद कण्ठ उतरु नहिं पावा ।
 मोहन बुद्धिमान गहि भावा , अनुभव कीन कठिन दुखदावा ॥
 हे जननी हे अम्ब इति , प्रेम-स्रोत हे मात ।

अवरु बचन नहिं कहि सकै , सोकसिथिल हियगात ॥३४॥

सूखत कण्ठ जलन हिय बाढ़ी , बिकल मीन जिमि जलसन काढ़ी ।
 मातुवियोग दुखित अति गांधी , हिय महँ उठत प्रबल दुखआंधी ॥
 सोक-प्रवाह उमड़ि अस आवा , पावस गिरिसरिजल जिमि धावा ।
 होय अचेत परयो छिति कैसे , असनिपात पादपवर जैसे ॥

होय सचेत बहुरि कहि बाता , मो कहँ छाँड़ि गई कित माता ।
 मातुसमान अबल हितकारी , अवर न होय त्रिलोक मँभारी ॥
 भ्राता-भगिनि-जनक-सुत - दारा , दुहिता-बन्धु - सुजन - परिवारा ।
 स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती , अटल लखी अस लौकिक रीती ॥

स्वारथमय सिगरे करैं , प्रेम जगत नरनार ।

स्वारथ विनु इक अम्ब को , विमल प्रेम-विग्रहार ॥३५॥
 स्वारथहीन सहज सुभ सोहा , जननी-नेह भुवन-मन मोहा ।
 विनु स्वारथ निजसुतहितकारी , सुरभि-समान परम उपकारी ॥
 करहि प्रसार मधुर पय द्वारा , संतति-चित्त प्रेमरस-सारा ।
 डसत मनुज कहँ उरग कराला , जीवन-भूरि देय ततकाला ॥
 जननी प्रेम-सुधा कर दारू , सोक-समूह-गरल कहँ मारू ।
 करुन बिलाप करत अस गांधी , सोक सबेग प्रबल जनु आंधी ॥
 धीरज-द्रुम तिन तोरि गिरावा , बुद्धि-विवेक-पखेरु उड़ावा ।
 संजमरूप गिरहिं फल कैसे , बिटप हिलाय बदरि फल जैसे ॥

मोह करी मदमत्त जनु , संजम भञ्जि अलान ।

सुमति-महावत निदरि कै , उरपुर कीन मसान ॥३६॥
 अग्रज ताहि अङ्क निज लावा , सीख अनेक देय समुभावा ।
 जनमहिं जीव जगत महँ जेते , मरिहैं अबसि समय लहि तेते ॥
 अटल ईस-सासन अस जानी , जनि तुम तात करहु मन ग्लानी ।
 मानस विकल भयो थिर कैसे , बरसा पाय तपत छिति जैसे ॥
 पावस घन सन लहि जलधारा , नव किसलय उपजत तरु-डारा ।
 तिभि सिख वारि पाय अनुकूला , मोहन मन विवेकद्रुम फूला ॥
 तब तिन निज करतब निरधारा , धन-संग्रह-हित कीन बिचारा ।
 अग्रज कहत सुनहु अब ताता , काज बकालत अति मन-भाता ॥

न्याय-विसारद होय तुम , करहु ग्यान-उपजोग ।

वित्त कमावहु बुद्धिबल , करहु बिभव-उपभोग ॥३७॥

मोहन पुनि प्रवेस तव कीना , अन्तर-गृह जहँ सोकमलीना ।
जाया धरमसील सतवन्ती , ठाड़ी प्रेम-निरत पतवन्ती ॥
आवत देखि दयित निजधामा , मुदित भई अति मोहन-रामा ।
चातक तृसित जलदजल पावा , वित्त अकिञ्चन-जन जनु पावा ॥
सासु-मरन-दुख दाहक दावा , नाथ-मिलन-सुख-पावस पावा ।
उर कर ताप गयो नसि कैसे , तिमिरतोम रवि-आगम जैसे ॥
भेंटि सप्रेम कुसल पुनि पूछी , तव तनु प्रिय कत भूखन-छूछी ।
प्रेमसलिल लोचन भरि बोली , बानी मधुर सुधारस घोली ॥

स्वामिसंग सोहत सदा , प्रमदा केर सुहाग ।

नाथ बिना सोहै नहीं , आभूसन तनराग ॥३८॥

नाथबिहीन न मंडन नीका , बिधवा सिर जिमि सेंदुर टीका ।
नाथबिहीन तरुनि नहिं सोहै , रविविनु नलिनि न जनमन मोहै ॥
नाथबिहीन बिकल अति नारी , नीररहित जिमि मीन बिचारी ।
नाथबिहीन नारि छवि-हीना , बिधुबिनु जामिनि निपट मलीना ॥
नाथबिहीन जियन जम फीका , फलबिनुद्रुम किमि लागहि नीका ।
नाथबिहीन नारि-छवि रूखी , पय बिनु दुखद जथा सरि सखी ॥
नाथबिहीन रमनि अस दीना , जीव-रहित जिमि देह मलीना ।
नाथबिहीन बृथा जग नारी , कूप न सोह जथा बिनु बारी ॥

निज सुत तिन पुनि ल्याय कै , दियो कंत के अंक ।

आनन-बिधु लखि मुदित भो , बिभव पाय जिमि रंक ॥३९॥

निज परिवार संग सुख पाई , मोहन मन अति मोद-बधाई ।
पुनि बिचारि अग्रज कर बानी , करन बकालत निज मन ठानी ॥

राजकोट महँ कीन ठिकाना , मरम बकालत चाहत जाना ।
 तहँ इक कटु अनुभव तिन पावा , करम बकालत नहिं मन भावा ॥
 न्यायबिसारद तरक - प्रबीना , अहहिं बकील अरथचयलीना ।
 धरम करम सन नहिं कछु नाता , स्वारथ निरखि करहिं सब बाता ॥
 न्यायसदन जनु सागर भारा , अहहिं बकील मकर-परिवारा ।
 वादि निरीह मीन लघु सोई , ता कर भखन करैं पत खोई ॥
 दयासील मोहन परम , सदा बादि-हितकारि ।

पापिन महँ किमि रहि सकै , न्यायसील बृजिनारि ॥४०॥

मोहन धरम - प्रेम - मतवारा , ठगन मध्य जनु बाल बिचारा ।
 अहहिं बकील निपट गतमाना , सहहिं अरथ हित बहु अपमाना ॥
 अस तिन निज अनुभव सन जाना , उर अंतर अतिसै दुख माना ।
 आंगल तहँ इक न्याय-अधीसा , तिनअसनियमकियोअतिखीसा ॥
 भारतीय मम निकट जु आवै , सीस पगा धरि आन न पावै ।
 बिगतमान अस करहिं बकीला , करहिं कदापि न हुजत-हीला ॥
 अनुचित बात न मोहन मानी , निज अपमान दुसह दुख जानी ।
 आंगल लखि निज सासनभंगा , अरुन भयो जिमि बालपतंगा ॥
 आंगल तब अति कोप सों , लोचन कीने लाल ।

परुस बचन मुख सों कढ़े , जिमि भीसन बहु ब्याल ॥४१॥

अंटसंट कीनी बकवासा , मोहन उर उपजावन त्रासा ।
 परुस बचन निसफल भे कैसे , गिरि सेखर बरखाकन जैसे ॥
 जे जन मानधनी जग होवै , मरन सहै बरु मान न खोवै ।
 मोहन कहँ अग्रज समुभावा , अस बिबहार न मम मन भावा ॥
 आंगल कोप तोर हित-हानी , सुनहु अनुज निसचित हौं जानी ।
 मानव नीति-कुसल मतिमाना , करिनिजहितअनहितपहिचाना ॥

बिसमकाल*निज हित उर धारी , सहत प्रहार कमठसम भारी ।
लखि पुनिकाल निपट अनुकूला , सीस उठायँ कालफनितूला ॥

तासों अब गहि मौन तुम , आंगल सासन मानि ।

निज कारज साधहु सकल , नतरु होय हित-हानि ॥४२॥
अग्रज बचन नीतिजुत पूरे , मोहन चित्त लगे नहिं रुरे ।
बिनय समेत कही अस बानी , आता तोर बात नयसानी ।
पै मम मन नहिं भावत नेकू , जाकर देस-धरम-हित टेकू ।
आंगल करन चहत अपमाना , भारत जन कर नित मनमाना ॥
आरज - कुल - मरजाद - निरादर - करनहार किमि पावहि आदर ।
किमि सहि सकहुँ देस अपमाना , देस-निरादर मरनसमाना ॥
जे जन देस-धरम कर हानी , सुखप्रियसहहिंसकलतजिग्लानी ।
तिन कहँ जानहु मृतक समाना , भोगहिं भोग निरर्थक नाना ॥

सांत-अनल कर भसम सम , होय मनुज गतमान ।

लघुपिपील-सम जनन सों , पावत बहु अपमान ॥४३॥

तेजहीन मानवअपमाना , दुरजन मनुज करहिं विधि नाना ।
तेजवन्त नर सों भय मानै , संकित हिय गुन तासु बखानै ॥
निसित दाढ़-नख आयुधवारा , नाहर सहज मृगन सरदारा ॥
विधिवस दाढ़नखायुध खोई , सहत निरादर सस सन सोई ॥
मानसमेत निधन अति नीका , मानबिहीन जियन अति फीका ।
मधुर रसायन मानबिहीना , विरस असन जिमि सैन्धवहीना ॥
नीरस असन मानजुतभावा , मधुरभाव ता महुँ सरसावा ।
होय अहार-कीट नहिं मानव , उदरपरायन नर जस दानव ॥

* कौर्म संकोचमास्थाय, प्रहारानपि मर्षयेत् ।

प्राप्तकालस्तु मतिमान्, उत्तिष्ठेत् कृष्णसर्पवत् ॥ (पंचतन्त्र)

मान रहित नर करहिं जे , जीवन हेत उपाय ।

धरमकरम अरु कीरती , तिन कर सकल बिलाय ॥४४॥

मोहन मन निसचय अस कीना , मानप्रमान चाहिय अब दीना ।

कचहरि बीच कीन हरिनादा , तजहुँ न देस-धरम-मरजादा ॥

सीस पगरि धरि कचहरि आवौं , नातरु राजकोट तजि जावौं ।

मानधनी नर सहि अपमाना , भोगन चहत भोग नहिं नाना ॥

संभावित* नर कर अपमाना , होय दुखद सत मरन समाना ।

मानधनी नर सिंह समाना , नहिं सहि सकत बिसम अपमाना ॥

जाय विदेस देस बरु त्यागी , होय नः मान-हीन धन-रागी ।

होय सकल मानवगनईसा , अथवा होय बिपिन-अवनीसा ॥

मानधनी मोहन तबै , आंगल कहँ अस टेरि ।

न्यायसदन तजि चलि गयो , लौटि न आयो फेरि ॥४५॥

जे नर पढ़हिं पुनीत , मंगलमय मोहन चरित ।

सकल सुखद हरि प्रीत , तिनके मन मंदिर बसै ॥१॥

रुचिर आत्मसम्मान , सत्य-अहिंसा-प्रेमजुत ।

करै सतत कल्याण , तिन के उर बढ़िरैन दिन ॥२॥

द्वितीय सोपान

सत्य-समान धरम नहिं दूजा , सत्य समान अवर नहिं पूजा ।
 सत्य-समान छेम जग माहीं , नेमहु सत्य इतर कछु नाहीं ॥
 सत्य-समान सुरग-सोपाना , दान-दया तप अवर न जाना ।
 सत्यरूप दीपक कर लीने , गुप्त भेद मानुस सब चीने ॥
 सत्यरूप लकुटी कर धारी , बृजिन स्वान नर देत पछारी ।
 सत्य-समान ग्यान कर दाता , अवर न कोय मोहतमघाता ॥
 सत्य-समान रच्छक नहिं कोऊ , पाप-उरग-भच्छक खग जोऊ ।
 सत्य-समान जगत-हितकारी , नहिं गुन अवर मनुज-उपकारी ॥

जप-तप-जग्य रु दान सब , सुभ गुन होयँ असार ।

सत्यरहित जिमि प्रानबिनु , मनुज देह जस द्वार ॥१॥

सत्यसन्ध मोहनमन चावा , न्याय-सहित चहियत धन पावा ।
 असनबसन बिनु जीवन नीका , न्याय-बिहीन आय सन फीका ॥
 न्याय-रहित धन-भोग-बिलासा , होयँ सकल जीवन-उपहासा ।
 चरित उदार जदपि नर रंका , ता सम होय न नृप गति-बंका ॥
 अग्रज कहत ताहि समुझाई , सहज बिरति कचहरि सन भाई ।
 राजकोट महँ अधम वकीला , अहहिं न न्यायकुसल नयसीला ॥
 न्यायसदन मुम्बापुरि भारी , तहाँ बकील न्याय-धुरधारी ।
 न्यायाधिप पुनि न्यायपरायन , हंस-समान बिबेक-गुनायन ॥

मोहन तुम तहँ जाय कै , करहु बकालत जारि ।

अल्प काल निज सुमति बल , जस पावहु दिसि चारि ॥२॥

करम नीच भ्राता नहिं कोऊ , ऊँच-नीच करताबस सोऊ ।

बिमल बिहार करत रविदासा , चरमकार जग सुजस प्रकासा ॥

नरपति बेन बृजिन-चितधारी , भयउ स्वपदपातन-अधिकारी ।

कथन तासु मोहन परमाना , मुम्बापुरि महुँ कीन ठिकाना ॥

सरल न्यायजुत परम उदारा , करहुँ बिहार हृदै अस धारा ।

पै नहिं सरल सत्य पथ हेरा , पग-पग कस्ट प्रलोभन केरा ॥

अनृत-बिहार बादि चह कीना , मोहन सोउ उचित नहिं चीना ।

अरथलोभ तजि सत्यपरायन , चलत न्यायपथ गांधि गुनायन ॥

सत्यपरायन नर चलैं , सदा न्याय-पथ माहिं ।

जगत प्रलोभन विसम नहिं , तिन कहँ कवहुँ डिगाहिं ॥३॥

मोहन न्याय-सदन थिति देखी , मानेउ मन महुँ सोक विसेखी ।

न्यायसदन सूना-सम जाना , न्याय-अधीसबधिक सम माना ॥

अर्हाहिं बकील बधिक कर दासा , करहिं न्यायमृगजीवननासा ।

तस्कर पाय बिपुल धनरासी , होय मुदित हिय आस बिकासी ॥

लखि तिमि बादि गरे महुँ फाँसी , लहत बकील अमित सुखरासी ।

होय बकील मनुज अति धूरत , असुर सुभाउ प्रकट सुरमूरत ॥

स्येन सुभाउ चटक सम भोला , हियमहुँ गरल अभियमुखघोला ।

सुरभिरूप सुसुलूक सुभावा , भूसुर-रूप ब्याध धरि आवा ॥

मीनबधिक बगुला जथा , धरत ध्यान सरि-तीर ।

तिमि बकील बादी-बधिक , दीसै परम गँभीर ॥४॥

काम बकालत प्रति अस ग्लानी , गांधि बिमल मन आय समानी ।

जे नर धरमधुरन्धर धीरा , चलत धरम-पथ ते सहि पीरा ॥

*पाप-पन्थ पग कबहुँ न धारै , निज तनु-प्राण धरम-हित वारै ।
 दुरबल-देह बिगत-जिय आसा , नाहर तदपि भखत नहिं घासा ॥
 कारज अवर करहुँ चित लाई , धरम-संग जस मिलत बड़ाई ।
 अरथ-समागम कुलजस बाढ़ै , बिसम बृजिन-करदम सनकाढ़ै ॥
 अस विधि करम होय सुखदाता , अरिनासक सज्जनगनत्राता ।
 मोहन अस विचार महँ लीना , चिन्तितचितअतिबदनमलीना ॥
 चिंता सों सुलभै नहीं , बिसम समस्या जोउ ।

ईस कृपा सों सहज ही , नर सुलभावै सोउ ॥५॥
 असफल होय नसत नर-आसा , मेघपटल जिमि भानु-प्रकासा ।
 ईस-प्रसाद तेज पुनि पावै , आसाकिरन दमक दरसावै ॥
 † नरहित प्रभु मीलत इक द्वारा , खेलत अवर कृपा-सुख-सारा ।
 चिंतातुर अति व्याकुल गांधी , उर महँ उठत बिकलता-आंधी ।
 ता बिन संदेसा इक आवा , अबदुल मेमन सेठ पठावा ।
 आफ्रिक देस आव तुम गांधी , पुस्कल बेतन देवहुँ बांधी ॥
 रहहु इहाँ बत्सर इक आई , सारध-पहस-रूप धन पाई ।
 बिस्तृत अहहि प्रचुर मम काजा , करम करहि बहु मनुज-समाजा ॥
 गांधि इहाँ तुम आय कै , तिन कहँ देहु सलाह ।
 जासौं मम कारज सरै , होय दुगुनतर लाह ॥६॥

* वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षाः

बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति ।

एवं कुलीनाः व्यसनाभिभूताः

न नीतिमार्गं परिलंघयन्ति ॥ (पचतन्त्र)

† खुदा गर बहिकमत बबन्दद दरे ,

कुशायद बफजलो करम दींगरे । (बोस्ताँ-शेखसादी)

मोहन तुम तहँ जाय कै , करहु बकालत जारि ।

अल्प काल निज सुमति बल , जस पावहु दिसि चारि ॥२॥

करम नीच भ्राता नहिं कोऊ , ऊँच-नीच करताबस सोऊ ।

बिमल बिहार करत रविदासा , चरमकार जग सुजस प्रकासा ॥

नरपति बेन बृजिन-चित्तधारी , भयउ स्वपदपातन-अधिकारी ।

कथन तासु मोहन परमाना , मुम्बापुरि महुँ कीन ठिकाना ॥

सरल न्यायजुत परम उदारा , करहुँ बिहार हदै अस धारा ।

पै नहिं सरल सत्य पथ हेरा , पग-पग कस्ट प्रलोभन केरा ॥

अनृत-बिहार बादि चह कीना , मोहन सोउ उचित नहिं चीना ।

अरथलोभ तजि सत्यपरायन , चलत न्यायपथ गांधि गुनायन ॥

सत्यपरायन नर चलैं , सदा न्याय-पथ माहिं ।

जगत प्रलोभन बिसम नहिं , तिन कहँ कबहुँ डिगाहिं ॥३॥

मोहन न्याय-सदन थिति देखी , मानेउ मन महुँ सोक बिसेखी ।

न्यायसदन सूना-सम जाना , न्याय-अधीसबधिक सम माना ॥

अर्हाहिं बकील बधिक कर दासा , करहिं न्यायमृगजीवननासा ।

तस्कर पाय बिपुल धनरासी , होय मुदित हिय आस बिकासी ॥

लखि तिमि बादि गरे महुँ फाँसी , लहत बकील अमित सुखरासी ।

होय बकील मनुज अति धूरत , असुर सुभाउ प्रकट सुरमूरत ॥

स्येन सुभाउ चटक सम भोला , हियमहुँ गरल अभियमुखधोला ।

सुरभिरूप सुसुलूक सुभावा , भूसुर-रूप व्याध धरि आवा ॥

मीनबधिक बगुला जथा , धरत ध्यान सरि-तीर ।

तिमि बकील बादी-बधिक , दीसै परम गँभीर ॥४॥

काम बकालत प्रति अस ग्लानी , गांधि बिमल मन आय समानी ।

जे नर धरमधुरन्धर धीरा , चलत धरम-पथ ते सहि पीरा ॥

* पाप-पन्थ पग कबहुँ न धारै , निज तनु-प्राण धरम-हित वारै ।
 दुरबल-देह बिगत-जिय आसा , नाहर तदपि भखत नहिं घासा ॥
 कारज अवर करहुँ चित लाई , धरम-संग जस मिलत बड़ाई ।
 अरथ-समागम कुलजस बाढ़ै , बिसम बृजिन-करदम सनकाढ़ै ॥
 अम विधि करम होय सुखदाता , अरिनासक सज्जनगनत्राता ।
 मोहन अस विचार महँ लीना , चिन्तितचित्तिअतिबदनमलीना ॥
 चिंता सों सुलभै नहीं , बिसम समस्या जोउ ।

ईस कृपा सों सहज ही , नर सुलभावै सोउ ॥५॥
 असफल होय नसत नर-आसा , मेघपटल जिमि भानु-प्रकासा ।
 ईस-प्रवाद तेज पुनि पावै , आसाकिरन दमक दरसावै ॥
 † नरहित प्रभु मीलत इक द्वारा , खोलत अवर कृपा-सुख-सारा ।
 चिंतातुर अति व्याकुल गांधी , उर महँ उठत बिकलता-आंधी ।
 ता बिन संदेसा इक आवा , अबदुल मेमन सेठ पठावा ।
 आफ्रिक देस आव तुम गांधी , पुस्कल बेतन देवहुँ बांधी ॥
 रहहु इहाँ बत्सर इक आई , सारध-प्रहसरूप धन पाई ।
 बिस्तृत अहहि प्रचुर मम काजा , करम करहि बहु मनुज-समाजा ॥
 गांधि इहाँ तुम आय कै , तिन कहँ देहु सलाह ।
 जासौं मम कारज सरै , होय दुगुनतर लाह ॥६॥

* वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षाः

बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति ।

एवं कुलीनाः व्यसनाभिभूताः

न नीतिमार्गं परिलंघयन्ति ॥ (पंचतन्त्र)

† खुदा गर बहिकमत बबन्दद दरे ,

कुशायद बफजलो करम दींगरे । (बोस्ताँ-शेखसादी)

तैयब नाम बिरोधि हमारा , मो सन मोल लियो तिन रारा ।
 तिस सन चलत मुकदमा भारा , दावा चालिस पौंड हजारा ॥
 आय सहाय करहु मम भाई , ईस-कृपा मम आस पुजाई ।
 पाय सँदेस गांधि अस सोचा , चाकरि करहिं मनुज मति-गोचा ॥
 *स्नानवृत्ति सेवा जिन भाखी , उचित बचन-सीमा नहिं राखी ।
 स्नान सुखन्द फिरत चहुँ ओरा , दास दिवसनिमि स्वामिनिहोरा ॥
 काम बकालत मम प्रतिकूला , अनमन करम न फल अनुकूला ।
 जाय विदेस करम कछु आना , खोजहुँ लाभकारि मनमाना ॥
 करुनाकर करि कै कृपा , मो कहँ दीन सुजोग ।

मारग सोउ सुभावही , कस्ट - निवारन - जोग ॥७॥

अग्रज सन लहि आयसु गांधी , कमर विदेस-गमन प्रति बाँधी ।
 जाया कहँ बोल्यो समुझाई , प्रभुलीला बरनी नहिं जाई ॥
 मम-हित अबसि विदेस पयाना , प्रेरत जगपति ईस सयाना ।
 रहि निज देस आय कछु नाहीं , बित्तबिहीन चित्त थिर नाहीं ॥
 धनसंचय करि लौटि सुदेस , बसिहौं सुख सन बिगत-अँदेस ।
 अस बिचारि प्रिय जावन देह , जीवन-लाभ उभय कर एहू ॥
 बचन मृदुल बोली तियरानी , मम हियदसा नाथ तुम जानी ।
 जा बिधि लाभ होय प्रभु तोरा , ता बिधि अबसि होय हित मोरा ॥

तब मोहन अति प्रेम सों , तिय-आलिंगन कीन ।

तनय-प्रेम-प्रेरित बहुरि , सुतमुख-चुम्बन दीन ॥८॥

पुनि हिय सुमिरि राम भगवाना , मोहन चरन धरयो जलजाना ।
 उदधि अपार पार पुनि कीना , डरबन नगर जाय पगु दीना ॥

* सेवा श्ववृत्तिराख्याता यैस्तैर्मिथ्या प्रजल्पितं ।

स्वच्छन्दं चरति श्वात्र सेवकः परशासनात् ॥ (हितोपदेश)

अबदुल सेठ सखा संग आये , सहित सनेह गेह निज ल्याये ।
 निज अभियोग-भेद पुनि सारे , इक इक बरनि सकल कहि डारे ॥
 अहहि तयब मम परम विरोधी , मारग मोर रह्यो अबरोधी ।
 खल धूरत अति क्रूर कुचाली , पातकउपवन कर जनु माली ॥
 द्रानसबाल मीत तुम जाहू , करहु काज जिमि होवहि लाहू ।
 धूम-जान चढ़ि फसट कलासा , द्रानसबाल चल्यो धृत-आसा ॥

मोहन कहँ गारड तहाँ , अरधचन्द दै दीन ।

दारुन अति अपमान करि , बहिर जान तें कीन ॥९॥
 परस गिरा मोहन सन भाखी , आंगल हित रिजर्व करि राखी ।
 कृस्न-काय सुनु फसट कलासा , ता महुँ तजहु चढ़न की आसा ॥
 नाहर-भाग स्यार किमि खावै , पुरोडास किमि रासभ पावै ।
 अकनि तासु सुति-दाहक बानी , निजअधिकारखनहित मानी ॥
 धरना दीन अटल तहुँ कैसे , डटत अचल भंभा महुँ जैसे ॥
 दुरजन मन प्रभाव नहिँ कैसे , ऊसर पयद परे फल जैसे ॥
 विविध प्रकार कस्ट तिन पाये , अनुभव-पथ प्रति-दिन जे आये ।
 बरन-भेद ज्वाला अति घोरा , आफ्रिक देस लखी चहुँ ओरा ।

करहिँ करम दारुन परम , नीति-धरम सब त्यागि ।

भारत-मनुज सतावहीं , हिंस-वृत्ति-अनुरागि ॥१०॥
 गौर-बरन आंगलजन जोऊ , राज-शक्तिमदिरारत सोऊ ।
 भारत-जन प्रति कुटिल बिहारा , करहिँदिवसनिसिअनय-अचारा ॥
 बधिक-पासगत कुरग बिचारा , करत दुखित हिय करुन पुकारा ।
 भारत-जन कर आरत बानी , सुनि तिमिमोहन अस हिय ठानी ॥
 तनमनधन निज अरपन करिहौं , देस-प्रेम इन कर हिय भरिहौं ।
 इन महुँ प्रीति परसपर नाहीं , बैर-बिरोध ग्रसे दुख पाहीं ॥

सँगठन मँहँ इन कर हित चीना , सँगठन करत सबल बलहीना ।
पयकन छुद्र मेल जब कीना , पावस रूप जलधि कर लीना ॥

बलदायक अति संगठन , करहि अबल बलवान ।

रबिकर लघु मिलि कै लखौ , करहिं निबिड़ तम हान ॥११॥

लघु* तन जोरि रसरि जब कीनी , मत्तमतंगज-गति तिन छीनी ।
छुद्र पिपीलि सैन निज साजी , देयँ पछारि प्रबल गजराजी ॥
अनल-अंस लघुरूप निहारा , पावक होय करत जग छारा ।
मोहन पुर प्रिटोरिया जाई , तैयब सन अस वात चलाई ॥
सुनहु सेठ तुम अस मत मोरा , जा विधि होय परम हित तोरा ।
अबदुल सन तुम करहु मितार्ई , रार किये नहिं होत भलाई ॥
कचहरि जाय सुजस-धन-नामा , ब्याकुल चित्त नसत सुख-आसा ।
कचहरि मँहँ जीते जन हारे , हारे मनुज गनौ जस मारे ॥

बैठि परस्पर करहु तुम , निज विवहार-विचार ।

कचहरि जावत मनुज जे , करैं अरथ-जस छार ॥१२॥

कचहरि जाय मुकदमा छेरैं , जनु जमदण्ड स्वमुख प्रति फेरैं ।
बादी-प्रतिबादी जब लरहीं , मोद बकील परम तब करहीं ॥
नाहर-द्वीपि लरहिं जब भाई , सहज सृगाल हरिन कहँ खाई ।
सो तुम करहु न्याय निज भाई , अबदुल-देय देहु द्रुत जाई ॥
भेंटहु प्रेमसहित पुनि ताही , अस विधि बैरसकल मिटि जाही ।
मोहन-मन्त्र प्रेम कर भारी , बैर-उरग कीलन करि डारी ॥
मोहन-वचन तयबचित भावा , सन्धिकरनहित हिय मँहँ चावा ।
मोहन-मुख तिन पढ्यो सँदेसा , अब्दुल मन जनि करहु अँदेसा ॥

* बहूनामप्यसाराणां संहतिः कार्यसाधिका ।

तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्वध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥ (चाणक्यनीतिः)

नीति-निपुण गांधी परम , हमरी रार मिटाय ।

आतृभाव थापन करै , सुगम सतत सतिभाय ॥१३॥

गांधी तिनकर रार मिटाई , विमल चतुर-दिक कीरति छाई ।

भारत-जन अभिनंदन कीना , प्रेमदूत गनि बंदन कीना ॥

तव मोहन अस निज मन ठाना , हौं अब करहुँ सुदेस पयाना ।

भेंटों जाय तहाँ सुत-दारा , देखहुँ समुद बन्धु-परिवारा ॥

जनमभूमि जननी-सम जानी , जासु अङ्क सुख पावत प्रानी ।

जदपि विदेस अरथ-सुख नाना , भोगविलास मोद मनमाना ॥

होय सुदेस कस्ट अति भारा , गनिय तथापि सुरग सुखमारा ।

सुखद विदेस गरल इव जानौ , दुखद सुदेस अगद सम मानौ ।

त्रिभुवन महुँ भ्रमि देखहु , नहिं सुदेस सम थान ।

लसत भूमितल आय कै , सुन्दर सुरग-समान ॥१४॥

करत मनोरथ मानव नाना , पै विधि करत न इक परमाना ।

गांधिगमन सुनि अबदुल काना , सोक अपार न चित्त समाना ॥

व्याकुल होय गांधि प्रति धावा , बोलेउ गमन मीत कत भावा ।

हमहिं सतावहिं बहु अंगरेजा , रच्छक-रूप तुमहिं प्रभु भेजा ॥

जावहु हमहिं छोरि तुम ताता , कवन हमार होय अब त्राता ।

जनहित लागि रहौ तुम भाई , परहित लागि सुजन सुख पाई ॥

बचन मृदुल सुनि अबदुल केरे , परम सनेह-भगति सन प्रेरे ।

मोहन कहेउ सुनहु मम भ्राता , देसगमन चाहत चित ताता ॥

पै तुम्हार हित करन हित , हौं अब रहउँ विदेस ।

जनहित सुख त्यागत सुजन , गनत न दुख-लवलेख ॥१५॥

तव पुनि करत तहाँ मनमोहन , प्रेमसहित निगमागम-मोहन ।

ग्रन्थ अनेक पढ़त चित लाई , गहत विचार पूत सुखदाई ॥

ईमरसन रसकिन मतिमाना , थोरो टाल्लसटाय गुनखाना ।
 कहहिं मनुज कहैं सुखकर सोई , सुभ-विचारमय जीवन जोई ॥
 विमल-चित्त सुभचरित सुहाना , जीवन-सफल भेद अस जाना ।
 निगमागम इतिहास पुराना , गीता बैबल अवरु कुराना ॥
 *धरमसार बरनत मतिधीरा , परहित पुन्य पाप परपीरा ।
 सो निज सुख-विचार नर त्यागी , सेवानिरत होय बड़भागी ॥

सेवा सन मेवा मिलै , जग अस बात प्रसिद्ध ।

सेवा सन हरिहू मिलै , कहैं सन्त-मुनि-सिद्ध ॥१६॥
 प्लीमथ ब्रदर नाम सुखदाई , ईसाभगत सुजन - समुदाई ।
 तिन कर नायक गुनगन-धामा , बेकर-कोट्स-मरे सुभ नामा ॥
 आफ्रिक बसि करि धरम प्रसारा , जीवन सुफल करहिं सुखसारा ।
 मोहन कहैं भाखत समुभाई , आवहु ईसु-सरन तुम भाई ॥
 ईसा अहहि तनय प्रभुकेरा , पातक प्रबल जगत तिन हेरा ।
 प्रभु-सामन सन धरि अवतारा , निज बलिदान सकल जग तारा ॥
 सिमरन तासु परम सुखकारी , पाप-ताप देवत सब टारी ।
 ईसा नाम सुभग जलजाना , पाप-पयोधि-तरन-हित जाना ॥

मोहन तिन कर कथन सुनि , बोलेउ वचन विनीत ।

धन्यवाद अतिसै करौं , सुनि उपदेस सप्रीत ॥१७॥
 संसै ब्रमहु मीत कछु मोरे , करहुँ प्रकास अनुग्रह तोरे ।
 ईसू तनय अहहि प्रभु केरो , करत प्रतीत न अस मन मेरो ॥
 अज-अधिकार-अमर जगदीसा , तासु तनय किमि होवहि ईसा ।
 ईसा-रुधिर पाप धुलि जाहीं , अद्भुत बात तरकजुत नाहीं ॥

* धर्मस्य तत्त्वं व्यासेन भारते परिकीर्तितम् ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ (स्फुट)

ईसा-नाम सुमिरि गति पाहीं , नर अस मम मति मानत नाहीं ।
मानहुँ सन्त महापुनि त्यागी , सिच्छक दिव्य ईसु बडभागी ॥
पै नहिं जगपति-सम तिहिं मानौं , जीव अलप किमि प्रभु-सम जानौं ।
सत-चित-आनंदरूप महेसा , सहज निरंजन रहत हमेसा ॥

सरब सक्तिजुत ईस्वर , जगव्यापक सरवग्य ।

तासम होवहि जीव किमि , अलप-सक्ति अलपग्य ॥१८॥
व्यापक सबल ग्यान-जुत ईसा , सो किमि सखि चढ़त जिमि खीसा ।
जासु सुघर कृति जगत सुहावा , सो किमि देहबंध महँ आवा ॥
वसन मलीन अमल जल धोये , होयँ विमल नहिं विनु मल खोये ।
निमि मन लिस पापमल माहीं , विनु सुभकरम बिगतमल नाहीं ॥
निज निज करमधरम-अनुसारी , सुरपुर-नरक जायँ तनुधारी ।
परकृत करम देयँ नहिं साथी , पावत मुक्ति मनुज निज हाथा ॥
*करमप्रधान बिस्व प्रभु कीना , जस विधि करम फलहु तस दीना ।
धरमकरमफल मुक्ति उदारा , पातक-अंत निरय दुख भारा ॥

हिन्दुधरम सिद्धान्त अस , न्यायपरक सुखसार ।

तुमरो मत नहिं तरकजुत , देखहु चित्त बिचार ॥१९॥
अस बिचारि जनि करहु प्रयासा , द्यौंहु मम सुधार कर आसा ।
मानससलिल-सुधा करि पाना , लवनजलधिजल पियत अथाना ॥
कामधेनु-पय-पीयुस त्यागी , को बुध होय खरी-पय-रागी ।
सुभग महारघ रतन बिहाई , उपल-सकल पाछे जड़ धाई ॥
मृदु - रसाल - फल - चाखनहारा , करत नाहिं कटु निम्ब-अहारा ।
पावन सुरसरि नीर बिहाई , गोपद-पय जड़ पियत अघाई ॥

* करम प्रधान बिस्व रचि राखा ।

जो जस करइ सो तस फल चाखा ॥ (तुलसी रामायण)

कुसुम-सुसोभित तजि फुलवारी , होय कवन कंटक-वनचारी ।
गनहुँ धरम निज जिय सन प्यारा , लागत सरब मतन सन न्यारा ॥

हिन्दुधरम जनु भानु सम , संसैतम कर नास ।

अवर धरम नभ-जोत-सम , जहँ तहँ करत प्रकास ॥२०॥
हिन्दुधरम राकासम सोहा , ग्यानप्रकास भुवन-मनमोहा ।
अन्य धरम लघु-दीप-समाना , करहिं प्रकास कलुक इक आना ॥
हिन्दुधरम सुवरन समतूला , रूप-वरन-गुन मंगल-मूला ।
इतर धरम सीमक सम जानौ , रूप न रंग न गुन पहिचाना ॥
*विगुन धरम आपुन तउ नीका , अवर धरम गुनवानहु फीका ।
उत्तम मरन धरम निज लागी , अन्य धरम भयदायक आगी ॥
तासों प्रेमसहित निजधरमा , बुध अनुसरहिं करहिं सुभकरमा ।
भव सुधारि परलोक सँवारैं , आपु तरहिं अरु अवरन तारैं ॥

मम-तुव-भेद अजान नर , करहिं पाय कुबिचार ।

बसुधा सब परिवार-सम , जानहिं सुजन उदार ॥२१॥
रायचन्द कवि मोहन-मीता , बिमल-चरित अरु भाव-पुनीता ।
जब तब लिखि लिखि उत्तम पातो , धरमभगति उन्नति कर दाती ॥
मोहनमन सरधा दृढ़ कीनी , धरम-मरम-सिच्छा सुभ दीनी ।
हिन्दु-धरम प्रभु कर वरदाना , रुचिर-बिचार-रतन-निधि जाना ॥
निज तपत्याग रिसिन तिहि पाला , कलिजुग-दस्यु चहत तिहि घाला ।
सन्तभगतगुरुजन पुनि आई , ता कर इबत नाव बचाई ॥
सुभ उपदेस पाय संजीवन , बिकल धरम पायो नवजीवन ।
ता कर करहिं बहुरि खल हानी , मन महँ निपट निरास्य जानी ॥

ॐ श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात् ।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ (गीता)

करमचन्दसुत करहु तुम , धरमरीति - प्रतिपाल ।

बनहिं प्रानपन सों सुजन , धरम-रीति रखवाल ॥२२॥

अस बिधि बसत जाय तहँ काला , भारत-जन कहँ करत निहाला ।
मोहन सुभ-बिचार-धन देई , दळिनारूप समादर लेई ॥
समाचार इक दिन तिन पावा , गोरन अति उतपात मचावा ।
भारतीय मतवञ्चित कीने , सब अधिकार उचित तिन छीने ॥
गांधि प्रचार प्रबल तब कीना , सँगठन-मन्त्र सबन कहँ दीना ।
निज अधिकार प्रानसम प्यारा , चाहियत ता पर तन-मन वारा ॥
सँगठन महँ बल होवत भारी , निरबल मनुज होय बलधारी ।
तब तिन मिलि बिरोधअतिकीना , निज-अधिकार-ग्रहन-व्रत लीना ॥

गांधि संगठन अस कियो , जिमि रसरी-तुन-मेल ।

अधिकारी जन हाथ सों , सत्ता पाई सहेल ॥२३॥

सत्याग्रह गांधी सिखरायो , सँगठनबल रिपु-सीस नवायो ।
कांग्रेस पुनि थापित तिन कीनी , सँगठन-नींव सुथिर करि दीनी ॥
ता कर लच्छ गांधि अस धारा , भारतीय-जनता-हित-प्यारा ।
ता कर सिद्धि कवन बिधि होई , बढ़त प्रेम बाढ़ै ध्रुव सोई ॥
अहहि उचित मरजादा-पालन , वृजिन-असुर कर संतत घालन ।
गहहु सदैव निजन्त्रन-भावा , आतम-ग्यान मनुज सुख पावा ।
सेवा-करम करहु चित लाई , सेवा महँ निज अवर भलाई ।
सब ते मुख्य सत्य कर पालन , सत्य-अधार चलहु सुभचालन ॥

धरमजुद्ध करि गहहु तुम , भारतीय अधिकार ।

दुर्जन कर भय त्यागहु , सत्याग्रह जिय धार ॥२४॥

तीन बरस अस आफ्रिक बीते , सुख-संजुत दुखदारिद-रीते ।
मोहन-मान करहिं सब लोका , जानहिं ताहि सकल-गुन-ओका ॥

भारत-जन-संगठन करि गांधी , भारत-प्रति-लौटन-मति बाँधी ।
 कांग्रेस सुभ अभिनंदन कीना , नेतारूप ताहि निज चीना ॥
 चल्पो देस प्रति अनुमति पाई , भयउ जगतपति तासु सहाई ।
 सकुसल पुरबन्दर जब आयो , तियसुत भेंटि परम सुख पायो ॥
 कसतूरीमन मोद बधावा , निज गत-विभव मनहु तिन पावा ।
 पुनि मोहन सुतचुम्बन कीना , तनयप्रनय-अनुभव-सुखलीना ॥
 प्राकृत जन संसार महँ , रहहिं बिसयरसलीन ।

सेवाव्रत - धारन - कुसल , नर उपकार - प्रवीन ॥२५॥
 मोहन अम बिचारि मन लीना , रहि सुदेम चाहियत कलु कीना ।
 आफ्रिकवासि अहहिं जे भाई , जा बिधि तिन कर होय भलाई ॥
 *रानाडे जज न्याय-प्रवीना , नरपुंगव महता नयलीना ।
 तैयब-तिलक-वनरजी नामा , नेता अहहिं सकल गुनधामा ॥
 गोखले नाम सिरोमनि तासु , दायो सुजस जगत महँ जासु ।
 तिन सन भेंट करी तब गांधी , देस-सुधार-आस हिय बाँधी ॥
 बिनती बहुरि करी कर जोरी , दमहु नाथ सिगरी मम खोरी ।
 आफ्रिकगत आता मम भोरे , तिनहिं सतावहिं निरदय गोरे ॥

भारत - देस - सिरोमनी , अहहु सकल गुनधाम ।

सुरगुरुसम नीतिग्य सुभ , सफल करहु मम काम ॥२६॥
 राजनीतिपंडित सब आपू , सुत-दुख देखि मुदित किमि बापू ।
 पाय कलेस तकहिं मुख रौरा , ठाढ़स देहु तिनहिं करि दौरा ॥

* महादेव गोविन्द रानाडे, सर फीरोजशाह महता, बदरुद्दीन तैयबजी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, सर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी और गोपालकृष्ण गोखले—भारतीय राष्ट्रीय महासभा के सामयिक नेता ।

तिन कर सार लेउ तुम जाई , जासों निज हिय समरथ पाई ।
लेवहिं धाय सत्रु सन लोहा , ब्रौंड़ि सकल जीवन-धन-मोहा ॥
तब तिन कह्यो ताहि सगुभाई , बिकल भये नहिं होत भलाई ।
सहज किये कारज सुभ होई , सहज पकत मीठो फल सोई ॥
भारत महँ लहि प्रथम सुराजा , करहु अनन्तर आफ्रिक-काजा ।
सींचत जड़ तरु लहत बिकासा , मूल नसे किमि दलफल-आसा ॥

भारत-उन्नति-हेत तब , लग्यो करन सुभ-कार ।

दुख-दारिद-अग्यान-रुज , पायँ जथा परिहार ॥२७॥
मुम्बई पुगे परचो अति भारी , फैलि गयो जनु विपिन दवारी ।
गरहिं असंख्य अवस नरनारी , दरकत हिय कटु-दसा निहागी ॥
हाहाकार मच्यो चहुँ ओरा , ब्राहि ब्राहि करुनामय सोरा ।
मोहन मोह त्यागि तन केरा , निज मन जन-सेवा महँ प्रेरा ॥
रैन-दिवस सेवा महँ लीना , जम सन भरित मनहु भयहीना ।
*सेवा-धरम कठिन जगजाना , जोगि-जनन कहँ दुरगम माना ॥
सेवा-धरम करहिं बलहीना , पावहिं सुख-फल परम प्रवीना ।
सेवा-रत स्वारथ निज त्यागी , ते नर होयँ सुखी बड़भागी ॥

सेवा उत्तम जानिये , जा महँ स्वारथ नाहिं ।

पर-दुख-दरद निवारि कै , सेवकजन सुख पाहिं ॥२८॥
सेवारत मोहन अस दीठा , गतस्वारथ सेवा-फल मीठा ।
सेवारहित जनम जग हीना , सेवा-हित नरतनु प्रभु दीना ॥
पर-उपकार करहिं चित लाई , मोदहिं नर मनबांछित पाई ।
सेवा कर अस उत्तम लाहू , निज मन मोद टरत पर-दाहू ॥

* सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः । (पंचतन्त्र)

सेवा-जनित प्रेम मन सोधै , करतब-न्याय चित्त परबोधै ।
 †मो कहँ राज सुरग नहिं प्यारा , नहिं अपरबग परम सुखसारा ॥
 आरतजनसंकट , अति भारा , सेवा सन चाहहुँ द्रुत टारा ।
 सेवा-सुफल सहज प्रभु दीना , पुगेजनित संकट हरि लीना ॥
 सेवक कहँ सेवा सुखद , नहिं चाहत सुख और ।

सुत-दारा-धन-मान सों , सेवा - सुख - सिरमौर ॥२९॥

सेवा कर साजन-मन चाऊ , सेवा महुँ स्वारथ नहिं काऊ ।
 सेवा-करम धरम निज जानै , सेवा करत परम सुख मानै ॥
 सेवक सकल मनुज सम जानै , सेवा करि मानस मुद मानै ।
 ता मन भाव न आपुन-दूजा , सेवा-धरम गनत हरि-पूजा ॥
 सेवा-धरम परम सुभ जाना , सकल सुखद संसृति महुँ माना ।
 धरनी-बसन - अन्न - धन - दाना , सेवा-सम नहिं एकहु माना ।
 सेवा-करम-निपुन भगवाना , सेवक-हित-साधन मुद माना ॥
 सेवक-हित बैकुण्ठ बिहाई , नापित-करम कीन जदुराई ॥

सेवा कर महिमा सुभग , जानहिं सन्त सुजान ।

सेवा करि बस महुँ करै , अलख - रूप भगवान ॥३०॥

पर - उपकार - प्रबीन , मोहन कर लखि कै चरित ।

सेवाव्रत महुँ लीन , होयँ मनुज आलस्य तजि ॥३१॥

† न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।

कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥ (महाभारत)

तृतीय सोपान

पर-उपकार धरम सुभ जाना , निगमागम अति पूत बखाना ।
पर-उपकार सार जग केरा , ता सम पुन्य अवर नहिं हेरा ॥
पर-उपकार करहिं नित साजन , इह-परलोक होयँ सुख-भाजन ।
पर-उपकार जगत-दुख-नासक , मानव-हिय सुभ-भाव-प्रकासक ॥
पर-उपकार सकल गुनभूसन , टारत सकल मनुज-हिय-दूसन ।
पर-उपकार धरम प्रभु केरा , होय विकल सुनि आरत टेरा ॥
पर-उपकार करन हित स्वामी , जग महँ प्रगटत अन्तरजामी ।
पर-उपकार-करम करि साजन , होवहिं ईस-कृपा कर भाजन ॥

सोक-सदन संसार महँ , दोउ पदारथ सार ।

निज-जीवन-उद्धार अरु , परहित-करम उदार ॥१॥

अबदुल पुनि संदेस पठावा , सहित सनेह-मृदुलतम-भावा ।
आफ्रिक पुनि आवहु तुम गांधी , उठत इहाँ रौरव रन-आँधी ॥
अति उतपात करहिं अँगरेजा , नहिं रन-हेत हमार करेजा ।
आसा-गुन बाँधे तुव साथ , आफ्रिक तुमहिं बुलाय अनाथा ॥
भारतीय ताकत तुव राहा , स्वागत-हित अति चित्त उमाहा ।
तिन कहँ दरस देव द्रुत आई , पयद विलोकि केकि सुख पाई ॥
कांग्रेस जो तुम थापित कीनी , तासु दसा दारुन विधि कीनी ।
सो तुम आय करहु रखवारी , बिनु माली बिनसत फुलवारी ॥

खेती जिमि फूलै फलै , स्वामि-सुरच्छन पाय ।

तुव प्रसाद सुभ पाय तिमि , कांग्रेस बढै अघाय ॥२॥

जनवरि मास चलहि पुनि बाता , को जन होय सकत मत-दाता ।
 नियमसभा गोरन-हितकारी , सुनहि न बात कदापि हमारी ॥
 तासों तुम आवहु बिनु देरी , तुम बिनु धीर बँधत नहिं मेरी ।
 आय सपदि निज काज सँभारौ , निज-बन्धुन कर आपद टारौ ॥
 देवदूत सम तुम अब आई , आसामय संदेस सुनाई ।
 निविड़-निरासा तम द्रुत टारौ , भयसरि मज्जत हमहिं उबारौ ॥
 अधिक-हस्तगत-सुरभि - समाना , जियन हमार कठिन अब जाना ।
 करुनामय - भगवान - समाना , रच्छक तुम बिनु अहहि न आना ॥

अबदुल-पाती पाय कै , मोहन निसचय कीन ।

बिनु बिलंब अब जाय हों , हूँ निज करतब लीन ॥३॥

परामरस पतनी सन कीना , तिन विचार परगट अस कीना ।
 मो कहँ करम उचित प्रभु सोई , जा महँ कंत तोर हित होई ॥
 आफ्रिक-गमन करहु जदि नाथा , मो कहँ लेय चलहु निज साथी ।
 चरन समीप स्वामि बसि तोरे , बीतहिं दिवस परम सुख मोरे ॥
 आनन-इन्दु निरखि प्रभु तोरा , टरहि प्रवास-ताप सब मोरा ।
 पुनि लहि तोर सरन सुख-मूला , बिसरौं नाथ सकल हिय-मूला ॥
 सवितासङ्ग बसत जस छाया , पुरुष-संग तिमि जानहु जाया ।
 पावक-संग जोत जिमि सोहै , मधवा-संग सची जग मोहै ॥

बिमल-वरन जस कौमुदी , लसत सुधाकर संग ।

प्रमदा तिमि सोहत सदा , बसत कंत के संग ॥४॥

तब लहि संग तनय अरु जाया , मोहन जलपथ आफ्रिक धाया ।
 डरबन नगर पहुँचि जलजाना , करनटीन* महँ कीन ठिकाना ॥

सासक त्रास बहुत बिधि देई , जात्रिन थल प्रति जान न देई ।
 रुद्र रहे तहँ दिन त्रय-बीसा , पैठन देयँ न नगर खबीसा ॥
 एसकम इक अंगरेज उदारा , मोहन-हित तिन कीन बिचारा ।
 गुपतरूप संदेस पठावा , संध्यासमय चहिय गृह जावा ॥
 तव रिपु अहहिं गांधि सठ गोरे , नीतिधरम सन सो मुख मोरे ।
 अहहिं सकल तुव जीवन-गाहक , तिन महँ फँसहुँ जाय नहिं नाहक ॥

दैव अटल अस कहत हैं , धरम-ग्रन्थ अरु सन्त ।

दैव-बिबस सब जन अहैं , राजा - रङ्ग - महन्त ॥५॥
 लाटन नाम तहाँ इक गोरा , दनुज-रूप दीसै अति भोरा ।
 मोहन सन बोल्यो मृदुबानी , मो सँग चलत न तव हितहानी ॥
 गाड़ी महँ भेजहु सुत दारा , मो सँग चलहु आपु पग-द्वारा ।
 मो सँग चलत बार तुव बाँका , जो करि सकै न सो नर आँका ॥
 एसकम-बचन बिसरि तव गांधी , ता सन चलन हेत मति बाँधी ।
 जा छिन बिपति आय सिर खेलै , मनुज-बिचार कुपथ महँ पेलै ॥
 भेज्यो जान तुरत परिवारा , लाटन संग चलयो पग-द्वारा ।
 मानहु काल कुपथ तिहि प्रेरा , गोरन आय सपदि तिहि घेरा ॥

भाबी-बस नाहर परचो , बधिक पास महँ जाय ।

बंध-बिबस तिहि निरखि कै , जम्बुक-वृन्द सताय ॥६॥
 घायल लखि जिमि पन्नगराजा , छुद्र पिपीलि सजहिं रन-साजा ।
 तिमि मोहन घेरचो तिन आई , तजहु देस अस डाँट बताई ॥
 नातरु सरबनास अब तोरा , सकत बचाय न कोउ निहोरा ।
 मोहन तिनहिं कहेउ समुझाई , तुम सन बैर न मम कछु भाई ॥
 सेवक हौं निजबन्धुन केरा , सेवा धरम अहहि प्रन मेरा ।
 भारतजन कहँ दुख जनि देऊ , प्रेम परस्पर करि सुख लेऊ ॥

सीतल-सिख नहिं भावत कैसे , ससिकर बिमल चोरचित जैसे ।
मुस्टि-चपत अरु पादप्रहारा , करहिं कूर मिलि बारमबारा ॥

लाटन अवसर पाय कै , खिसकि गयो निज-धाम ।

बली सखा मोतहिं तजै , लखि वा को बिधि बाम ॥७॥
परहिं प्रहार गांधि-सिर कैसे , धारासार जलद-जल जैसे ।
मोहन अचल रह्यो तब कैसे , भंभा बहत महीधर जैसे ॥
गांधि अकेल सत्रु-दल भारा , तिन सन सकत पाय किमि पारा ।
होय अचेत परयो छिति कैसे , असनिपात पादपवर जैसे ॥
नगरपाल-बनिता तहँ आई , लखि तिन गांधि दसा दुखदाई ।
नगरपाल-प्रति दूत पठावा , सुभट समेत सोउ द्रुत आवा ॥
ता कहँ निरखि नसे सब कैसे , नाहर निरखि नसहिं मृग जैसे ।
मोहन तिन निज गेह पठायो , कुसल-बैद-उपचार करायो ॥

अस गांधी-रच्छन कियो , प्रनतपाल जगदीस ।

ईसभगत हानी कहा , करहिं कुटिलमति खीस ॥८॥
एसकम समाचार सुनि आयो , घायल गांधि देखि दुख पायो ।
मित्रभावजुत मंजुल बानी , बोल्यो मधुर नेह-रससानी ॥
तोहि सचेत सखा हौं कीना , तुम मम बचन चित्त नहिं दीना ।
तिस कर दुखपूरन परिनामा , तुम कहँ नियति देत अब बामा ॥
हितचिन्तक कर बचन न मानै , ते नर कूप मरन-हित खानै ।
*भीत-बचन अरु नवत-प्रकासा , बुझन-काल दीपक कर बासा ॥
सुनहिं लखहिं नर सँघहिं नाहीं , जा कर जियन-आस कछु नाहीं ।
अब अस गांधि अहहि मत मोरा , चालै सविधि मुकदमा तोरा ॥

❧ दीपनिर्वाणगन्धञ्च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम् ।

न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः ॥ (हितोपदेश)

करहि खलन सासन सदा , अरु सुजनन सन हेत ।

सुभग सुखद सुभ राज सो , जो नित न्याय-समेत ॥९॥

सठजन पकरि बन्दिगृह डारैं , तिन कहँ सुभट लकुट सन मारैं ।
तुव पग पकरि छिमा जब जाचैं , न्याय-अधिप तिन पै तब राचैं ॥
निज कृत सुमिरि करहि पछतावा , मम चित अवसि मोद तब पावा ।
मोहन ताहि कह्यो समुभाई , इक मम बात सुनहु तुम भाई ॥
छिमा-समान धरम नहिं कोऊ , गुन नहिं अवर छिमा सम जोऊ ।
छिमा-समान मनुजबसकारी , इतर उपाय न देखु विचारी ॥
छिमा-समान कोप कर नासक , छिमा-समान बैर कर सासक ।
छिमा-समान दरप-मदहारी , गुन नहिं अवर मनुज मुदकारी ॥

रुचिर सुगुनमनिमाल महँ , छिमा सुमेरु-समान ।

छिमा रहित सोहैं नहीं , सबल-सगुन-मतिमान ॥१०॥

कोपकृतानु-दग्ध चित जोऊ , होय छिमा-जल सीतल सोऊ ।
जे जन बैर गरल सन जरहीं , छिमा पियूस तासु दुख टरहीं ॥
बैर-विरोध-दनुज खल केरा , छिमा-समान कुलिस नहिं हेरा ।
ईर्ष्या - उरग - दमनबलसाली , छिमा-समान न भेसज आली ॥
मत्सर-मुरझित कहँ नहिं होई , छिमा-समान सँजीवन कोई ।
सठ-प्रभाव-पीड़ित नर जोऊ , छिमा-प्रभाव पाय सुख सोऊ ॥
ईसा कहँ सूली जिन दीनी , तिन प्रति तिन सुभकामना कीनी ।
छमव मीत पातक इनकेरा , इनकर स्त्रेय छिमा महँ हेरा ॥

*छिमाखडग कर जाहि के , ता कहँ रिपु भय नाहिं ।

तुनबिहीन थल पै परयो , अनल बुझत छिन माहिं ॥११॥

* छिमाखडग करे यस्तु किं करिष्यति दुर्जनः ।

अनृणे पतितो बह्निः स्वयमेव प्रशाम्यति ॥ (चाणक्यनीति)

*ईसा सैल-सिखर सिख दीनी , सरधासहित चहिय चित कीनी ।
 दच्छिनगाल चपत सठ देवै , बाम सुजन आगे करि लेवै ॥
 †दुरजन-सन तुम करहु न बैरा , केवल दुरगुन जानहु गैरा ।
 गौतम बुद्ध मिखावन एहा , रोससमन-साधन सुभ नेहा ॥
 निगमाश्रम-मत एक समाना , छिमा-समान धरम नहिं आना ।
 जिन गोरन मो कहँ अब मारा , तिन सन बैर न हों चित धारा ॥
 धरमबिहीन करम तिन कीना , निज ललाट मसि-टीका लीना ।
 मोर मरन महँ निज-हित चीना , तासों मम-मारन-प्रन कीना ॥

समय पाय पछितायहँ , निज पातक पै दीन ।

बैरभाव रखि ताहि सों , मन कत करों मलीन ॥१२॥

तजहु बिचार मुकदमा केरा , मानि सखा तुम अस मत मेरा ।
 ता कहँ दंड दिये नहिं लाहा , अनुसय-अनल जासु उर दाहा ॥
 एसकम चकित भये तब कैसे , इन्द्रजालकौतुक लखि जैसे ।
 मोहन-मुख-मयंक चख गाड़े , चित्र-लिखित इव ता छिन ठाड़े ॥
 मानव अस उदार जग माहीं , ईस-कृपा कलिजुग महँ आहीं ।
 जे निज-स्वारथ सकल बिहाई , पर-उपकार करहिं सुखदाई ॥
 कोप-कृसानु-समन हित जोई , छिमा - नीरप्रद बारिद होई ।
 जे नर दुष्ट अहहिं अपकारी , तिन पै करहिं अनुग्रह भारी ॥

जदपि सतावहिं सठ तऊ , सुजन सुफल तिहि देत ।

मनुज उपल सन तरु हनै , तदपि मधुर फल लेत ॥१३॥

परहित-निरत सुजन दुख पाई , रिपुहित होय सतत सुखदाई ।
 पीड़न कठिन ईख सहि भाई , देय सुधासम रस सुखदाई ॥

* Sermon on the Mount

† Hate the sin & not the sinner.

काटहि चंदन कठिन कुठारा , निज-परिमल बासत सित-धारा ।
 धन्य-धन्य गांधी मतिमाना , लखितुव चरित मोद मन माना ॥
 अब हौं निज-बन्धुन मति देऊँ , बैर-भाव तिन कर हरि लेऊँ ।
 गोरन जाय कह्यो तिन भाई , गांधी सन तुम करी बुराई ॥
 परम उदार चरित तिस केरा , बैर भाव नहिं हौं कछु हेरा ।
 जो तुम माँगु छिमा अब जाई , पाप तुमार सकल धुलि जाई ॥
 साजनहिय जनु कुलिससम , सहै बिसम गिर-वान ।

परदुख-आतप लहि द्रवै , मृदु नवनीत-समान ॥१४॥
 गांधी निकट जाय तब गोरे , अनुसय-ताप-बिमल-चित भोरे ।
 बोले छमव दोस करि दाया , तुम कहँ नाहक बहुत सताया ॥
 तुम कहँ निज बैरी हम जाना , तुव मारन निज करतव माना ।
 अनुसय-अनल जरहिं अब भाई , सुमिरि सुमिरि निज मूरखताई ॥
 मोहन तिन कहँ ढाढ़स दीनी , कहि गिर मधुर प्रेम-रस-भीनी ।
 सोदर-सम तुम अहहु हमारे , भारतीय-बन्धुन-सम प्यारे ॥
 सो करि प्रेम परस्पर जीवौ , भ्रातृभाव कर पीयुस पीवौ ।
 सहित सनेह करहु बिबहारा , तजि कै बैर-बिरोध-बिचारा ॥
 मोहन प्रेम-प्रभाव सों , गोरन कहँ बस कीन ।

जाति-वरन-अन्तर तजै , गोरन अस व्रत लीन ॥१५॥
 कांग्रेस पुनि मोहन थिर कीनी , *द्रष्ट बनाय नींव दृढ़ कीनी ।
 सँगठन-बल निज अधिक बढ़ावा , उपज्यो निजभरोस कर भावा ।
 सुख सन भारतीय अब बसहीं , गोरे-नाग न तिन कहँ डसहीं ।
 दुरबल जीवन नरक-समाना , सबल तथैव सुरग-सम माना ॥

पुनि मोहन निज गृह प्रति हेरा , निजमनसिसु-सिच्छन प्रति प्रेरा ।
 अस बिचारि सिच्छा-गृह देखे , ईसा-सिख-संचालित लेखे ॥
 आपुन रहनसहन सिखरावैं , देय प्रलोभन सिसु फुसरावैं ।
 निजमतग्रन्थ पढ़ाय अनेका , करहिं सिथिल भारत-मत-टेका ॥
 सीख पराई ना दिहौं , मोहन निसचय कीन ।

सिच्छा देउं स्वगेह महँ , रखि बारक स्वाधीन ॥१६॥
 दर्पन-सम मानस सिसु केरा , गहत बिचार-बिम्ब बिनु देरा ।
 मातपिता-गुरुजन जस करहीं , बारक सहज-रूप अनुसरहीं ॥
 भाजन नवल चिह्न जिमि दीने , कबहुँ न टरहिं जतन सत कीने ।
 सिसु-हिय संस्कार तिमि जामा , होय सुथिर जीवन-परिनामा ॥
 तासों सावधान मतिमाना , साधन सोचहिं सुन्दर नाना ।
 जा बिधि बाल गहहि करि नेमा , भाखा-भाव-भेख-निज-प्रेमा ॥
 निज-बिचार-भाखा-परिधाना , इन सन प्रीत करहिं मतिमाना ।
 इन कर उन्नति सन निज देसा , उन्नतिपथ महँ करहि प्रवेसा ॥

सिच्छा-सरनि-सुधार सों , होय बाल व्रतसील ।
 ब्रह्मचारि संजमनिरत , बुधि-बिबेक-गुनसील ॥१७॥
 सिच्छासरनि होय सुखदाई , जासों सिसु अनुसासन पाई ।
 सभ्य-सुसील-धरमरत होवैं , पाय बिबेक कुमति सब खोवैं ॥
 मातपिता-गुरु सुर-सम जानै , करतब मुख्य धरम निज मानै ।
 जीवन सरल भाव अति ऊँचे , जानत नय कर तत्त्व समूचे ॥
 लोकरीति-निगमागम-ग्याना , पाय मनुज पावत सुख नाना ।
 आपुन मन-तन-चरित सुधारै , निज सुधार करि अवर उधारै ॥
 सिच्छा सोइ अमित गुनवारी , इह-परलोक मनुज-हितकारी ।
 सख रु साख क करि सुभ जोगू , तन-मन कर सब टारत रोगू ॥

सिच्छा सोई सराहिये , जा महँ होय प्रवीन ।

जगत देस अरु आपु हित , मनुज होय नित । लीन ॥१८॥
 करमसील साहसजुत जोऊ , सुख पावत जग महँ नर सोऊ ।
 जे पुनि कायर-अवर-अधीना , जीवन-अवधि रहहिं अति दीना ॥
 अस बिधि पाठ पढ़ावत जोई , सिच्छा गनहु लाभप्रद सोई ।
 करमवीर नर सतत बनावै , धरमतचव सिगरो समुभावै ॥
 सेवारत मानव कहँ करई , पर-उपकार-भाव मन भरई ।
 जा कहँ लहि संजमजुत धीरा , स्वारथ-रहित हरहिं परपीरा ॥
 सेवा कहँ उत्तम कृति जानै , पर-उपकार परम सुभ मानै ।
 सोच-संतोस-सत्य सन प्रेमा , प्रभु कर भगति अहिंसा-नेमा ॥

ब्रह्मचरज-स्वाध्याय - तप , अपरिग्रह - ऋजुभाव ।

अस सदगुन लहि मनुजवर , होय देव-अनुभाव ॥१९॥
 सिच्छा-सार मनुज कर सेवा , सेवा सन पावत सुखमेवा ।
 सेवानिरत भयो नित गांधी , पर-उपकार कमर तिन बाँधी ॥
 एक दिवस आयो इक रोगी , निजकृत-पाप-करम-फल-भोगी ।
 गलित सरीर कुस्टसन वा का , सोनित स्रवत पूति ब्रन पाका ॥
 बुद्ध-समान जीव-हितकारी , सिवि-नृप-सम प्रनतारविहारी ।
 मोहन अहहि दयाव्रतधारी , स्वारथरहित परम उपकारी ॥
 सेवा दिवस-निसा करि वा की , करि उपचार बिथा हरि वाकी ।
 सेवाफल ताकहँ प्रभु दीना , आरत-ताप सकल हरि लीना ॥
 मोहन कहँ आसीस सुभ , आरत-नर तब दीन ।

दीनदुखी - जन - तापहर , रहहु सदा सुखलीन ॥२०॥
 मोहन सोच कीन मन माहीं , असबिधिमनुज दुखितबहुआहीं ।
 सो अब करहुँ प्रबन्ध उदारा , जा बिधि पायँ उचित उपचारा ॥

औसधगृह तहँ एक बनायो , आरत-जन कहँ सुख पहुँचायो ।
 मोहन पुनि बिचार अस कीना , पर-उपकार-रहित धिग जीना ॥
 आरत-नर जग माहिं अनेका , सेवाकरम अहहि मम टेका ।
 तन-मन-धन सन सेवा कीने , मानव रहहि सदा सुख-भीने ॥
 सेवक होय सतत उपकारी , संजमसील धरमव्रतधारी ।
 अरुज देह अरु चरित उदारा , सेवा-करम पुन्यव्रत धारा ॥
 मित अहार-बिबहार-गिर , ईस - भजन - सतसंग ।

सेवकजन लच्छन अहै , सेवाकरम अभंग ॥२१॥
 अस तहँ बसत काल कछु बीता , सुखसमेत दुख-अनुभव-रीता ।
 मोहन जननायक-पद पावा , चरित उदार जगत-मनभावा ॥
 पुनि तहँ जुद्ध भयो अति घोरा , भिरे परस्पर ब्रिटिसरु बोरा ।
 समर-कुसल भट अति-बलधारी , जूझहिं कोपसहित ललकारी ॥
 भिरहिं परस्पर जनु मदमाते , जुग गजराज रोस-रँग-राते ।
 समरभूमि जिमि पावस-राती , तुपुक-तिमिर सन भीरु डराती ॥
 करहिं भुसुंडि भयंकर सोरा , पयदपटल जनु पविधुनि घोंरा ।
 भट-तनु सवहिं रुधिर-परनारे , बरसहिं जलद जथा जलधारे ॥

चमक रहे करवाल तहँ , जस चपला घन माहिं ।

गरजहिं तरजहिं बीरभट , जस स्वापद बन माहिं ॥२२॥
 सख-प्रहार परहिं तहँ कैसे , बरखा-उपल खेत महँ जैसे ।
 घायल सुभट गिरहिं छिति कैसे , असनिपात गिरिसेखर जैसे ॥
 कायर नर रन-खेत पराई , पथिक घनाहत गृह-प्रति धाई ।
 बीर महारथि थिर तहँ कैसे , भंभा चलत हिमाचल जैसे ॥
 रुण्ड रुमुण्ड गिरहिं चहुँ ओरा , बरखाहत जिमि चटक-चकोरा ।
 हिनहिन-नाद तुरग तहँ करहीं , भींगुर झिल्लि सोर जनु करहीं ॥

उत्सुक भट साजहिं रनसाजा , हियहुलास मुखमंडल राजा ।
मीचुबधू-परिनय हित जाई , लौहमुकुट-तनुत्रान सजाई ॥

बीरन कर उच्छव भयो , होरि खेलि रिपु संग ।

पिचकारी जनु तोष हैं , सोनित कर सुभ रंग ॥२३॥

सरल-चित्त-मानव-मन सोचू , अहहि समर कारज अति पोचू ।
करत हास धन-संपति केरा , जीवन-नास तथा बहु हेरा ॥
विधवा अरु अनाथ बहु होई , निज आधार जीवन कर खोई ।
अन्न-अभाव कस्ट बहु होवै , भूखो नर गौरव निज खोवै ॥
उन्नति सकल तुरत रुकि जाई , तजि इक सख-असख-अधिकाई ।
अखिल कला साहित अरु गाना , होयँ थगित बाधा लहि नाना ॥
कुमति भाव अति उन्नति पावै , उत्तमभाव सिमिट सब जावै ।
बैरविरोध करहिं चित डेरा , मानव सत्रु होय नर केरा ॥

जुद्धभूमि महँ भिरहिं नर , जस स्वापद बन माहिं ।

समरथली पसुता लसै , मानवता कहँ नाहि ॥२४॥

मोहन खबर पाय रन केरी , बन्धु बुलाय सकल बिनु देरी ।
परामरस पुनि तिन सन कीना , समरकाल करतब निज चीना ॥
निज निज सम्मति देहिं सुजाना , उचित उपाय बतावहिं नाना ।
तिन महँ अधिक कहहिं अस बाता , ब्रिटिस साथ जनि देवहु ताता ॥
ब्रिटिस अहहिं हम कहँ दुखदायक , सालहिं मरम निसित जनु सायक ।
गनहिं हमहिं आपुन कर दासा , इनते होय न कछु हित-आसा ॥
सो हम रहि तटस्थ रन देखै , सत्रु-गरव-मरदन सुभ लेखै ।
होय विवस हम पहुँ जब आवैं , निज सठकृति ऊपर पढ़तावैं ॥

हम तब करहिं सहायता , मानहिं जब उपकार ।

बचन देयँ पुनि बिजय लहि , देवहिं उचित सुधार ॥२५॥

गांधि कखो तिन कहँ समुझाई , हम कहँ उचित नहिंन अस भाई ।
 उपकारी सन करत भलाई , कहहु पुन्य किमि मानव पाई ॥
 विनिमय ताहि गनहिं मतिमाना , पर-उपकार कोटि नहिं आना ।
 दुरजन सन हित जे नर करहीं , मनुजमौलि तिन कहँ बुध धरहीं ॥
 पर-उपकार गनहु तुम नीका , जासों मनुज होय जग-टीका ।
 सठ सन साख्य करहु अस नीती , धरम-बिरुद्ध न आरज-रीती ॥
 बल सन जोउ सत्रु बस आवै , अवसर लहि पुनि मारन धावै ।
 अरि पुनि प्रेम संग बस कीना , होय निरन्तर बैर-बिहीना ॥

प्रेम-भाव सन करहु बस , निज अराति तुम मीत ।

मधुरबीन धुनि उरग जस , मांदरि करहि सप्रीत ॥२६॥
 पुनि बिस-दसन काढ़ि तिस केरे , ताहि नचावत प्रति गृह फेरे ।
 बिसम-काल करि हित इन केरा , करहु अधीन इनहिं मत मेरा ॥
 उपकृति-भार-बिबस नर भाई , तजत अवसि निज सहज बुराई ।
 तिमि अंगरेज दुखित अब भारे , सुमिरि सुमिरि उपकार हमारे ॥
 आयतिकाल नहिन दुख देहीं , मम अधिकार नहिन हरि लेहीं ।
 मोहन बचन मधुर अति प्यारे , सब कहँ रुचहिं परम हितवारे ॥
 भाखहिं गांधि बचन तुव मानो , करिहैं तन-मन-धन-कुरबानी ।
 बह्ममटेर-चमू तब साजी , मोहन हाथ रही जस-बाजी ॥

सेनापति पहुँ जाय तब , मोहन दियो सँदेस ।

घायल सेवाहित सजें , मम जन मिलै निदेस ॥२७॥
 सेनापति हरखित कह वा सों , करहु करम निज अवहित जासों ।
 जीवन-हानि निपट नहिं होवै , घायलजन-सेवा सुभ होवै ॥
 अति साहस सन जावहिं धीरा , समरथली जहँ जूझहिं बीरा ।
 घायल-जन सिबिका महँ डारी , नयहिं तुरन्त सरन सुखकारी ॥

बरसहिं सीसगुलिक चहुँ ओरा , मनहु गगन सौं कुलिस कठोरा ।
 पै नहिं धीरबीर भय मानैं , करतबनिष्ठ तुच्छ जम जानैं ॥
 स्वारथहीन चरित लखि वा का , सेनापति बरनत जस थाका ।
 धन्य धन्य भारत कर बीरा , परहित कस्ट सहहु तुम धीरा ॥
 निरखि तुमारी वीरता , मम हिय हरख अपार ।

करहुँ जाय महिपाल सों , तुव महिमा-विसतार ॥२८॥
 संकट तब समान निज जानी , सदय भये गोरे अभिमानी ।
 भाखहि भारतीय तुम भाई , मम-तुव भूप एक सुखदाई ॥
 आवहु तजि सब बैर-विरोधा , करैं परस्पर भायप-वोधा ।
 ईस-प्रसाद ब्रिटिस जय पाई , बाजी देस समस्त बधाई ॥
 माननीय कलु गौर उदारा , तिन मोहन-स्तुति-वाक उचारा ।
 तब मोहन सोच्यो मन माहीं , आफ्रिक काम मोर अब नाहीं ॥
 अब निज देस जाय कलु करिहों , सेवा करि वा के दुख हरिहों ।
 ग्यान - अभाव - रोग - दुसकाला , इन सन परचो देस कहँ पाला ॥

देस-हानिकर दोस सब , अहहिं सतत दुख-खान ।

बाँधि कमर इन सन लरौं , होय न जस हित-हान ॥२९॥
 भारतीय तब मिलि मत कीना , चाहिय कलुक मोहन कहँ दीना ।
 इन उपकार कियो अति भारी , सांत कीन दुखदरिददवारी ॥
 जे जन कृत उपकार न मानैं , निज हित पाप-गरत ते खानैं ।
 वेद सकल अध-सोध बतावा , पै न कृतघ्न-सुधार उपावा ॥
 अस विचारि करि उच्छव भारा , प्रस्तुत कीन विविध उपहारा ।
 विनय समेत कहहिं सुनु गांधी , तुम सन आस-रसरि हम बांधी ॥
 कबहुँ न भूलि सकैं उपकारा , जब लागि गंगजमुनजलधारा ।
 गहहु नाथ लघु भेंट हमारी , होय कृपा हम पै अति भारी ॥

मोहन मृदु मुसकान सन , कद्यो रखहु उपहार ।

सेवक कहँ सेवा करत , सेवा मृदु सुखसार ॥३०॥
 तासों धन्यवाद करि ताता , तुव उपहार तुमहि पलटाता ।
 कांग्रस कहँ देवहु सब दाना , जासों होय परम कलयाणा ॥
 सेवक कहँ सेवा-फल-दाना , गरलसमान हानिकर जाना ।
 तब तिन विनय कियो कर जोरी , दमहु नाथ हमरी सब खोरी ॥
 लखि तुव त्याग चकित जग सारा , अब इक लघु अनुरोध हमारा ।
 रतनहार हीरकजुन सुन्दर , सोहै रुचिर मातु-गल अन्दर ॥
 सो तुम ग्रहन करहु अब मोहन , होय कृपा अति-सै मनमोहन ।
 सेवक वचन स्वामि परमानै , सो अति मोद चित्त महँ मानै ॥

मोहन-चित्त विचार तब , उपज्यो सहज सुभाय ।

कसतूरी कहँ परखिहों , भेंट देय ललचाय ॥३१॥
 पतनी कहँ बुलाय कह मोहन , बानी मधुर प्रेमरस-दोहन ।
 प्रेयसि भेंट विविध इन आनी , मम पग आय धरी मनमानी ॥
 कछु उपकार कियो इन केरा , देवहिं अब इनाम तिस केरा ।
 सेवा-प्रतिफल बिस-सम जानों , भेंट ग्रहन अनुचित अस मानों ॥
 सो हों करि निसेध इन केरा , कांग्रस कहँ देवहु अस प्रेरा ।
 अब अनुरोध करहिं सब आई , देवहु भेंट प्रिया कहँ भाई ॥
 सो तुम मनइच्छित धन लेहू , संका कहँ जनि मन-पद देहू ।
 गांधिप्रिया बोली मृदुबानी , विनय-सनेह-मधुर-रस-सानी ॥

ग्रहन करन चाहौं नहीं , इन कर कछु उपहार ।

चरनचिह्न चलि नाथ तुव , गनहुँ त्याग सुखसार ॥३२॥
 पै मम हृदय नाथ अस इच्छा , तासों माँगहुँ अब इक भिच्छा ।
 कन्या इक सुसील अलबेली , ल्यावहि मम सुत ब्याहि नबेली ॥

तब ता कहँ कलु मंडन देऊँ , निज हिय अमित सुरगसुख लेऊँ ।
 सो इक रतनहार हौं लेऊँ , सेस भेंट वापस करि देऊँ ॥
 करहु प्रमान मोर मत स्वामी , सुचि-मम-मानस - अन्तरजामी ।
 सुनि तिय-वचन गांधि समुभावा , सेवाधरम - मरम जतरावा ॥
 कसतूरि अस सेवक भावा , सेवा-प्रतिफल चहत न पावा ।
 कारज तासु करत प्रभु पूरे , सरनागत-सुखदायक रूरे ॥

निज-भगतन चिन्ता हरै , कृपासिंधु जगदीस ।

मनबांछित पूरन करै , विनु मांगै खलु ईस ॥३३॥
 मृतविवाह-उच्छव सुभ-काला , लेवहिं तुव सुधि दीनदयाला ।
 तुम कत सोच करहु प्रिय वाकी , सुधि लैहैं ईस्वर तब ताकी ॥
 कांग्रस-सन्निव धोला तुनि भाखा , कोस सुखिर चहियत धन राखा ।
 पर-उपकार काज करि वासों , पावहु लाभ देस हित जासों ॥
 जाया मानि वचन पति केरा , रतन-ढेर इक आँख न हेरा ।
 पतिव्रत धरम-मरम बस एहा , पति-अधीन मानसधन-देहा ॥
 पति निज धरम-करम-जस-दाता , इह-परलोक सकलसुखदाता ।
 जाया सीस-मुकुटमनि सोहै , प्रेम-पुनोत तासु मन मोहै ॥

प्रमदा सो बड़भागिनी , जा पै दयित दयाल ।

सेवा करि आदर लहै , सुख सन होय निहाल ॥३४॥
 ख्रिस्ट अबद उन्निपसत एका , गयो सुदेस पूरन करि टेका ।
 राजकोट जाया-सुत बाँड़े , निज विचार सेवा महँ गाड़े ॥
 लोकसभा-उच्छव सुनि काना , मानस तासु न मोद समाना ।
 नेता सकल देस कर जोऊ , अबसि पधारहिं उच्छव सोऊ ॥
 तिन कर दरसलाभ हित मोरा , होवहि अबसि नहिन कलु थोरा ।
 देस-दसा सोधन-हित सारे , रहहिं सदा चिंतित अति भारे ॥

ता के चरन-चिह्न पगु धारी , सेवा करहुँ सक्ति-अनुसारी ।
उत्तम-जन जनु थंभ-प्रकासा , पन्थहीन लखि पावहिं आसा ॥

दिनसा बाढ़ा अहहिं तहँ , उच्छव कर अध्यच्छ ।

महतादिक नेता जुरे , नीतिरूप परतच्छ ॥३५॥

गोखल नाम तहाँ इक नेता , सासनतन्त्र - ग्यान - समवेता ।
आरज-धरम-मरम कर ग्याता , दीन-दुखी-जन-आरति-त्राता ॥
राजसभा तिन आदर पावा , धरत देस-सेवा-हित चावा ।
ता कहँ दीन-दसा सब भाखी , कह्यो आफ्रिक-हित लेवहु राखी ॥
सठ अंगरेज सतावहिं घोरा , निरखि कलेस द्रवत हिय मोरा ।
पाय सहाय सबल अब तोरा , पूरन होय मनोरथ मोरा ॥
भूपति सन भाखहु अस जाई , प्रजा विकल किमि नृप सुख पाई ।
सो कछु करहु उचित उपचारा , जा बिधि टरइ प्रजा-दुख सारा ॥

लोक सभा महँ गोखले , अस कीनो प्रसताव ।

आफ्रिक दुख टारन करौ , लखौ आव नहिं ताव ॥३६॥

बचन तासु सिर-आँखन लोना , प्रस्तुत बात समरथन कीना ।
बोले बन्धु आफ्रिक महँ जोऊ , तिन कहँ होय कलेस न कोऊ ॥
तुम पुनि जाव तहाँ अब मोहन , चिन्ता हरहु तासु मनमोहन ।
करिहैं हम धन-संग्रह भारा , जासों तिन कहँ मिलहि सहारा ॥
गोखल तार नृपति कहँ दीना , आफ्रिकजन-दुख-बरनन कीना ।
एडवरड भूपति सुभ नामा , जनरंजन सुभगुन-गन-धामा ॥
चैम्बरलेन सचिव निज प्रेरा , आफ्रिक जाव मीत बिनु देरा ।
भारतजन - अंगरेज - बिबादू , मो हिय करत अपार विसादू ॥

अति कलेस अनुभवत हौं , सुनि निज परजा-भेद ।

अस बिधि कारज करहु तुम , मिटै जथा मम खेद ॥३७॥

नृप-निदेस लहि सचिव सयाना , आफ्रिक प्रति द्रुत कीन पयाना ।
 भारतीय सुनि ता कर आवन , पठ्यो सँदेस मोहन मनभावन ॥
 आवहु तुरत काज सब त्यागी , जनहित-काज-परम - अनुरागी ।
 मोहन सुनि पुकार तिन केरी , आफ्रिक-गमन कियो विनु देरी ॥
 पर-उपकार निरत जे सज्जन , स्वारथ-सलिल करहिं नहिं मज्जन ।
 पर-उपकार धरम निज जानी , सेवारत नित होयँ अमानी ॥
 चैम्बरलेन निकट पुनि जाई , भारतीयदुखगाथ सुनाई ।
 तिन तब गोरन कहँ समुभावा , भारतजन सन बैर न भावा ॥

सोदर सम सहवासि कहँ , जानि सदा तुम मीत ।

रहौ परस्पर प्रेम सों , सुजनन कर अस रीत ॥३८॥

भारतीय सन पुनि तिन भाखा , तुव हित सतत हिये नृप राखा ।
 कहहु न कछु मन माहिं गलानी , गोरन कहँ आपुन रिपु जानी ॥
 जन-रज्जन एडवरड उदारा , हितचिन्तक जनता कर भारा ।
 वा के राज माहिं दुख कोई , निबल मनुज कहँ कबहुँ न होई ॥
 ब्रिटिश-राज-सासित परिवारा , ता के उभय अंग-समसारा ।
 सो करि मेल परस्पर दोऊ , राजसमृद्धिसहायक होऊ ॥
 चैम्बरलेनबचन सुखकारी , भारत-जन-हियबेदन टारी ।
 घायलजन घृतसेचन पावै , घावजनित पीरा बिसरावै ॥

बिसरि गये दुख-दरद सब , दीन भारती लोग ।

दुख भूलै जिमि रंकजन , पाय विपुल धन-जोग ॥३९॥

साजन बिनहि प्रयास , गांधिचरित सों सीखिहैं ।

अटल ईसबिसवास , छिमा-दया-सेवादि गुन ॥४०॥

चतुर्थ सोपान

सत्याग्रह संतत सुखदाई , हरन करत द्रुत सकल बुराई ।
 सत्याग्रह कर धरम - अधारा , देय मनुज महँ सक्ति अपारा ॥
 सत्याग्रह सुभ वृजिन-अराती , सत्यधरम कर ध्रुव पखपाती ।
 सत्याग्रह आतभवल-दाता , बिसम-काल मानव-परित्राता ॥
 सत्याग्रह आयुध अति भारी , पातक-रिपु द्रुत देत पञ्चारी ।
 सत्याग्रह निरबलबलकारी , तसु सकल दुख-दारिदहारी ॥
 सत्याग्रह जिमि जीवन-मूरी , नव बल देत मनुज कहँ भूरी ।
 सत्याग्रह जिमि सुरसरिधारा , नासत बिन महँ दुरित अपारा ॥

सत्याग्रह सुभ धरम अस , करहु सत्रु सन नेह ।

तिस के टारहु दोस सब , करि कै सत्य-सनेह ॥१॥

समय पाय गांधीपरिवारा , सोभित भयउ पाय सुत चारा ।
 धरम-अरथ-अपवरग रु कामा , बिलसत सतनु मनहु तिसु धामा ॥
 हीरालाल प्रथम सुत जोऊ , हीरक इव उज्जल दुति सोऊ ।
 अवर सनु मनिलाल सुनामा , बाल-सिरोमनि गुनगनधामा ॥
 तीजा तनय राम कर दासा , मोचहि मात-पिता-दुखपासा ।
 सुत चतुर्थ देवी कर दासा , मातपिता कर मूरत आसा ॥
 मानहु बेद चारि वपु धारे , गांधी-गेह समुद पगु धारे ।
 जननी - जनक - नेह - सुभवारी , पनपे पाय बिटप-सम चारी ॥

गांधि-सदन जनु सुरग-सम , विगत - क्लेश - लवलेस ।

करहि कृपा करुनायतन , काटहि सकल क्लेश ॥२॥

*अरथलाभ अरु अरुज सुखारी , बानी मृदु बसवरतिनि नारी ।
 सुत अधीन विद्या गुनकारी , जीवन-सुख बरनत मतिधारी ॥
 आतमवल ईस्वर-विसवासा , आपत-काल माहिं सुभ आसा ।
 पर-उपकार सत्य सन प्रेमा , संजम-अभय-अहिंसा - नेमा ॥
 धीरज - सत्य - अलोभ - अमाया , सौच-विवेक-द्विमा अरु दाया ।
 गुन तिन सकल जनक सों पाये , चारुचरित अति बाल सुहाये ॥
 मोहन सीख तिनहिं अस दीनी , गहहु धरम-सरनी सुख-भीनी ।
 आतमवल जीवहु जग माहीं , पर-अधीन सपने सुख नाहीं ॥

सकल सिरोमनि गुन अहै , तात आत्म-सम्मान ।

जा के दुखद अभाव महँ , मानव मृतक - समान ॥३॥

निजकर करहु निखिल निजकामा , निज-अवलंब अहहि सुखधामा ।
 आपुन आय अल्प सुखदायी , चाकरि बहुवेतन दुखदायी ॥
 बसन सुदेसि सरल सुभ धारौ , सकल प्रदरसन तुम तजि डारौ ।
 संजमजुत नित करहु विहारा , राखौ सरल उदार विचारा ॥
 बैर-विरोध गरलसम जानौ , प्रेमभावहित घातक मानौ ॥
 मानव सकल अहहिं जस भ्राता , गुरु-तृष्ण-भेद गनहु दुखदाता ॥
 जनक हमार अहै जगदीसा , ता के पूत सुजन अरु खीसा ।
 रहहु परसपर सहित सनेहा , निगमागमसिच्छातत एहा ॥

भव-दुख-तारन-नाव-सम , जगपति महँ विसवास ।

सकल - ताप - बाधाहरन , टारन जम-कृत त्रास ॥४॥

* अर्थागमो नित्यमरोगिता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च ।

वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या, षड् जीवलोकस्य सुखानि राजन् ॥

(विदुर नीति)

अटल एक ईस्वर-बिसवासा , पूरत सकल मनुज कर आसा ।
 दैव-बिबस मनिलाल बिचारा , आरत भयो बिसम जुर द्वारा ॥
 वैद अनेक करहिं उपचारा , पै जुर कठिन टरत नहिं टारा ।
 वैद बिचच्छन इक तहँ आवा , रोगहरन-हित अमित उपावा ॥
 कीने लाभ करहि नहिं कोई , मरुथल वृष्टि बिफल जस होई ।
 मोहन कहँ तब तिन समुभावा , मोर निकट बस एक उपावा ॥
 मुर्गा-मांस-जूस अब देऊ , रुजपरिहार सकल करि लेऊ ।
 मोहन तुरत बाहि निरवारा , करत पतित नर पिसित-अहारा ॥

जीव-दया पावन परम , पसुमारन अतिपाप ।

मूक जीव जे मारहीं , सहहिं नरक-द्व-ताप ॥५॥

निगमागम - इतिहास - पुराना , पिसित-अहार अधम करि जाना ।
 भूत-दया सुभ धरम बखाना , पसुमारन पातक अस माना ॥
 भूत-दया जस सुरगनिसैनी , जीव-हनन किरिया दुख-दैनी ।
 आपुन प्राण जथा मम प्यारे , तिमि निज प्राण चहहिं जिय सारे ॥
 रसना-रस लागि जीवन मारैं , निजकृत पुत्र भसम करि डारैं ।
 गो-गज-बाजि-अन्न - धन - दाना , जग महँ दान अहहिं बिधिनाना ॥
 जीवन अभयदान सम कोई , अबर दान उत्तम नहिं होई ।
 नर-तनु जानि छनिक तुम आता , कहहु करहु कत प्राणिन घाता ॥

सागपात कहँ खाय कै , तृपत होय नर-देह ।

मूक पसुन कहँ मारि कै , कत खावहिं नर खेह ॥६॥

भौतिक तनु द्रुत नासनहारा , धरम कलप लागि चालनहारा ।
 अमर धरम मतिमान बिहाई , छनिक देह पाछे कत धाई ॥
 सो तुम जाव तोर धनबादा , हौं नहिं तजहुँ धरम-मरजादा ।
 अब गहि सरन सुखद प्रभु केरी , जल-उपचार करहुँ बिनु देरी ॥

विधि-अनुसार किये उपवासा , रोगहरन कर होवहि आसा ।
 बैद-वचन सिगरे तब गांधी , निज सुत करन कहे हिय-बाँधी ॥
 बारक बीर तुरत कह ताता , जल-उपचार करहु मन-भाता ।
 अन्न-अभाव छुधित मरि जाऊँ , पै नहिं आमिस-भोजन खाऊँ ॥

साहसजुत सुनि सुतबचन , गांधी मन अति मोद ।

पावस ज्यों केकी सुखी , उनयो देखि पयोद ॥७॥
 ईस्वर-सरन गही तब गांधी , जल-उपचार करन मति बाँधी ।
 जुग-कर जोरि विनय तिन कीनी , उचरी बाक भगति-रस-भीनी ॥
 अहहु ईस सरनागतपाला , करहु कृपा अब दीनदयाला ।
 नैया भँवर परी अब मोरी , निकसै कत विनु किरपा तोरी ॥
 जनकसुता कर करुन पुकारा , सुनि रघुनाथ लंकपति मारा ।
 द्रुपदसुता कर संकटभारा , माधवरूप तुरत प्रभु टारा ॥
 लखि प्रह्लाद दहत दुखदावा , नाथ कृपा करि कस्ट मिटावा ।
 नरनाहर-तनु तब तुम धारा , हिरनकसिपु छिन माँझ पझारा ॥

नाथ परी मंभधार महँ , करुनाकर भगवान ।

करुना-चप्पु लगाय कै , करहु सकल दुखहान ॥८॥
 दीनदुखीजन करत पुकारा , द्रवत ताहि सुनि जगतअधारा ।
 भगतसहाय तुरत भगवाना , ता हित चरित करत विधिनाना ॥
 अमियसमान सरन गहि वाकी , विपद-गरल-मुरझा थिर काकी ।
 सुनि करतारि उड़हिं खग सारे , राम सुमिरि तिमि पातक भारे ॥
 रामनाम जस भानु-प्रकासा , मोह-तिमिर कर सत्वर नासा ।
 रामनाम जस कठिन कुठारा , मोहविपिन छिन माहिं उपारा ॥
 रामनाम जलजान-समाना , बिसय-जलधि-दुख टारत नाना ।
 रामनाम अमृतफल जानौ , बिसय-व्याधि कर भेसज मानौ ॥

जल-भेसज मोहन कियो , सुमिरि राम कर नाम ।

ईस-कृपा ते तनयजुर , घटन लग्यो प्रति जाम ॥९॥

नाम-प्रभाव बिसम गद भारा , भानु-उदय हिमकन इव टारा ।

नाम-प्रभाव चकित नरनारी , ईस-कृपा दुखटारन हारी ॥

नाम-प्रभाव मन्त्रसम जानौ , रोस-उरग कर भेसज मानौ ।

नाम-प्रभाव अंकुस इव छोटो , मदमातंग करत बस खोटो ॥

नाम-प्रभाव प्रभाकर - रेखा , मोह-तिमिर-सिर गाड़त मेखा ।

नाम-प्रभाव सँजीवनमूरी , करत काम-मुरछा कहँ दूरी ॥

नाम-प्रभाव कुलिसकर सूची , काटत लोभ-बिलौर समूची ।

नाम-प्रभाव लघु-सायक जानौ , अहमिति कवच-भेद-पटु मानौ ॥

ईस-कृपा-वर पाय कै , मानव होय निहाल ।

आधिव्याधिदुखनसतअस , गरुड़ पेखि जिमि ब्याल ॥१०॥

तजि अभिमान गहे हरि-टेका , कस्ट कलेस रहत नहिं एका ।

अस मोहन चरितारथ कीना , हरि निज-जन-उपकार-प्रवीना ॥

दिव्यचरित लखि मोहन केरा , सुजनसमूह प्रनय सन प्रेरा ।

देवत साधुवाद तहँ आई , हिय अघात नहिं महिमा गाई ॥

कहत चरित तुमरो लखि गांधी , कलिजुग धरम-आस हम बांधी ।

वृत्त उदार भाव अति रूरे , सन्तसमान तोर गुन पूरे ॥

अस उपाय कछु करहु पुनीता , लोक-सुधार होय जस मीता ।

पोलक नाम तहाँ इक साजन , चारु-चरित्र सकल-गुन-भाजन ॥

मोहन सों बिनती करी , जोरि जुगल तिन हाथ ।

आस्रम सीध बनाय कै , साधक करहु सनाथ ॥११॥

जहँबसि लहहिंलोक सुभ सिच्छा , मानसहित जीवन कर इच्छा ।

पर-उपकृति-हित त्याग सुहेला , जीवन दान उचित लखि बेला ॥

लोक-सुधार धरम निज जानी , सेवा करहिं रैन-दिन ग्यानी ।
 निजकर करहिं सकल निज काजू , तजि कै भोग-विलास-समाजू ॥
 सम-दम-त्याग-द्विमा अरु दाया , पर-उपकारभाव गतमाया ।
 साँच-प्रेम - साहस - बल - ग्याना , सबगुन लहि पुनि रहहिं अमाना ॥
 मोहन बिनय-मधुर सुनि बानी , आस्रम सीध रचन की ठानी ।
 संत उदारचरित सुखदाई , पर-उपकार करत द्रुत धाई ॥
 मोहन तब थापित कियो , इक आस्रम सुभ थान ।

नाम फिनिक् ता कहूँ दियो , अरथ-समेत महान ॥१२॥
 *फीनिक् नाम बिहंगम-राजा , भोगत सकल लोक-सुखसाजा ।
 चतुरपंचसतहायन लागी , पुनि निज देह दहत प्रबलागी ॥
 भसम होय नवजीवन पाई , जुग जुग लहत भोग-समुदाई ।
 आस्रम तिमि मोहन कर थापा , रखहि कुसल ननु आपुन आपा ॥
 बिपद-अनल परि लहि नव प्राना , चरित उदार करहि जग नाना ।
 भारतीय आता अरु गोरे , भये प्रविष्ट तहाँ नहिं थोरे ॥
 मोहन प्रमुख भयो तिन केरा , पर-उपकार-भाव सन प्रेरा ।
 सेवा-व्रत-दीक्षा तिन दीनी , सिच्छा-सरनि सुघर घरि लीनी ॥
 † रूस देस कर सिद्धजन , टाल्स्टाय मतिमान ।

सरल-सुखी-जीवन-विधी , ग्रन्थन कीन बखान ॥१३॥

* Phoenix—एक काल्पनिक पक्षी जिसकी आयु ४-५ सौ वर्ष मानी जाती है । यह अग्नि-प्रवेश कर के नवजीवन प्राप्त करता है ।

† टाल्स्टाय—रूस के प्रसिद्ध सरल जीवन के पक्षपाती महामना साहित्यकार । इनका प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त विलासिता-पूर्ण था. परन्तु एक क्रान्तिकारी परिवर्तन के परिणाम स्वरूप इनका जीवन-क्रम सर्वथा पलट गया । प्रसिद्ध पुस्तकें—युद्ध और शान्ति, मेरी मुक्ति की कहानी, जीवन-साधना, सामाजिक कुरीतियाँ आदि ।

*रस्किन इक अंगरेज उंदारा , जीवन-दधि जिन सब मथि डारा ।
 †सरब-उदय नवनीत - समाना , काढ़ि कियो उपकार महाना ॥
 जीवन-सार सकल भरि दीना , जग-हित-काज अनूपम कीना ।
 लघु पुस्तक जनता हितकारी , अगद-समान अमित गुनवारी ॥
 कारज करहु मीत तुम सोई , जा सों हित समाज कर होई ।
 सम बकील अरु नापित केरा , धंधा रुचिर सुमतिजन हेरा ॥
 नहिं त्रिवसाय गनहु कोउ गंदा , करम बनावहिं ऊँच रु मन्दा ।
 जीवन सुखद सरल गतमाया , कृसक-जनन कर अति मनभाया ॥

सरब-उदय सों त्रिविध अस , सीख अनूपम पाय ।

आसम-हित नियमावली , मोहन रची सुभाय ॥१४॥

गीता बैबल अवरु कुराना , तिन सन रतन ग्रहन करि नाना ।
 कंठहार इक रुचिर बनायो , निज छात्रन गर महँ पहिरायो ॥
 तिन कहँ स्रम-महिमा समुभाई , स्रम करि मनुज परम सुख पाई ।
 संजम-जुत जीवन कर नीका , होय सकत मानव जगटीका ॥
 कपट-रहित कारज निज कीजै , अछल-चित्त हरि तुरत पसीजै ।
 ईस-दया महँ अटल भरोसा , भरत सकल नर-आसा-कोसा ॥
 सम-संतोस धरहु मनमाहीं , तिन सम आन बिभव जग नाहीं ।
 कोप-अनल दाहक अति भारी , मन-कानन कहँ देत पजारी ॥

* जान रस्किन—इङ्गलैण्ड के १९वीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध लेखक । इन्होंने साहित्य, कला तथा अर्थशास्त्र-संबंधी कई पुस्तकें लिखीं । म० गांधी इनकी 'Unto The Last' नामक पुस्तक से बहुत प्रभावित हुए ।

† सरबउदय—महात्मा गांधी द्वारा प्रचलित 'सर्वोदय' नामक जन सुधार का कार्यक्रम, जिसका बीजमन्त्र उन्हें रस्किन की इस पुस्तक से मिला था ।

द्विमा-दया-सुचिता - धृती , साँच - प्रेम - विसवास ।

या गुनमाल-प्रभाव सों , जीवन लहत विकास ॥१५॥

रहहिं परस्पर सब सह-प्रेमा , करहिं समुद निसदिन नितनेमा ।

आस्रम-नियम निभावहिं कैसे , करतब-वद्ध सुभटजन जैसे ॥

पोलक-रीच-वेस्ट मतिमाना , मोहन कहँ नेता निज माना ।

सुभ उपदेस ग्रहन करि वा का , गनहिं अपार अनुग्रह वा का ॥

*जीवन सरल भाव अति ऊँचे , गुन तनु धरि जिमि आय समूचे ।

सत्य - प्रेम - करुनावरदाना , पावहिं जीव बिघन तजि नाना ॥

ओजपुंज आस्रम कर बासी , पावहिं अमित सांति-धन-रासी ।

अभयदान पावहिं सब जीवा , पियत प्रेम रस होवहिं खीवा ॥

आस्रमपद पावन परम , सांति-सदनसुख-धाम ।

प्राकृत सोभा पाय कै , बिलसै ललित-जलाम ॥१६॥

भारतमत नामक अखबारा , काढ़ि प्रचार कीन तिस द्वारा ।

मेलमिलाप-भाव दृढ़ कीना , निज आदरस प्रसारित कीना ॥

भूप-प्रजा मधि दूत समाना , पत्र सँवारत कारज नाना ।

राज-निदेस प्रजा पहुँ ल्यावै , प्रजा-कलेस नृपहिं समुभावै ॥

हेम-जँजीर प्रेम कर बाँधी , मेले उभय चित्त अस गांधी ।

प्रजापाल भूपति कर नामा , राजभगति परजा कर कामा ॥

नाम जथारथ जा बिधि होवै , कस्ट-कलेस तुरत सब खोवै ।

मिलहिं परस्पर प्रेम-समेता , भेददनुज-मारन धरि चेता ॥

अस बिधि तहँ गांधी कियो , प्रेम - पियूस - प्रसार ।

बैर-गरल-मुरझित प्रजा - भूप भये सुखसार ॥१७॥

सेवा-धरम-निरत पुनि गांधी , जीवन सरल करन मति बाँधी ।
 जनसेवक कर जीवन रूरा , स्रम-तप-त्याग आदि भरपूरा ॥
 भोग-विलास नाम नहीं लेवै , विसयनिरोध माहिं चित देवै ।
 तन-मन-वचन करम करि नीका , सरल-सुभाव बनहि जग टीका ॥
 लोभबिहीन मानमदहीना , पर-उपकार धरम महँ लीना ।
 सुन्दर सुभग बसन नित धारै , सुभ विचार निज चित्त सुधारै ॥
 दैनिक स्रम जानत निज धरमा , सेवा गनहि परम सुभ करमा ।
 धरमदेस-हित जीवन धारै , समय परे तन-मन-धन वारै ॥

ब्रह्मचरज व्रत जानहू , तासु प्राण - आधार ।

ब्रह्मचरज सों लहत है , वीरज-बल सुखसार ॥१८॥

ब्रह्मचरज गुनकंचन-खाना , ब्रह्मचरज बलबुद्धि-निधाना ।
 ब्रह्मचरज सुख-संपत-दाता , मनतन-आधिब्याधि-भयत्राता ॥
 ब्रह्मचरज मनमथ-रिपु-नासी , ब्रह्मचरज प्रतिभा-परकासी ।
 ब्रह्मचरज आतमबल - दाता , ब्रह्मचरज सुभकरम-विधाता ॥
 ब्रह्मचरज जनु सक्रसमाना , हनत बृजिन-दानव बलवाना ।
 ब्रह्मचरज मृत्युञ्जय जानौ , संभुसमान मार-रिपु मानौ ॥
 ब्रह्मचरज जस राम खरारी , देवत पाप-असुर कहँ मारी ।
 ब्रह्मचरज महँ सब गुन कैसे , बसहिं सकल पद गजपद जैसे ॥

धरम-सुजस-नीरोग कर , दाता परम उदार ।

ब्रह्मचरज चिर आयुप्रद , सब अभिमतदातार ॥१९॥

ब्रह्मचरज-बल सासन चालै , तासु अधार प्रजा नृप पालै ।
 ब्रह्मचरज-बल लहि कुल-ईसा , ब्रह्मचारि कहँ देत असीसा ॥
 ब्रह्मचरज कन्या पति पावै , सुभ-संतति-सुख पाय अघावै ।
 ब्रह्मचरज-बल नर मतिमाना , करहिं चरित अबदात महाना ॥

ब्रह्मचरज-बल दुजवर ग्यानी , पढ़हिं मरमजुत आगमवानी ।
 ब्रह्मचरज-बल मुनि तपरासी , टारहिं सकल पाप-तम-रासी ॥
 ब्रह्मचरज-बल पाय पुनीता , देवन दुरजय कालहु जीता ।
 ब्रह्मचरज-वैभव गुनकारी , उभय लोक महँ स्त्रेयस-कारी ॥

नाथ बैठि जिमि जलधि-जल , सहज करहिं नर पार ।

ब्रह्मचरज भव-उदधि सों , पार उतारनहार ॥२०॥
 ब्रह्मचरज-निसचय करि गांधी , बिसय-विकार-त्याग मति बांधी ।
 गृहजीवन बंधन इव माना , गजपदबंध - अलान - समाना ॥
 संतति-सुख बंधन अति भारी , पर-उपकार-भाव - द्यति - कारी ।
 मोहबिबस बपुरे गृहवासी , फिरहिं उदरहित दसन निकासी ॥
 स्वान जथा जा सन कछु पावै , ता कहँ द्यति परि उदर दिखावै ।
 निज गौरव कुल-मान बिहाई , रगरहिं नाक जहाँ तहँ जाई ॥
 धरम-करम तजि स्वारथ लागी , निज-हितविधि देयँ जनु आगी ।
 पर-उपकार-निरत नर जोऊ , गृहजीवन-दुख-आकुल सोऊ ॥

पतनी कहँ तब बोलि कै , गांधि कछो समुभाय ।

तब अनुमोदन पाय कै , धरम चरहुँ चित लाय ॥२१॥
 पर-उपकार धरम निज मानों , ता हित त्याग उचित अब जानों ।
 * सुजन गनहिं जग निज-परिवारा , दुरजन निज-कुटुंब जग सारा ॥
 स्वारथ-त्याग बिना नर कोई , पर-उपकार-जोग नहिं होई ।
 तासों गृहबंधन तजि सारा , मानहुँ सकल बिस्व परिवारा ॥
 इन्द्रियदमन समन मन केरा , बांझित अहहि बिमल व्रत मेरा ।
 तो कहँ अब जाया नहिं जानों , हितकर परम सखा सम मानों ॥

* अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ (पञ्चतन्त्र)

अम्ब-समान सदा सुखकारी , सचिव-तुल्य मतिदेवनहारी ।
नहिं कलत्र-सम तो कहूँ देखौं , ललना-रूप भवानी पेखौं ॥

निज पति कर सुनि बचन अस , नारि उठी अकुलाय ।

पतिव्रत धरम विचारि पुनि , निज मानस समुझाय ॥२२॥

गांधिप्रिया बोली मृदुबानी , प्रेम पुनीत मधुर रस-सानी ।
बांझहु नाथ तजन गृह-धरमा , रखि उद्वाह सेवाहित-करमा ॥
सो तुम करहु उचित जस जानौ , निज-स्नेयस-मारग पहिचानौ ।
†पै निज चित्त करहु अस चेता , नारी-मनुज जुगल-अभिनेता ॥
विश्व-मश्व-ऊपर पगु धारी , होवहिं गृह-जीवन-सहकारी ।
प्रेम परस्पर करहिं न थोरा , होवत मन ननु प्रेम-विभोरा ॥
सिसु कर जनम सिच्छा अरु पालन , करहिं सुविधि मरजादा-पालन ।
जाया मनुज-अरध स्र ति भाखी , ता सों धरम दृष्टि-पथ राखी ॥

नाथ करहु अस काज अब , होय न जस हित-हान ।

कुसल रहै परिवार अरु , होवहि निज कल्याण ॥२३॥

राखहु नाथ चरन निज पासा , पूजहु मोर चरम अभिलासा ।
रहि तुव साथ नाथ दुख कोई , मो कहूँ नैव नरक महँ होई ॥
तुव वियोग नाकहु हिय खूला , तियसुख सकल अहहि पतिमूला ।
होय विदेह जनक-सम नाथा , रहि गृह करहु कुटुम्ब सनाथा ॥
मैं तुव संग रहौं पिय कैसे , संग बसिष्ठ अरुन्धति जैसे ।
राघव संग गई बन सीता , जनकसुता पति-प्रेम-पुनीता ॥
द्रुपद-सुता निज करतब जानी , पतिसह विपिन-गमन-मति ठानी ।
तिमि तुव चरन निकट बसिस्वामी , सेवा-निरत होउँ कृतकामी ॥

† All the world's a stage.

And men & women are mere players : they have their exits
And entrances. (Shakespeare)

सो अनुमति मोहि देवहु , करुनाकर भरतार ।

सेवा रावरि करि जथा , जीवन होय ससार ॥२४॥
 बचन विनीत अकनि निजती के , मोहन बैन कहे अति नीके ।
 तुम कहँ विदित अहहि मत मोरा , सेवाधरम सुतनु अति घोरा ॥
 निरखि प्रिये तुव मृदुतम गाता , मम मानस अतिसय भय खाता ।
 जन-सेवक-जीवन स्रम-पूरन , करहि सुतनु सुख-आसा चूरन ॥
 तुम अब करहु प्रिये हठ भारी , सिसु-सम टरत न तिय-हठ टारी ।
 सो अब होय बिस मति-भोरी , करहुँ प्रमान बात प्रिय तोरी ॥
 आस्रम बसि करि सेवा-काजू , साधहु सुबिधि महानस-साजू ।
 आस्रम महँ अतिथि जोउ आवै , तुव कर सुखसाधन सब पावै ॥

मिलप सीखि कछु तनय मम , होय कुसल गुनखान ।

मनबांझित धन पावहिं , निज बुधि-बल-परमान ॥२५॥
 अम तहँ बसत बरस कछु बीते , सांतिसहित दुखदारिद रीते ।
 तब पुनि दैव कुटिल चख कीने , भारतीय-सुख सब हरि लीने ॥
 *स्मटस नाम गोरन कर नेता , भयो कुटिल-नाटक-अभिनेता ।
 कुटिल-नीति महँ परम प्रवीना , धरम-बिचार-बिबेक-बिहीना ॥
 मद-मत्सर-जुत लोभ-समेता , धरहि प्रजाजन-लाभ न चेता ।
 दुरजोधन-सम दुरजनभ्राता , कंस-समान सुजन-दुख-दाता ॥
 रावन-सम दानब-दल-नेता , हिरनकसिपु सडजंत्र-प्रनेता ।
 कीने तिन उतपात अपारा , भारतीय-जन कहँ दुख भारा ॥
 गांधी पहुँ तब जाय तिन , आरत करी पुकार ।

दीनदुखी-जन-दुख हरौ , सरनागत - प्रतिपार ॥२६॥

* जॉन स्मटस—दक्षिणी अफ्रिका के उपनिवेशराज्य का प्रधान मन्त्री ।

जनकसुता जस रावन छीनी , भारत-कुललक्ष्मी हरि लीनी ।
 ता कहँ विविध त्रास तिन दीने , अनरथ घोर दनुजपति कीने ॥
 तिमि खल स्मटस गौरपति कूरा , भारतीय-हिय-दरपन चूरा ।
 अपहरि अब कीरति बरनारी , करम नृसंत करत नित भारी ।
 जिमि राघव दससीस-निपाता , भयो जनक-दुहिता-दुखत्राता ।
 तिमि मोहन भारतकुलकेतू , होवहु अब दुख-वारिधि-सेतू ॥
 आरज-कुल-लक्ष्मी तिन छीनी , दुरगति तासु अमित खल कीनी ।
 सो तुम सत्रु-समन करि भ्राता , होवहु माजन-जन-परित्राता ॥

मोहन मृदुबानी कही , सुनहु मोर मत मीत ।

अनय करहु नहिं सत्रु मन , अस आरजजन-रीत ॥२७॥
 तात विचारि धरम-मरजादा , कहौ न स्मटस अहै मनुजादा ।
 रिपु सन कहत मनुज कटु बानी , करहिसकल कुल-कीरति-हानी ॥
 *तुव पथ बोय मनुज जदि खूला , करतब करहि सदा प्रतिकूला ।
 तउ तुम वपन करौ सुचि फूला , लहहु कुसुम वा कहँ तिरखूला ॥
 हौं अब जाय स्मटस सन भाखौं , कुल-मरजाद अटल निज राखौं ।
 स्मटस सखा निसचय तुम मोरे , नीति-निपुन गुन अवर न थोरे ॥
 निज-परजा निज-सुत-सम जानौ , ता हित माँझ स्वहित पहिचानौ ।
 † जाके राज प्रजा दुख पावै , सो नृप अबसि नरक महँ जावै ॥

करुनाकर पूरन करै , मम कारज अस सोच ।

गांधि गयो प्रोटोरिया , जहाँ स्मटस मति-पोच ॥२८॥

* जो तो को काँटा बुवै ताहि बोय तू फूल ,
 तोहि फूल को फूल है, वा को है तिरसूल ॥ (कबीर)

† जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ,
 सो नृप अबसि नरक अधिकारी । (तुलसी रामायण)

आवत लखि मोहन अभिमानी , तासु अनादर-हित मति ठानी ।
 बैठन हित दीनो नहिं पीठा , बचन कह्यो एकहु नहिं मीठा ॥
 मोहन लखि अस अविनय वा का , कह्यो न नेकु भेस-मय वाका ।
 ‡ जस कूकुर भूँसत गजराजा , सहज-धीर-गति रुचिर विराजा ॥
 निजजन कर सिगरी दुख-गाथा , विनय समेत कही नयनाथा ।
 पुनि बोल्यो मोहन मृदु बानी , प्रेमसमेत मधुर नयसानी ॥
 सचिव प्रधान भूप कर मीता , तुम कत करम करहु अविनीता ।
 भारतीय परजा सब तोरी , सेवा करहिं सतत नहिं थोरी ॥

प्रजा गनहु तुम पूत सम , भूप जनक समतूल ।

प्रेम परस्पर उभय कर , अहहिं सदा सुखमूल ॥२९॥
 सो तुम मीत करहु अस काजा , जासों लहहिं उभय सुख-साजा ।
 जासु राज प्रिय प्रजा सुखारी , सो नृप अवसि सुरग अधिकारी ॥
 जासु राज जनता दुख पावै , सो नृप अवसि नरक महँ जावै ।
 मोहन बचन मधुर हितकारी , भये स्मटस-हित कुटिल कटारी ॥
 जा कहँ होय बिसमजुर पीरा , ता कहँ बिस-मय होवत खीरा ।
 अतिसय गरव भरी कटुबानी , बोल्यो कुटिलबुद्धि अभिमानी ॥
 भारतीय गोरन कर दासा , समता कर किमि करिहैं आसा ।
 छुद्र सृगाल निबल अति कूरा , नाहर सम किमि होवहिं खरा ॥

दाससुता कहु करहि किमि , रानीपद - अभिलास ।

भानु-प्रभा सम करहि किमि , दीपक-जोत प्रकास ॥३०॥
 गरवित बचन अकनि तिस केरे , मोहन चकित वाहि प्रति हेरे ।
 पुनि निसचय कीनो मनमाहीं , दरप-तिमिर-हत कर मति नाहीं ॥

‡ The Dogs bark, but the elephant moves on

मानव कर जब आय बिनासा , सरब प्रथम होवत मतिनासा ।
 बुद्धिविवेक नसे पुनि मानव , करतव करत दुष्ट जस दानव ॥
 सील-बिमा-ऋजुता अरु दाया , तजि खल करत दरप-जुत माया ।
 हित-अनहित नहिं कछु पहिचानै , मीत अमीत सुहृद रिपु जानै ॥
 हितकर बचन लगत कटु कैसे , जुर महुँ आम नीम सम जैसे ।
 बचन-बिलास चाहु प्रिय कैसे , रुचत मधुर रस रुज महुँ जैसे ॥

मोहन पुनि अति प्रेम सों , परामरस सुभ दीन ।

पै नहिं सुनत कुपन्थरत , सुभ सम्मति मति-हीन ॥३१॥
 होय बिबस बोल्यो तब गांधी , प्रबल चलत जब जन-मत-आंधी ।
 तब नरपाल प्रबल मतवारे , बिटप-समान समूल उखारे ॥
 निज जन कहँ देवहु अधिकारा , या महुँ तोर अमित उपकारा ।
 नातरु गरब खरब सब होई , मीजहु कर निज पत सब खोई ॥
 करहु न मीत करम अविबेका , बल-अभिमान लागि खल-टेका ।
 *सीजर नयपालिन मतवारे , छत्र अकंटक ब्रित्ति जिन धारे ॥
 करि अभिमान गये जमथाना , नरकमूल अभिमान बखाना ।
 †एलफ्रेड इव करि नर सुभकामा , इत उत जस पावत अभिरामा ॥
 प्रजापाल विकटोरिया , एलिजा-सम सुभ जान ।

नयनागर नित मानहीं , परजा पूत-समान ॥३२॥

* सीजर—जूलियन सीज़र, रोम का विश्वविख्यात तानाशाह ।
 जनतंत्रप्रिय ब्रूटस ने इसकी हत्या की ।

† नैपोलियन बोनापार्ट (१८ वीं शती ई०) फ्रांस का जगत्-प्रसिद्ध विजयी सम्राट् । वाटरलू के युद्ध में (१८१४ ई०) इंगलैण्ड और प्रशिया की सम्मिलित सेनाओं से परास्त हुआ ।

‡ एलफ्रेड (८म शती ई०) । एलिजाबेथ (१६ वीं शती ई०) ।
 विकटोरिया (१९वीं शती ई०)—इंगलैण्ड के प्रजाप्रिय शासक ।

सीख बचन निसफल भे कैसे , ऊसर भूमि जलद-जल जैसे ।
 तब निज शिबिर गयो मनमोहन , निज अवदात चरित जगमोहन ॥
 भारतीय उत्सुक अति ठाढ़े , मोहन-स्वागत-हित द्रुत बाढ़े ।
 तिन प्रति सकल वृत्त तिन भाखा , भेद छुपाय कछुक नहिं राखा ॥
 तिन सन कहत सुनहु अब मीता , जदपि अराति अहहि अबिनीता ।
 करहु काज नहिं धरम-बिहीना , धरम-बिहीन मनुज अति दीना ॥
 कर गहि खडग अहिंसा केरा , चाहिय अराति समर महँ टेरा ।
 साँच कवच धारहु निज देहा , निज-बचाव-जुगती सुभ एहा ॥

सत्याग्रह कर समर सुभ , भयो अलौकिक रूप ।

चकित होय पेखत रहे , अज - रमेस - सुरभूप ॥३३॥
 इत रिपु हनत तोप-तरवारा , उत सत-चरम गहहिं ते वारा ।
 इत मद-मोह-कोप-दल भारा , उत सम-दम-धीरज-परिवारा ॥
 इत अविवेक महाभट ठाढ़ा , उत विवेक-बल अतिसय बाढ़ा ।
 इत दीसैं बहु लोभ-वरूथा , उत संतोस महाबल-जूथा ॥
 इत मत्सर अरु बैर अपारा , उत विसाल भायप-परिवारा ।
 इत स्वारथ सोहत जस राजा , उत उपकार सरलबिधि साजा ॥
 इत अभिमान गरज अति घोरा , विनय सीलजुत उत अति भोरा ।
 इत नृसंस-भाव भयकारी , उत करुना जनमानसहारी ॥

देवदनुज-संग्राम जस , बरनन करहिं पुरान ।

धरम-पाप महँ समर तस , तहाँ भयो घमसान ॥३४॥
 समर बिचित्र भयो अति भारी , लखि भे चकित सकल नरनारी ।
 आतमबल - पसुबल - मुठभेरा , विसमित होय सकल जग हेरा ॥
 पावस जिमि बरसहिं जलधारा , सेवकसिर तिमि सख-प्रहारा ।
 तिन कहँ गहहिं समुद भट कैसे , सुमनहार डारहिं गर जैसे ॥

सिर सन द्रवत रुधिर कर धारा , मानहिं मस्तक तिलक सँवारा ।
 घायल-तनु सोहत तहँ कैसे , मंडन विविध पहिरि नर जैसे ॥
 जे जन मरहिं समरथल जाई , मीचु-बधू सन करहिं सगाई ।
 आतमबल तिन कर भय-हीना , अमित तेज तिन महँ भरि दीना ॥

आतमबल अरु जन्तुबल , उभय भेद अस जान ।

आतमबल पीयूष-सम , पसुबल गरल-समान ॥३५॥
 आतमबल जीवन कर दाता , इत उत उभय दुखन-परित्राता ।
 जग महँ मानसहित सुख देवै , पुनि परलोक अमरपद लेवै ॥
 आतमबल-सिच्छा सुभ-एहा , अमर जीव छिनभंगुर देहा ।
 तासों तजि भौतिक अभिलासा , अमर बस्तु सन बाँधहु आसा ॥
 जीवन मानरहित दुखदाई , मानसहित मरना सुख-दाई ।
 तन-मन-धन अरपन करि सारा , चाहियत जग-दुखदारिद-टारा ॥
 पसुबल पाठ पढ़ावत आना , दुरबल कहँ दुख देवहु नाना ।
 प्रभुता-विभव-ग्यान बल पाई , स्वार्थसिद्ध करहु निज भाई ॥

पसुबल पावहि मनुज जय , स्वार्थरत तब होय ।

कोप-लोभ-मद-मोह महँ , फँमत विवेकहि खोय ॥३६॥
 दमनचक्र दारुन अस चाला , पकरि सवन कारा महँ डाला ।
 अमित कलेस तहाँ पुनि दीने , सब अधिकार तासु हरि लीने ॥
 धनसंपति सिगरी हथियाई , निपट निरास्रय नारि सताई ।
 जनरुचिहीन रोयँ सिसु छोटे , पै नहिं करहिं दया कछु खोटे ॥
 देसधरम हित सहत कलेसा , रहहिं मुदितमन बीर हमेसा ।
 पति-सुत-भ्रात-संग कुलनारी , ताछिन भई सती-व्रतधारी ॥
 निज मानस निसचय तिन ठाना , देस-धरम-हित सरबस-दाना ।
 कारावास सकल भरि दीने , सत्रु-उपाय बिफल सब कीने ॥

जग महँ अतिबल संगठन , सक्तिसमुच्चय-मूल ।

जासु प्रभाव पिपीलिका , सत्रु हनै अहि-तूल ॥३७॥

जग महँ धूम मची अति भारी , सत्यसमर अति अचरजकारी ।

भारतसचिव वृत्त सब जानी , कलह-समन-कारज-मति ठानी ॥

कुसल-दूत संदेस - समेता , पख्यो तिन द्रुत स्मटस-निकेता ।

जावहु मीत वाहि समुभाऊ , परजा-दुख ननु चहत न राऊ ॥

भाखहु भारतीय दुख टारौ , कलह-बिबाद सकल निरबारौ ।

*गोखल सुनि बरनन रन केरा , अस बिधि बैसराय कहँ प्रेरा ॥

आफ्रिक भारतीय दुख लीना , उचित सहाय तिनहिं कछु दीना ।

आफ्रिक भारतीय नर-नारी , संकट-पंक फँसे अति भारी ॥

तिन कर करहु सहाय तुम , प्रजापाल नयनाथ ।

नयनागर भूपाल कर , रहै प्रजा नित साथ ॥३८॥

चाहत जुद्ध छिरा अति भारी , जरमन अरु अंगरेज मँभारी ।

भारतीय आफ्रिक अरु गोरे , लरहिं परस्पर विरथा भोरे ॥

मेल परस्पर करि जुग आता , ह्वैहैं ब्रिटिस-राज-परित्राता ।

तासु बिचार वा कर मन भावा , स्मटस निकट निज दूत पठावा ॥

जब जुग दूत स्मटस पहुँ आये , निज निज स्वामि-बचन बतराये ।

नाहिन उचित प्रजा कर पीड़ा , या ते लहहु अंत महँ ब्रीड़ा ॥

सासक अरु सासित महँ बैरा , करत न काहु पच्छ कर खैरा ।

सो तुम नय-बिचार करि भाई , त्यागहु अनरथजनक लराई ॥

अन-इच्छितहु स्मटस तब , मानि बचन तिन केर ।

कारा सन बंदी तजे , दिये स्वत्व सब फेर ॥३९॥

* गोखल—महामना गोखले, वायसराय की कौंसिल के मेम्बर ।

हायन अस्ट अनन्तर रारा , भारतीय-गोरन कर भारा ।
 मिठ्यो प्रमोद भयो चहुँ ओरा , 'जय जय गांधि' करहिं सबसोरा ॥
 हरख-प्रवाह उमड़ि अति बाढ़ा , नासत सकल दुरित-दल गाढ़ा ।
 घर-घर होवहिं मंगलगाना , मोद मनावहिं पुरजन नाना ॥
 हमहिं सुतन्त्र ईस पुनि कीना , दारुन दास्य-कस्ट हरि लीना ।
 गांधी-सम नेता सुभ दीना , हम पै अमित अनुग्रह कीना ॥
 अब निज धरम-करम-अनुसारा , जीवन-जापन होय हमारा ।
 जाति-बरन-अन्तर सब नासा , ईस-कृपा पूजी सब आसा ॥

मान सहित अब रहहिं हम , गनि आफ्रिक निज देस ।

रहि सुतन्त्र उन्नत करै , भाखा-भाव रु भेस ॥४०॥
 कारागृह तजि मोहनदासा , गयो सपदि स्मटस कर पासा ।
 प्रेम-सहित भैंद्यो जस भाई , नेह-मधुर पुनि वाक सुनाई ॥
 भाखौं सत्य ईस मम साखी , हौं नहिं डाह कछुक मन राखी ।
 बैर-विरोध सकल अब नासा , उचित करन पुनि प्रेम-प्रकासा ॥
 भारतीय आफ्रिक अरु गोरे , इक सम अहहिं प्रजा-जन तोरे ।
 ता कर हित करतब निज जानौ , ता महँ बन्धु कुसल निज मानौ ॥
 द्रवत उपलहिय प्रेम-प्रभाऊ , अनुभव करि उर अनुसय-ताऊ ।
 क्रूर-करम नर निरदय जोऊ , होय मृदुल नवनी-सम सोऊ ॥

स्मटस परम अभिमानजुत , पसुबल - आस्रय - लीन ।

आतमबल-परभाव लखि , रह्यो चकित-मति दीन ॥४१॥
 पुनि मोहन सन भाखत भाई , साँच कहौं इक बात सुनाई ।
 जो तुम समर करत सखन सों , तौ तुम पार न पावत मो सों ॥
 आयुधभूसित रन-मतवारे , सुभट सहस हौं समर पछारे ।
 पै तुम इक नूतन विधि सीखी , दीसत मृदुल असल अति तीखी ॥

सत्याग्रह कर आयुध भारी , निरबल करत सबल-समसारी ।
 सबलन कहँ निरबल करि डारै , तासु प्रभाव मसक गज मारै ॥
 आतमबल पसुबल ते न्यारा , भेद हमहिं समुभावहि भारा ।
 सबल देह आतमबलहीना , तैल बिना जस दीपक बीना ॥
 आतमबलजुत निबल तन , जदपि अलप बलखान ।

चालत अंकुस अलप जिमि , करिवर विन्ध्य-समान ॥४१॥
 सत्याग्रह कर अमित प्रभाऊ , जानहिं अज, उमेस सुर-राऊ ।
 सत्याग्रह भेसज इक भारी , द्वेसगरल कहँ देवत टारी ॥
 सत्याग्रह निरबल-बल जाना , करत ताहि सुभ-सक्ति-निधाना ।
 सत्याग्रह जस कठिन कुठारा , बैर - बिटप - उनमूलनहारा ॥
 सत्याग्रह जस जीवन-भूरी , आतमबल-धन देवत भूरी ।
 सत्याग्रह अतिसय बलदाता , साहसजनक सकल भयत्राता ॥
 सत्याग्रह कर सत्य अधारा , करत अनृत-पातक सब द्वारा ।
 सत्याग्रह संतत सुख देवै , मनुज-विसम-संकट हरि लेवै ॥
 सत्याग्रह कर मरम अस , धरम - प्रेम सुमहान ।

बैर छाँड़ि रिपु जानिये , सोदर बन्धु - समान ॥४२॥
 गांधी स्मटस मिले तब कैसे , सिव महँ सांत-रौद्र रस जैसे ।
 मेल परस्पर तिन कर कैसा , गंग-जमुन कर संगम जैसा ॥
 मिलत उभय जस सोदर भाई , लसहिं जथा उद्यम-चतुराई ।
 अनल जथा दुति-दाह समेता , मोहन-स्मटस नेह-समवेता ॥
 दामिनि महँ दुति-गरजन दोऊ , मोहन-स्मटस रूप धृत सोऊ ।
 रवि तम-नास कमल-दल-पोसक , मोहन-स्मटस-मेल जनतोसक ॥
 छात्रधरम महँ सुन्दर-मेला , दया-धरम कर होय सुहेला ।
 तिन कर तिमि भायप-बिबहारा , निरखि करत अचरज जग सारा ॥

या महुँ अचरज करहु जनि, नीर करै दव सांत ।
 कोप-हानि हित अहहि इक, छिमा मंत्र अभ्रांत ॥४३॥
 गांधिचरित-अनुकूल, सत्याग्रह कर मन्त्र सुभ ।
 पाय सांति-सुखमूल, सुजन सदा मोदै जगत ॥४४॥

पञ्चम सोपान

असहयोग कर मन्त्र अनूपा , वृजिनवृत्र-हित कुलिस-सरूपा ।
असहयोग कर भेसज भारी , विसम बैर-बाधा-परिहारी ॥
असहयोग अमृत सुखसारा , दुरित-गरल-दुख छिन महँ टारा ।
असहयोग सुभ दिनकर-तूला , पसुवल-तिमिर हरत दुखमूला ॥
असहयोग जानिय सुभ सेतू , पसुवल - बारिधि - तारन - हेतू ।
असहयोग आयुध अति भारी , पासववल-रिपु देत पछारी ॥
असहयोग आतमवलदाता , कादर भाव - दोष - परित्राता ।
असहयोग राघव - समरूपा , नासत दुरित-दनुज-कुल-भूपा ॥

असहयोग सुभ मंत्रमनि , बसीकरन सुखसार ।

पसुवल-विसम-भुजंग कर , करै दरप-परिहार ॥१॥

हरखिन लखि भारतजन गांधी , देसगमन-हित परिकर बांधी ।
उनिस सत पन्द्रह सुभ बत्सर , करमवीर मोहन गतमत्सर ॥
नवम तिथी सुभ जनवरि मासा , घर लौट्यो पूरन जन-आसा ।
मुम्नापुरि स्वागत अस भयऊ , मधवा पेखि चकित रहि गयऊ ॥
पुरजन सकल उमग हिय लीने , बहु प्रबंध स्वागत-हित कीने ।
घर - घर तोरन - बन्दनबारा , नगर समग्र अलंकृत भारा ॥
हाट-बाट-पथ-बीथि सँवारे , पुरजन फिरहिं बेस सुभ धारे ।
विजयद्वार बहुथान बनाये , सुमन-सुफल-सोभित बहु भाये ॥

लोक-समूह बरात-सम , मोहन जनु बररूप ।

विजयबधू परिनै कियो , सची जथा सुर-भूष ॥२॥

घर-घर होवहिं मंगल-गाना , पुरजन-मोद न जात बखाना ।
 जन समूह बीथिन जब जावै , पुरजन-चित्त मोद बढ़ि आवै ॥
 जय जय सब्द उठत चहुँ ओरा , धन्य धन्य कर सुनियत सोरा ।
 करमवीर मोहन जयसाली , प्रेम-प्रभाव सत्रु निज घाली ॥
 ईस-प्रसाद कुसल घर आयो , हम तिहि पेखि नयन-फल पायो ।
 अस विधि कहहिं सकल नरनारी , अमर करै मोहन त्रिपुरारी ॥
 बरसहिं सुमन सदन-तल बैठीं , ललना मोद-सलिल महँ पैठीं ।
 देवबधू जनु बैठि बिमाना , बरसहिं कलपकुसुम विधि नाना ॥

सुमनहार गर सोहहीं , सुमन-भार पुनि सीस ।

मुकताहार - किरीट - जुत , मोहन जनु अबनीस ॥३॥

स्वागत अस करि सहित उमाहा , नागर-जन लहि लोचनलाहा ।
 नगरभवन महँ पैठे जाई , उच्चव-हेत परम लिव लाई ॥
 मानपत्र मोहन कहँ दीना , निज-करतब-पालन करि लीना ।
 विनयसील बोल्यो तब गांधी , अटल सनेह-गाँठ तुम बांधी ॥
 जो तुम कीन मोर हित ताता , ता कर तुमहिं देय फल धाता ।
 निषट अकिंचन समर्थ-हीना , मो कहँ प्रभु सुभ अवसर दीना ॥
 मो कहँ ईस सक्ति कछु दीनी , निज-बन्धुन कर सेवा कीनी ।
 सत्यरूप आयुध सुभ पावा , प्रेम-प्रभाव प्रकट दिखरावा ॥

प्रभु-प्रसाद बल पाय कै , आफ्रिक-दसा सुधारि ।

आयो अब निज देस महँ , निज करतब सुबिचारि ॥४॥

मानजोग कीनो कछु नाहीं , सुनि स्तुतिवचन लाज मन माहीं ।
 गहि सहयोग तुमारा भाई , चहहुँ करन कछु देस-भलाई ॥
 करिहौं प्रथम देस कर दौरा , जानन-हित जनता कर व्यौरा ।
 किमि मम देसबन्धु दिन काटैं , जोहत सुभ-भविष्य कर बाटैं ॥

पुनि निज करम-सक्ति-अनुसारी , सेवा-करम करहुँ ब्रतधारी ।
पुन्यनगर पुनि कीन पयाना , गुरुवर-दरस-मनोरथ ठाना ॥
गुरु कहँ लखि सरोग-तनु-ठाढ़ा , मोहन-मन कलेस अति बाढ़ा ।
गोखल साधुवाद तिहि दीना , आसिसजुत उपदेसहु कीना ॥

गुरु-प्रसाद तब पाय कै , देस-अटन चित धारि ।

राजकोट - पत्तन गयो , गुर्जर देस मँभारि ॥५॥
तहँ करि निजबन्धुन सन मेला , सांतिनिकेतन गयो सहेला ।
लोक-विदित प्रतिभाजुत भारी , कविता-गीत - कला - उपकारी ॥
नाम रवीन्द्रनाथ अभिरामा , कुलपति राज करत तिसु धामा ।
सांतसरूप कृपाल अमानी , सम-दम-दान-अभय-गुनखानी ॥
सत्यसंध अरु मृदुल सुभाऊ , ऋषिवर-तुल्य अपार प्रभाऊ ।
पूख-पच्छिम - संस्कृति - ग्याता , नवल मनोहर काव्यविधाता ॥
मोहन कर स्वागत तिन कीना , आस्रमवास प्रेम सन दीना ।
तहँ बसि गांधि परम सुख पायो , फिनिक्-वास अनुभव दुहरायो ॥

निगमागम - चरचा करै , करँ देस-हित बात ।

प्रेमसहित संलाप करि , हरखित दिवस बितात ॥६॥
महापुरुष तिहि कह्यो कबीसा , कहि गुरुदेव भयो-नत सीसा ।
कतिपै दिवस तहाँ बसि गांधी , कालीघाट-गमन-प्रति बांधी ॥
तहँ कालीमंदिर महँ जाई , देख्यो दृश्य परम दुखदाई ।
पावन मंदिर महँ अनजाना , सोनितपात करहिं मनमाना ॥
दयाधरम अति पूत बिहाई , देव-पुरोहित भये कसाई ।
दारुन देखि धरम कर हानी , मोहन-चित्त भई अति ग्लानी ॥
कासीगमन गांधि पुनि कीना , बिस्वनाथ-दरसन-चित दीना ।
तहँ लखि लोभ पुरोहित केरा , घृनासहित गांधी मुख फेरा ॥

कुम्भ-परब पै जाय तब , तीरथ सुभ हरद्वार ।

मोहन मन अति खेद भो , लखि-वञ्चक परिवार ॥७॥

संतसमागम हरिगुनगाना , दुरलभ तत्त्व जगत जुग जाना ।

कुम्भ-काल संतन सुभ माना , आवहिं साधु विरक्त महाना ॥

तिन कर दरस क्रिये अति लाहा , सुरसरि-सीत-सलिल-अवगाहा ।

तन-मन पूत बाहि सन होवै , पातक-पंक सकल निज खोवै ॥

अस जिय धारि गयो तहँ मोहन , चरित-उदार जगत-मनमोहन ।

दुखित भयो लखि कुटिल कुचाली , बेस मराल वकन कर पाली ॥

साधु-बेस सठ करहिं कुकरमा , तजि सब लोक-लाज अरु धरमा ।

सन्त कहाय करहिं बलबंदा , धरम-ओट कारज करि मंदा ॥

दारुन काल-कुजोग ते , मिटी धरम - मरजाद ।

अनाचार बाढ़े अमित , बड़े छीब-पिसिताद ॥८॥

तब तिन संदेसा सुभ पावा , गुरुकुल-पति निज-धाम बुलावा ।

मुनसीराम नाम अति साजन , चरित-उदार मान कर भाजन ॥

गुरुकुल सुभ थापन तिन कीना , धरम-सुधार-करम चित दीना ।

पाय सँदेस गांधि-मन हरखा , मरुथल तृसित पायजिमिवरखा ॥

तजि तब कुंभ-कुलाहल भारा , सांत-सुभग आस्रम पगु धारा ।

कुलपति भेंटि लह्यो सुख कैसे , चिर-प्रोसित सोदर मिलि जैसे ॥

भयो मुदित लखि बटु-समुदाई , आरज धरम-सीख जिन पाई ।

भाखा-भाव अवरु परिधाना , निज सुदेस कर हितकर माना ॥

निरमल पूत विचार अरु , सुद्ध अहार - बिहार ।

निरखि भयो मोहन मुदित , चरित धरम-अनुहार ॥९॥

बैदिक-धरम-सरनि-अनुरागी , प्रभु-पद-प्रेम सतत मति पागी ।

निज संस्कृति सन प्रेम अपारा , देस-उधार-सुभग-व्रत धारा ॥

गुरु अरु सिस्स्य धरम-परबीना , निज-निज करम रहहिं नित लीना ।
 अनुसासन सुन्दर तहँ सोहा , उच्च विचार सुजन-मन-मोहा ॥
 वेद-ऋचा-धुनि सुचि मख-धूमा , जुगपत दुहुन गगन-तल चूमा ।
 आरजधरम-मरम-सुभ-ग्याना , ता सन पढ़हिं नवल विग्याना ॥
 निज-उन्नति जनता कर सेवा , अस बूझयो तिन जीवन-भेवा ।
 गुरुजन करहिं जनक-उम नेहा , अरपि बटुन हित धन-मन-देहा ॥

तब विचार गांधी कियो , आस्रम थापहुँ एक ।

जन-सेवक सिखिहैं जहाँ , सेवा - धरम - विवेक ॥१०॥
 सावरमति इक सरित सुहाई , ता कर तीर सुथल सुखदाई ।
 आस्रम कीन गांधि मन-भावन , अतिसै रुचिर पतित-जन-पावन ॥
 छात्रन कहँ निवास तहँ दीना , जीवन-क्रम उत्तम थिर कीना ।
 उपाकाल नींद सब त्यागौ , तन-मन-सौच क्रिया महँ लागौ ॥
 पुनि कछु करि स्रम तनु-हितकारी , भजहु तात जगनाथ मुरारी ।
 भजन किये होवत दुख-हानी , आतमबल पावत सुभ प्राणी ॥
 तब कछु करहु जगत कर धंधा , जग महँ मनुज करम सन बंधा ।
 भोजन-भ्रमन - सयन - विवहारा , नितप्रति करहु नियम-अनुसारा ॥

रहहु परस्पर बंधुसम , त्यागि वरन - मतभेद ।

जन-सेवा-व्रत धारि कै , करतब करहु अखेद ॥११॥

†सोरह अधिक उनिस सत बरसा , भारत-भाग अचानक सरसा ।
 प्रतिनिधि-गन लखनउ महँआये , कांग्रेस-अधिबेसन-हित धाये ॥
 आरज-मुसलिम कर सुभ मेला , ईस-कृपा सन भयउ सहेला ।
 समय परस्पर तिन तब कीना , समर-सुराज माहिं चित दीना ॥

† १९१६ ई०, लखनऊ में हिन्दू-मुसलिम समझौता—कांग्रेस ने मुसलमानों की पृथक् निर्वाचन की माँग को स्वीकार किया ।

तिनकर लखि पुनि मेल सुभागा , चिन्तातुर अंगरेज अभागा ।
 कहत सुनौ हिन्दी मम मीता , तुव हित रहै सदा मम चीता ।
 सांप्रत समर छिरयो अति भारी , जरमन अरु मम देस मँभारी ।
 समर-अन्त लागि करहु प्रतिच्छा , विजय पाय पूरहुँ तुव इच्छा ॥

सांप्रत करहु सहाय तुम , संकट लखि मम मीत ।

उचित स्वत्व हौं देवहुँ , समर पाय सुभ जीत ॥१२॥

परामरस नेतागन कीना , तिलक तहाँ अस निज मत दीना ।
 नीति कहत रिपु-संकट लेखी , निज-हित-आस करहु सुविसेखी ॥
 विपद फँसा अरि करत निहोरा , आवहु मीत गहहु कर मोरा ।
 समय टरे टारत निज बाचा , मूढ़ मनुज मानत रिपु साँचा ॥
 समर-सुराज प्रबल अब कीने , निज अधिकार गनहु सब लीने ।
 तिस ते भिन्न गांधि मत दीना , अरिदुखलाभ उचित नहिं चीना ॥
 सहित सनेह सत्रु बस कीना , होय अबल जिमि अहि बिसहीना ।
 उचित करन अंगरेज सहाया , करतबसमुभिसकलतजि माया ॥

प्रेमविवस अरिहू तजै , सकलद्वेस कर भाव ।

उरग गरल तीछन तजै , सीतलमनि - परभाव ॥१३॥

सैनिक-संग्रह महुँ चित दीना , करमचन्द-सुत नीति-प्रवीना ।
 सत्यनिष्ठ-जन निश्चय कीने , पूरहिं निज प्रन प्रानहु दीने ॥
 धन्यवाद सासक-जन कीना , कांचन-पदक मान-हित दीना ।
 कृसक तहाँ इक दिन इक आवा , गांधी कहँ दुख-बचन सुनावा ॥
 चम्पारन-बासी हम दीना , गोरन दुखित हमहिं बहु कीना ।
 समफल हरहिं कृसक-जन केरा , अनुचित करत न्याय नहिं हेरा ॥
 कर गहि बिबिध कस्ट असि देवँ , न्याय-विचार नाम नहिं लेवँ ।
 मो सँग चलहु कृपानिधि नाथा , दीन जनन अब करहु सनाथा ॥

कृसक-जनन कर दुखकथा , सुनि मोहन मतिधीर ।

दुखित भयो अतिसै तुरत , चलयो मिटावन पीर ॥१४॥

सन्तन कर अस सहज सुभाऊ , निज दुख-ताप गनहिं नहिं काऊ ।

पर-उपकार करहिं सहि पीरा , ईख मधुर रस देवत पीरा ॥

चमपारन महँ निलहे गोरे , समीजनन पीरत नहिं थोरे ।

अस तहँ गाँधि विवेचन कीना , परामरस मित्रन सन कीना ॥

राजन बाबु नाम गुनधामा , रख्यो वकील सुघर तिहि ठामा ।

ब्रजकिसोर अति चरित-पुनीता , पर-उपकार-निरत नित चीता ॥

क्रिप्लानी जनसेवक सोहा , सील-सुभाव सुजन-मन मोहा ।

लहि सहाय मोहन तिन केरा , न्यायहीन गोरन कहँ टेरा ॥

कृसकजनन कहँ देव तुम , उचित मीत अधिकार ।

नतरुसकलमिलिकरहिंअब , सत्य - समर - विवहार ॥१५॥

गरव-अधीन मनुज मतिभूला , करतव करत न्याय-प्रतिकूला ।

मोहन-वचन कान नहिं कीना , कृसक-जनन दुख गोरन दीना ॥

पसुवल सन चाहत बस कीना , सकल धनादिक तिन कर खीना ।

कृमकन मेल परस्पर कीना , मोहन कहँ नेता निज चीना ॥

हरख समेत कस्ट सहि लीने , बिफल प्रयास सत्रु-कर कीने ।

परिभव पाय संधि तिन कीनी , कृसकन माँग मानि सब लीनी ॥

निवल जनन कहँ बल अति भारा , सत्याग्रह देवत सुखसारा ।

तासु प्रयोग गाँधि जब कीना , नीलकलंक तुरत हरि लीना ॥

कृसकजनन कर त्रास अस , कियो गाँधि जब दूर ।

सकल देस महँ बिमल जस , छायो तब भरपूर ॥१६॥

खेरा इक जनपद अति नीका , गुर्जर-देसभाल कर टीका ।

ब्रिति उर्वर सससंपतिसाली , राजत सतत तहाँ खुसहाली ॥

विधिवस विकट भयो दुसकाला , कृसकन हित जनु बिपद कराला ।
 सूखे खेत मरहिं नित ढोरा , अन्न-बिहीन करहिं नर सोरा ॥
 तृसित छुधातुर निपट बिहाला , इत-उत फिरत मनुज-कंकाला ।
 अस कुसमय सासक हियहीना , कृसक-सहाय कछु नहिं कीना ॥
 उलटे माँगहिं भूमि-लगाना , छत महँ करहिं छार जनु दाना ।
 विनय अतीव कृसकजन कीना , पै नहिं सुनत नेकु हिय-हीना ॥

दीन-जनन कर सुनहिं जे , आरत - करुन पुकार ।

दीनबंधु भगवान - सम , ते साजन जगसार ॥१७॥

करुन कथा सुनि कृसकन केरी , मोहन गमन कीन बिनु देरी ।
 तहँ बल्लभ बिट्ठल-लघुभ्राता , नाम पटेल जगत-बिखयाता ॥
 न्यायनिपुन बैरिस्टर भारा , तिन कृसकन-नेतृत्व सँभारा ।
 महादेव, सङ्कर, अनुसूया , संग चलहिं तजि सकल असूया ॥
 हरखे सकल गांधि सुनि आवत , मीत मिले मानव सुख पावत ।
 कृसकजनन सों सुनि सब बाता , सासक सन बोल्यो दुखत्राता ॥
 †सासक-धरम अहहि अस भाई , जनता-लाभ करै चित लाई ।
 तनय-समान प्रजा-हित कीने , पावहिं सुख सासक रसभीने ॥

कृसक अहहिं अति कष्ट महँ , भोजन - वसन - बिहीन ।

देय सकै किमि भूमि-कर , अरथ-हीन अति दीन ॥१८॥

बचन मधुर हित मोहन जी के , सासक कहँ लागे नहिं नीके ।
 भयो छुभित सुनि तिन कहँ कैसे , मधु-घृत पाय जरारत जैसे ॥
 बोल्यो कटुधानी अभिमानी , दुष्टन द्रोह करन की ठानी ।
 जो भल चाहत देयँ कर मेरा , नतरु बंदिगृह पावहिं डेरा ॥

सेवन करि प्रभुता कर हाला , दारुन दमनचक्र तिन चाला ।
दंड कठोर किसानन दीने , पसुधन-धरनि सकल हरि लीने ।
गांधि कह्यो कृसकन समुभाई , मन महँ सोच करहु कत भाई ।
पसुबल गिरि-सरिता सम जाना , उमड़िघुमड़िछिनमाहिं बिलाना ॥

आतमबल - भागीरथी , बहत सदा इकसार ।

सांति-उदधि सुभ कच्छ पै , मानव देय उतार ॥१९॥

छनिक बिजय पसुबल जब पावै , गरब-बिबस नरकायन धावै ।
बिजय निदान साँच कर लेखी , छनिक पराजय जद्यपि देखी ॥
सो तुम दृढ़ निसचय मन धारौ , ऋजुता सन निज काज सँवारौ ।
देउ न कर बरु प्रानहु जावै , करहु न भय जमराजहु आवै ॥
विपद सकल सहि सहित उवाहू , प्रेम-धरम कर करहु निबाहू ।
मोहन-वचन मानि सब बीरा , कस्ट अपार सहहिं धरि धीरा ॥
धीरज अतुल देखि तिन केरा , करुना कीन निठुर-हिय डेरा ।
माँग लगान-बिसय तजि दीनी , कृसकन साथ संधि तिन कीनी ॥

सत्याग्रह सुभसमर महँ , अटल प्रेम कर जीति ।

साँच-प्रेम-आधार लहि , टरै सकल रिपु-भीति ॥२०॥

सठ सन केतिक करहु भलाई , विपद टरे सब देत भुलाई ।
अहि कहँ करहु जदपि पयदाना , तिन नित गरलबमन सुख माना ॥
सींचहु नीम अमिय-रस भाई , तजहि न सहज विसम करुआई ।
भारतीय गोरन-हित कीना , समर-सहाय विपुलतम दीना ॥
विजय पाय उपकार भुलाई , गोरन परिहरि सकल भलाई ।
रौलट ऐक्ट नाम दुखदाई , नव-बिधान कर बात चलाई ॥
सासकजन निज कर बल लीना , जन-अधिकार सकल हरि लीना ।
निपट निरंकुस सासक होई , नीति-नियम चित धरत न कोई ॥

रुज-आरत गांधी तऊ , जन - हित - चिंता - लीन ।

पाय प्रेरना ईस सों , प्रन बिरोध कर कीन ॥२१॥
 करन हेत सासन-प्रतिवादा , मोहन तुरत कियो हरिनादा ।
 जनता कहँ हरताल-निदेसा , दियो सपदि तजि सकल अँदेसा ॥
 देस समस्त भई हरताला , मानव-उदधि मनहु बढ़ि चाला ।
 कृस्न बसन धारन करि लोक् , प्रकट करत निज अन्तर सोक् ॥
 कूटहिं ध्याति कहहिं दुरवादा , नहिं तुव राज चहहिं मनुजादा ।
 करि बलबन्ध लियो तुम सासन , पांडवराज सकुनि जिमि पासन ॥
 निरदय करम अमित तुम कीने , निर-अपराध-जनन दुख दीने ।
 हिंदू मुसलिम सिक्ख ईसाई , करहिं बिरोध तोर सब भाई ॥
 प्रजा जासु दुख महँ रहै , सो नृप नहिं भल आहि ।

सासक सोइ सराहिये , प्रजा सराहत जाहि ॥२२॥
 सासक सबल दमन तब कीना , माँगत दान दंड जनु दीना ।
 मानहु जाचत भिच्छु अहारा , गृहपति देवत लकुट-प्रहारा ॥
 अमृतसर नगरी सुभनामा , पावन परम सतत सुखधामा ।
 जहँ गुरु रामदास करि डेरा , अकबर-भूप धरम-हित प्रेरा ।
 जहँ जमत्रासहरन हरिमंदिर , तुलना जासु नाहिं जग अंदर ॥
 अमरावति-सम भूतल सोहै , निज सुख-संपति जनमन मोहै ॥
 बाग तहाँ इक जलयाँ-वाला , गौर-सुजस-पट दूसन काला ।
 डायर तहँ फायर करि दीना , निर-अपराध-जनन-बध कीना ॥
 बढ्यो कोप जनता-हिये , भये बिबिध उतपात ।

जहाँ तहाँ जुवकन कियो , कछु गोरन कर घात ॥२३॥
 दमन-नीति सासक दृढ़ कीनी , समर-नियम-घोसन-मति दीनी ।
 देस-भगत डारे बहु कारा , दियो अनेकन देस-निकारा ॥

अबला-बाल-वृद्ध सब लोक , लरहिं देस-हित सब तजि सोक ।
 अत्याचार तिन दारुन कीने , नीति-बिचार सकल तजि दीने ।
 पै नहिं दमन चलत बहुकाला , होय नृसंस-मनुज-मुख काला ।
 आंगल - राजसचिव घबराने , बिसम परिस्थिति देखि डराने ॥
 परामरस नृप कहँ तिन दीना , भारत-हित चाहियत कछु कीना ।
 सासन महँ कछु करहु सुधारा , जासों होय रार-निपटारा ॥

आंगलपति भारत पठ्यो , तब निज राजकुमार ।

ॐ आय तुरत घोसित किये , तिन कछु राजसुधार ॥२४॥
 ख्रिस्ट अबद उन्निस सत बीसा , नागपूर जनता-हिय-ईसा ।
 मिले परस्पर कांग्रेस माहीं , कहत सुधार न अभिमत आहीं ॥
 राजसन्नु-स्वागत तिन रोका , प्रकट कियो निजहिय कर सोका ।
 जुग बिचार मानस धरि गांधी , असहयोग-कारज मति बांधी ॥
 प्रथम बिचार खिलाफत केरा , दूजा प्रस्न पंचनद केरा ।
 बैसराय सन बात चलाई , प्रजा-बिपद तुम टारहु भाई ॥
 जासु राज जनता दुख पावै , सो नृप किमि सुख-संपति पावै ।
 सुभ सम्मति तिन नहिं चित कीनी , तब मोहन चेतावनि दीनी ॥

मीत देउ अधिकार तुम , उचित प्रजाजन केर ।

नतरु त्याग-सहयोग कर , देउँ निदेस अदेर ॥२५॥
 प्रभुतामद मदिरा - सम जाना , सेवन-मात्र मनुज बौराना ।
 मोहन - मत दीनो ठुकराई , दमन-नीति तिन प्रबल चलाई ।
 प्रजाजनन गांधी तब टेरा , नृपसन असहयोग प्रति प्रेरा ।
 निसक्रियरोध-सरनि बतराई , हिंसा-बिनु सुराज जिमि पाई ॥

ॐ १९१६ के सुधार, जो Montague-Chelmsford Reforms के नाम से प्रसिद्ध हैं ।

सुखित बसैं भारत-जन सारे , टरहिं सकल दुखसंकट भारे ।
 वस्तु बिदेसि तजहु सब भाई , देस-बिभव जासों बचि जाई ॥
 चरखा - चक्र - सुदरसन धारी , बसन-बिदेसि-अरि देव पदारी ।
 कचहरि-कालिज-कौंसिल केरा , त्रिविध बायकाट तिन प्रेरा ॥

आंदोलन भारी मच्यो , सकल देस महँ धाय ।

बसन - बिदेसी - होरिका , करहिं लोक अति चाय ॥२६॥
 गांधी बचन मानि सब लोका , त्याग अनेक करहिं तजि सोका ।
 छात्रजनन विद्यालय त्यागे , कचहरि छाँड़ि वकीलहु भागे ॥
 कौंसिल-त्याग सदस्यन कीना , जन-सेवाव्रत महँ चित दीना ।
 चरखा सुधर सुदरसन चाला , बसन बिदेसि भयो बदहाला ॥
 भाखा - भाव - ग्यान - परिधाना , तजन बिदेसि धरम निज माना ।
 आरज मुसलिम अरु क्रिसताना , देसबंधु निज सोदर जाना ॥
 समर सुराज जुटे सब लोका , तन-मन-धन सन तजि सब सोका ।
 सासक दमन कठिन अति करहीं , पै नहिं वीर बचन सों टरहीं ॥

सकल जातना सहत हैं , देसभगत धरि धीर ।

कबहुँ सत्रु कहँ देत नहिं , मन-तन सों कछु पीर ॥२७॥
 चारदौलि - गंतूर - प्रदेसा , जिन महँ कर-निसेध उपदेसा ।
 चिंतामगन सोउ दिन-राती , पाय कबहुँ मोहन सुभ पाती ॥
 हम पावहिं सुभ समर-सुभागा , देस-धरम हित कछु करि त्यागा ।
 जननी-जनमभूमि कर सेवा , करि अब लहहिं वीरगति-मेवा ॥
 मनुज बिचार करत कछु औरा , विधिकरलिखित होय कछु औरा ।
 सत्याग्रह - संगर सुखदाई , त्रिभुवन महँ निज धाक बिठाई ॥
 पसुबल सन आतमबल भेरा , चकित मनुज-सुर-किन्नर हेरा ।
 अस विधि चलत समर सुखदाई , खबर अभद्र गांधि तब पाई ॥

चौरी-चौरा थान इक , अमित अमंगल नाम ।

जहाँ जाय निसफल भयो , सबल सत्य संग्राम ॥२८॥
 सत्य समर कर निपुन सिपाही , जानत निज करतब बस आही ।
 करत नृसंस निदुर अतिबारा , मानहिं वीर अमिय-रस-धारा ॥
 सत्य-प्रेम कर गहहिं अधारा , परहित लागि सरबस तिन वारा ।
 रिपुसन करत मनुज जदि कोषा , निसफल चहत प्रेमपन रोषा ॥
 राजपुरुस निरदय तिहि थाना , करम कठोर करहिं मनमाना ।
 तहँ कछु जुवक रहे अभिमानी , चलन न देयँ अनय मनमानी ॥
 राजपुरुस कीनो अपमाना , तिन प्रतिसोध-हेत प्रन ठाना ।
 पुलिस-अवास अनल तिन लाई , कछुक दिये भट बीच जराई ॥
 समाचार कटु पाय कै , भयो गांधि चित खेद ।

समर सत्य कर थगित तिन , कियो सहित निरवेद ॥२९॥
 समर सत्य कर कठिन अपारा , तासु नियन्त्रन प्रथम अधारा ।
 बिनु अनुसासन जिन रन कीना , बिजय सुफल कबहूँ नहिं लीना ॥
 बिधि-बस बिजय पाय मति-अंधा , सफल करत नहिं सासन-धंधा ।
 अस बिचार निज मन तिन कीना , सेवक-जन-सिच्छन चित दीना ॥
 समर थगित लखि सासक हरसे , पांथ तृसित जिमि बारिद बरसे ।
 मुसलिम-चित्त खेद अति भारी , बाजी जीति गांधि पुनि हारी ॥
 आरजजन कर नासी आसा , तदपि तज्यो नहिं नायक पासा ।
 बिपद-काल कृतधन जन जोई , आपुन मीत तजत ध्रुव सोई ॥
 सुजन तजत नहिं निज सखा , पाय बिपद बिकराल ।

संपति सम भोगैं बिभव , होयँ बिपद महँ ढाल ॥३०॥
 सासकजन अबसर सुभ जाना , मोहन पकरि न्याय-गृह आना ।
 राजद्रोह - अभियोग चलाबा , न्याय करन कर ढोंग रचावा ॥

न्याय-अधीस कहत तुम गांधी , बिप्लव करन हेत मति बाँधी ।
 तासों उचित दंड अब तोही , करतब जानि छमब तुम मोही ॥
 जानहुँ तुव चरित्र अवदाता , साजन-जन-मानस-सुखदाता ।
 सत्य-अहिंसा सन तुव प्रेमा , विस्व-प्रेम कर अति सुभनेमा ॥
 पै नृपद्रोह काज तुम कीना , चिंतित अति सासक गन कीना ।
 सासन-हित अब तुव करि सासन , पूरन करहुँ भूप-अनुसासन ॥
 विनय सहित मोहन कह्यो , मीत करहु जनि सोच ।

निज करतब सों टरत हैं , नर कायर मति-पोच ॥३१॥
 देस-धरम-हित जस भल चीना , ता विधि मीत करम हों कीना ।
 नहिं मम बैर काहु सन भाई , सकल जगत कर चहहुँ भलाई ॥
 पै दुख देखि देस कर मोरा , मानस होय विकल नहिं थोरा ।
 हेम-चटक भारत जग जानै , गौरव गत-इतिहास बखानै ॥
 आंगलजन सोसन अस कीना , कीन अकिंचन अरु बलहीना ।
 नरकंकाल फिरहिं चहुँ ओरा , अन्न-अभाव करहिं बहु सोरा ॥
 सासक जन नहिं सुनत पुकारा , देवत कस्ट अमित कर द्वारा ।
 विद्या-धरम-बनिज-बिबहारा , मलियामेट सकल करि डारा ॥

सब तै दारुन कस्ट अस , लीन सक्ति सब छीन ।

धरम-सभ्यता-संस्कृति , कीने निज-आधीन ॥३२॥

आपुन राज जदपि दुख भारा , नीम समान कटुक सुख-सारा ।
 पर कर राज जदपि सुख भारा , भाजन-हेम गरल जनु डारा ॥
 कैम्बल बैनरमैन उदारा , गौरवमय अस बचन उचारा ।
 *पर कर राज जदपि सुखखाना , गनिय न ताहि सुराज समाना ॥

*Good Government is no substitute for self-government.

—Hury Campbell Bennerman

अस मन धारि जतन हैं कीना , प्रन सुराज-थापन कर लीना ।
देस-भगति पातक जदि जानौ , जन-सेवा अपराध जु मानौ ॥
निरदय-सासन कर प्रतिरोधा , तुम कहँ देत अनय कर बोधा ।
मो कहँ उचित दंड तुम देऊ , निज स्वामी सन आसिस लेऊ ॥

न्यायाधिप करतब-बिबस , न्याय-नियम-अनुसार ।

सट हायन कारा दई , कचहरि माँझ उचार ॥३३॥

आग्या स्रवन करत सब लोका , भये मगन जनु सागर सोका ।
पै नहिं गांधि चित्त कछु ग्लानी , समरस सुजन लाभ अरु हानी ॥
+सविता उदय-काल जिमि राता , अस्त समय तिमि देखिय आता ।
राघव सुनि अभिसेक-सुवाता , भयो न नेकु हरख-मदमाता ॥
सुनि पुनि राम जनक कर सासन , कीन मुदित स्वीकृत निरबासन ।
तिमि मोहन थिरमति तहँ ठाढ़ा , बढ़त विपद साजन बल गाढ़ा ॥
जा कर प्रभु पै होय भरोसा , सो नहिं करहि मनुज पै रोसा ।
धीरज धरि निज करतब करही , तप अरु त्याग-सरनि अनुसरही ॥

गांधी तब लोकन कह्यो , मानहु मम अनुरोध ।

खादि-ऐक्य बढ़ती करौ , तजि मतभेद-बिरोध ॥३४॥

धरम-देस-हित जावहुँ कारा , सेवा-धरम पुन्य-व्रत धारा ।
सासक स्वारथरत जदि मारै , सेवक नहिं प्रतिसोध विचारै ॥
मम हित करहु न कहँ हरतारा , मो पै कीन कृपा करतारा ।
मम हित राजभवन-सम कारा , करहि अबसि मम स्रम-परिहारा ॥
बसहिं मीत मम कारा माहीं , बाहिर रहन मोर मत नाहीं ।
खादि-प्रचार करहु चित लाई , प्रेम-बिकास करहु नित भाई ॥

† सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।

उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमने तथा ॥ (पञ्चतन्त्र)

कारज करहु मीत मिलि सोई , जासों देस-प्रगति सुभ होई ।
तासु निदेस सीस तिन कीना , सांत रहन थिर मानस कीना ॥

कारागृह गांधी कियो , देवालय - सम पूत ।

सांत चित्त सोभित भयो , जस समाधि अबधूत ॥३५॥

प्रभु-अर्चन प्रातः नित करई , गीतापाठ माहिं चित धरई ।
चरखा-जग्य चलत दिन-रैना , बन्दिन सन बोलत मृदु बैना ॥
परिमित राखि अहार-बिहारा , मोहन आपुन आप सँवारा ।
तामिल कठिन गिरा सिख लीनी , तप-संपति संचित तिन कीनी ॥
*ग्रन्थन कियो निज जीवन-सारा , सत्य-प्रयोग-ग्रन्थ सुख-सारा ।
आत्मकथा संग्या तिहि दीनी , रसिक-हृदय-मोहक रसभीनी ॥
भारत कर रचना करि व्यासा , त्रिभुवन महँ निज सुजस प्रकासा ।
धरमनीति कर कीन बिबेका , करम करै नर किमि तजि टेका ॥

आत्मकथा गांधी तथा , ईस-कृपा सुभ पाय ।

विरचि सत्य अरु प्रेमकर , मरम दियो समुझाय ॥३६॥

भानु छिपे जिमि स्वापद-जूथा , फिरहिं विपिन निज बांधि बरूथा ।
तिमि गांधी कारागृह गौने , प्रकटे दुष्ट विचार धिनौने ॥
सत्य-प्रेम-सेवा कर थाना , लियो असत्य-बैर-मदमाना ।
सत्रु-समन हित संचित कीना , भयो सुवल भ्राता-द्विती-लीना ॥
अंत खिलाफत कर जब भयऊ , मुसलिम-हिय-हुलास तब गयऊ ।
आंगल करि सडजंत्र अपारा , बैर-सरित-मुख निज सन टारा ॥
बैर नदी अस बढ़ी भयङ्कर , कीन कुहाट दृश्य प्रलयङ्कर ।
मुसलिम तहँ हिंदुन कहँ मारा , लूटे धन-संपति घर बारा ॥

* महात्मा जी की आत्मकथा, जिसका अंग्रेजी नाम 'My Experiments With Truth' अर्थात् सत्य के प्रयोग है ।

समाचार अस पाय कै , गांधि भयो दुखलीन ।

इकिस दिन उपवास करि , प्रायसचित तिन कीन ॥३७॥

अस उपवास करत इक बारा , मोहन रुगन भयो अति भारा ।

कर्नल मैडक नाम सुबैदा , जानत सकल अगद कर भेदा ॥

औसधतंत्र कर साधन रूरे , तासु अरुज हित कीने पूरे ।

ता कर बचन मानि सरकारा , गांधी कहँ दीनो छुटकारा ॥

व्याकुल सकल भये तव लोक , करत गांधि दुरबल लखि सोक ॥

सुनि उपवास-खबर सब नेता , देहलि-नगर भये समवेता ॥

ऐक्य-समाज तहाँ तिन कीना , गांधी कहँ आस्वासन दीना ।

एकता-काज कमर हम बांधी , तुम उपवास तजहु अब गांधी ॥

जीवन तुव अनमोल है , जनता-हित मतिमान ।

रच्छन ता कर उचित है , जनता-थाति-समान ॥३८॥

आग्रह मानि गांधि तिन केरा , तजि उपवास तिनहिं अस प्रेरा ।

कारज करहु बन्धु तुम सोई , जासों प्रेम परस्पर होई ॥

प्रेम बिना नहिं मिलहि सुराज , प्रेम-बिहीन सकल नहिं काज ॥

आरज-मुसलिम करि सुभ प्रेमा , लहहिं देस-जनता कर छेमा ॥

पुनि सन उन्निससत-चौबीसा , गांधि भयो कांग्रेस कर ईसा ।

*बिल्बगाँव भासन तिन दीना , राजनीति-पथ-दरसन कीना ॥

मोटिलाल - चितरंजन - दासा , करहिं देस-हित अमित प्रयासा ।

कौंसिल-गमन-सुमति तिन दीनी , मोहन सोचि प्रमानित कीनी ॥

द्विसद-दुरग महाँ जाय कै , करहु प्रबल संघर्ष ।

हौं पूरबबत चालिहौं , सेवा - काम सहर्ष ॥३९॥

आसिस लहि तब मोहन केरी , कौंसिल-गमन कियो बिनु देरी ।
 तहँ तिन जाय सज्यो दल एकू , लहन सुराज जासु सुभ टेकू ॥
 कौंसिल कर भांडा सब फोरा , आंगलजन-सुधार-मद तोरा ।
 संगर असहयोग कर भारी , गांधि कियो प्रतिरोध बिचारी ॥
 कौंसिल-गमन संग अब सोऊ , भयो समाप्त कहहिं जन जोऊ ।
 तिन कहँ ग्यान नहिन अस कोई , उत्तम काज नस्ट नहिं होई ॥
 गुप्तसरित् द्विति-अन्तर धावै , अबसर लहि पुनि भूतल आवै ।
 असहयोग तिमि रूप बटावा , सुभ सुराजदल नाम धरावा ॥

मोहन तब इक बरस लगि , मौन-नीति गहि लीन ।

दलित-जाति-उपकार हित , राजनीति तजि दीन ॥४०॥
 खादी कर संतत परचारा , करन तथा हरिजन-उपकारा ।
 मोहन अस निज करतब चीना , ता कर साधन महँ चित दीना ॥
 जा कहँ कहत नीच सब हिंदू , तिन कहँ कीन जाति-सिर-बिंदू ।
 हरिजन-पद दीनो सुखदायी , बंधन हरि सिंगरे दुखदायी ॥
 मंदिर महँ परबेस करावा , उच्च-वरन-सह भोज खिलावा ।
 हिंदुन कहँ दीनो उपदेसा , तुम हित दलित सहे बहु क्लेसा ॥
 समता कर देवहु अधिकारा , तबहि सुराज लहहु सुखसारा ।
 हरिजन पग समाज कर जाना , पगबिहीन नर पंगु समाना ॥

हरिपदपङ्कज ते प्रकट , भई सुरसरी पूत ।

हरिचरनन सों ऊपजे , हरिजन जाति-सपूत ॥४१॥
 कांग्रेस सुभ कारज अपनायो , दलितन प्रति सदभाव जनायो ।
 जदपि सुजन सुभ कारज करहीं , दुरजन दोस ताहि महँ धरहीं ॥
 जाति-सुधार काज सुखदायी , धरम-अन्धजन कहँ दुखदायी ।
 मुसलिम अहित जानि निज केरा , निज मुख कांग्रेस सन तब फेरा ॥

दृढ़ बिचार साजन जब करहीं , कस्ट-कलेस नहिन चित धरहीं ।
इत-उत मे भारी उतपाता , हरिजन-काज न पै छति पाता ॥
सरधानंद आरज सन्यासी , बैदिक-धरम-सरनि परकासी ।
जातिहूरीति-सुद्धि कर नेता , सत्त्व-अभय-सदगुन-समवेता ॥
रोगतलप देहलि परो , तासु देह कर नास ।

*करि रसीद दुरजन भयो , साजन-जन-मन-त्रास ॥४२॥
गांधी अकनि तासु बलिदाना , मन महँ सोक अपरिमित माना ।
पुनि गुनि सकल ईस कर माया , निज सुधार-कारज अपनाया ॥
सात अधिक उन्निस-सत-बीसा , ख्रिस्ट अबद आंगल-अबनीसा ।
राजसुधार हेत कछु साजन , उच्चपदस्थ प्रीति कर भाजन ॥
सैमन नाम सुजन करि नेता , सासन-तंत्र-सकल-तत-बेता ।
भारत महँ प्रेसित तिन कीने , कांग्रेस मिलन सुअवसर दीने ॥
भाखत गांधी मीत तुम साजन , निज सासक-प्रत्यय कर भाजन ।
पै नहिं तुम कहँ कछु अधिकारा , भारत-जनमत-प्रकटन वारा ॥
भारत-प्रतिनिधि राखऊ , निजमंडल द्वै तीन ।

जासों प्रत्यय हमहिं सुभ , होवै नीति - प्रवीन ॥४३॥
गांधी कर अस हितकर बानी , तिन नहिं गरब-दोससन मानी ।
तब गांधी हरताल-बिचारा , दबकृसानु इव कीन पसारा ॥
सैमन-बन्धु जितै जित जाई , कृस्न-धुजा तित तित फहराई ।
जनता कहत लौटि घर जाऊ , काज इहाँ तुमरो नहिं काऊ ॥
जन-बिरोध लखि सासक चौंके , लकुट देखि जिमि कूकुर भौंके ।
बल-प्रयोग जनता पै कीना , नीति-बिचारन कछु मन चीना ॥

* स्वामी श्रद्धानन्द का घातक अब्दुरशीद ।

† Sir John Simon—साईमन कमीशन के अध्यक्ष ।

जिमि-जिमि बल-प्रयोग इत बाढ़ा , तिमि-तिमिजनउमाहसिरकाढ़ा ।
लजपतराय पंचनद - नायक , लकुट-प्रहार सहे जस सायक ॥

धीर-धुरन्धर धीर धरि , समर पाप सन कीन ।

काय सिथिल ब्रन सन तऊ , लोह सत्रु सन लीन ॥४४॥

मरनकाल गरजन तिन कीना , ब्रिटिसराज-दुर्दिन अब चीना ।
बिकल प्रजा राखत नृप जोऊ , निजहित कूप खनत सठ सोऊ ॥
भई गिरा ता कर द्रुत पूरी , सैनन सीस परी बहु धूरी ।
मोतिलाल इक रच्यो बिधाना , कांग्रेस तिहि प्रमान करि जाना ॥
ब्रिटिस राज कहँ अस मत दीना , उभय पच्छ कर हित हम चीना ।
उपनिवेश - सम देय सुराजू , साधहु मीत उभय-पख-काजू ॥
एक अबद अन्तर महँ भाई , नतरु छिरै पुनि घोर लराई ।
संगर सत्य-अहिंसा केरा , चलिहै भारत महँ बिनु देरा ॥

बैसराय इरविन कह्यो , नेता सकल बुलाय ।

करिहौं जतन सहाय हित , पै प्रन दियो न जाय ॥४५॥

मकडानल समदल कर नेता , राजनीति-आसय कर वेता ।
ब्रिटिसराज कर सचिव प्रधाना , लोहा जासु सकल जग माना ॥
प्रेरहुँ ताहि कछु देय सुधारा , मन-इच्छित जस होय तुमारा ।
गांधि कह्यो अस टारन-नीती , मो कहँ भाव न असुजन-रीती ॥
कहहु बिसद जो कछु मन तोरे , सरल बचन भावहिं मन मोरे ।
उपनिवेश-सम देउ सुराजा , बिनुबिलम्ब नहिं बिगरत काजा ॥
पूरन हम सुराज नतु लैहैं , देस-तजन-दुख तुम कहँ दैहैं ।
सो तुम मीत मानि मम बाता , करतब करउ छाँड़ि बलघाता ॥

पै इरविन मान्यो नहीं , गांधि-बचन सुखदैन ।

रोग-बिबस नर कहँ नहीं , मिस्ट अगद सुख-ऐन ॥४६॥

गांधी निज बन्धुन ढिग आई , बात कही सिगरी समझाई ।
 आंगल-पति कर मत अस चीना , भारत-हित कछु चहत न कीना ॥
 करिहै काज सकल बिधि सोई , आंगल-जन-हित जा मधि होई ।
 ब्रिटिस राजनैतिक दल जेते , भारत-हित इक सम खल तेते ॥
 तासों तुम अब तजि सब आसा , निज साहस कर करहु बिकास ।
 निज साहस बल जे अधिकारि , ते नर चढ़हिं उच्चतम ठाई ॥
 जे नर करहिं अबर भरवासा , नासहिं सकल सफलता-आसा ॥
 निज साहस मानव गति पावै , पर अवलंब पराजय पावै ॥

हम कहँ जाचत अब भये , बरस पाँच चालीस ।

पै सुराज दीनो नहीं , आंगल - देस - अधीस ॥४७॥
 जाचन करम अहहि अति नीचू , जाचन ते भल जानहु मीचू ।
 जाचक जन खोवत निज माना , मान गये नर मृतक समाना ॥
 सो अब मिलि सोचहु कछु रीती , पावहि अंत जथा सठ-नीती ।
 जनमसिद्ध अधिकार हमारो , बीनि सुराज दियो दुख भारो ॥
 अनुचित लाभ ग्रहन करि मानव , करत बिहार जथा खल दानव ।
 ता कर-समन द्विविध हम जाना , पसुबल आदिम आयुध माना ।
 सख दुतीय प्रेम कर भ्राता , अहहि सकल बाधा-दुख-त्राता ॥
 पसुबल छनिक सफलता देई , प्रेम-प्रभाव सतत सुख लेई ।

पसुबल सों रिपु बस किये , रिपुता छाँडत नाहिं ।

प्रेम-मंत्र सों बस किये , तजत मित्रता नाहिं ॥४८॥
 लकुट प्रहार दलित अहि जोऊ , बहुरि डसत अवसर लहि सोऊ ।
 बीन मधुर-सुर सन बस कीना , होय सहज अहि दसन-बिहीना ॥
 बृक-नाहर सम स्वापद कूरा , हरिन समान होय मृदु पूरा ।
 प्रेम - प्रभाव तपोबन माहीं , रिपुबल-समन प्रेम-सम नाहीं ॥

नीति-निपुन जनकर अस भासन , भय ते अधिक प्रेम कर सासन ।
 गुर सन होवत नर बस जोऊ , ता कहँ कत बिस देवत कोऊ ॥
 समय-नीति पुनि चित्त विचारी , हौँ अस कारज-विधि निरधारी ।
 सागर-सम समरथ रिपु केरी , बूँद-समान तुच्छ निज हेरी ॥

असहयोग कर अस्त्र गहि , आतमबल कर आस ।

अरि सों हौँ अब जूझिहौँ , काटि सकल भय-पास ॥४९॥
 सुभ सन उन्निष-सत-उनतीसा , मास दिसम्बर तिथि इकतीसा ।
 लवपुर महुँ काँगस-अधिवेशन , आय जुटे नेता बहु देसन ॥
 बीर जवाहिर गुनगनधामा , पूत विचार चरित अभिरामा ।
 मोतीलाल-तनय नयनागर , प्रतिभावान अखिल गुनसागर ॥
 करमनिस्ट अनुसासन-नेमी , दीनदुखीजन-हित-कर प्रेमी ॥
 भारतभगत गांधि - पटचेला , भाव करम कर सुन्दर मेला ।
 कृसक हृदय कर भूप-समाना , जनता निज सोदर सम जाना ।
 ताहि सभापति पद तिन दीना , केहरिनाद तुरत तिन कीना ॥

आंगलपति तुमसुनहु अब , तुव सासन दुख पाय ।

सांप्रत पूर्ण सुराज हित , लरिहँ हम सतिभाय ॥५०॥
 तीर इरावति पावन थाना , भारत-केतु विमल फहराना ।
 हिंदू-मुसलिम-सिक्ख-ईसाई , अहहिं परस्पर सोदर भाई ॥
 देस-धुजा अस बात बताई , लोहित-सेत-हरित दरसाई ।
 सकल सभा धुजबंदन कीना , पूर्ण-सुराज-ग्रहन ग्रन लीना ॥
 केहरि-नाद जवाहिर कीना , आंगल-पति कहँ चैलंज दीना ।
 अबधि नियत अब तोर बिहानी , माँग हमारि नहीं तुम मानी ॥
 सो अब हमहिं दोस नहिं देऊ , अंतिम माँग स्रवन करि लेऊ ।
 लेवहिं अब अधिकल निज राजू , उपनिवेस पद सन नहिं काजू ॥

सो तुम करहु प्रमान अब , मोर माँग सह ग्रीत ।

नतरु गहहि अधिकार निज , धरमजुद्ध कर रीत ॥५१॥

भासन सुनि मोतीसुत केरा , समुद सभाजन तिस प्रति हेरा ।

कहहि जवाहिर कुल-अवतंसा , उज्जल कीन सकल निज बंसा ॥

अहहि सुराज - नाव - कनधारा , नीति-निपुन लै जावहि पारा ।

कस्ट-पयोधि ज्वार अब आवा , दारुन दमनदहन जस दावा ॥

फँसी भँवर महँ भारत नैया , राखहि अद्वत जवाहिर भैया ।

कमलापति कमलापति-तूला , हरहि हमार सकल हिय-सूला ॥

कमलापति मधु-कैटभ मारे , अमृत-चोर दानव बलवारे ।

भारतस्त्री आंगल हरि लीनी , लेवहि अबसि जवाहिर छीनी ॥

जनकसुता राघव जथा , हनि दसकन्धर लीन ।

गौर-हस्तगत स्त्री तथा , लेय जवाहिर छीन ॥५२॥

देस-भगत जन बीर , गांधिचरितकरिअनुसरन ।

पायँ बिजय रनधीर , असहयोग करि पापसन ॥५३॥



षष्ठ सोपान

मनुज सुतन्त्र सुरग-सुख लहही , नर परतन्त्र निरयदुख दहही ।
नर सुतन्त्र पावत जग माना , पर-अधीन पावत अपमाना ॥
मनुज सुतन्त्र जदपि धनहीना , आदर-जोग गुनीजन चीना ।
पर-अधीन जन संपतिसाली , पाय न मान जद प गुनमाली ॥
सिंह सुतन्त्र फिरत वन माहीं , ताहि समान अवर पसु नाहीं ।
मन-इच्छित स्वापद तहँ मारै , निरभय नित करिभाल बिदारै ॥
तेज-प्रभाव लहत सोउ माना , मृगपति नाम सकल जग जाना ।
*कूकुर कनक - अभूखनधारी , पर-अधीन गति दीन बिचारी ॥

सरब सुखद स्वाधीनता , करत दुखन कर नास ।

अगद जथा संजीवनी , हरत देह - दुखत्रास ॥१॥
सूर सुतन्त्र रहहिं जग माहीं , कादर परबस सतत लखाहीं ।
वारन इव नर मान-समेता , भोग लहत सडरस-समवेता ॥
धीर-प्रकृति मन-इच्छित पावै , चाडु बचन नहिं कबहुँ सुनावै ।
कादर-कूकुर एक सुभाऊ , मान-बिचार रखत नहिं काऊ ॥
जो जन देत ताहि इक टूकर , ता कहँ उदर दिखा कर ।
कादर जन तिमि सहि अपमाना , मोद मनावत सुख लहि नाना ॥
बीरन कहँ अपजस-अपमाना , सन्त गनहिं सत मरन समाना ।
मान-सहित सुठि मरन सुहावा , मान-बिहीन सुरग नहिं भावा ॥

* 'द्युति सैहीं किं श्वा धृतकनकमालोऽपि लभते ।' (पञ्चतन्त्र)

मान-सहित जीवन जथा , अहहि अमिय कर पान ।

मान-रहित जीवन जथा , बिसम गरल कर पान ॥२॥

भारत देस-मुकुटमनि सोहा , धरम-बिभव सन जग-मन-मोहा ।
 प्रकट भये निगमागम जा थल , धृत अवतार जगतपति जा थल ॥
 जिनवर बुद्ध जहाँ तनु धारा , कीनो अमित लोक-उपकारा ।
 संत महाजन जब तब आई , धरम-करम-मरजाद निभाई ॥
 भारत कहँ ६।गुरु-पद दीना , इहपरलोक सफल निज कीना ।
 भई कला कर उन्नति भारी , संपति प्रचुर न जात सँभारी ॥
 भारत-समर भयो भयकारी , पांडु-तनय कुरुसुनु मँभारी ।
 भारतस्त्री सिगरी तिन नासी , अवनति-रीति सकल परकासी ॥

धरम करम अरु सिलपकर , भयो चरम तब हास ।

भारतजन निरधन भये , छुधा-पाप कर ग्रास ॥३॥

जब जब धरम-पतन जग होई , तब तब पातक उन्नति होई ।
 बाढ़े पाप चरित कर नासा , चरितनास किमि उन्नति-आसा ॥
 भारतजन भूले परमारथ , ग्रहन किये आलस-बल-स्वारथ ।
 अबसर पाय जवन करि धावा , पुन्यधरा निज पैर जमावा ॥
 जगतबिदित दिल्लीप पिथौरा , साँगा अरि हित अयस-हथौरा ।
 अमित प्रयास देसहित कीने , कुटिल दैव निसफल सब कीने ॥
 बीर प्रताप - सिवा - दसमेसा , सहे अपार देसहित बलेसा ।
 पै नहिं गत-भारत-स्त्री लौटी , कारज होय न किसमत खोटी ।

जवनराज निरबल भये , तब आये गौरंग ।

निज अधीन भारत कियो , निपट निराले ढंग ॥४॥

भेदनीति-आयोजन कीना , ता महँ निज स्वारथ तिन चीना ।
 आरज-जवन परस्पर फोरे , निज स्वारथ-साधक भे गोरे ॥

करि सडजंत्र राज हथियाने , न्याय-बिचार न मन महँ आने ।
 अवध-नागपुर-भांसी-सितारा , दासता-पास सबन गर डारा ॥
 महाराष्ट्र - सिंहासन छीना , सिक्खन कहँ आपुन बस कीना ।
 मुसलिम अरु रजपूत मराठा , दहहिँ सतत कोपानल-भाठा ॥
 असटादससत - सप्तपचासा , ख्रिस्ट अबद उपजी नव आसा ।
 भारत महँ बाज्यो रनडंका , उपजी गौर-हृदय महँ संका ॥

ज्वालामुखि-बिस्फोट सम , भभकि क्रान्ति कर आग ।

मेरठ लखनउ कानपुर , दब-कृसानु जनु लाग ॥५॥
 नाम बहादुरसाह दिलीसा , मुगलबंस अंतिम अबनीसा ।
 महाराष्ट्र-सासन अधिकारी , नाना नाम अटल-व्रतधारी ॥
 ताँतिय नाम महा - रनधीरा , दुर्गा सम लछमी अति बीरा ।
 देसभगत तिन कहँ करि नेता , आंगलजन मारे बहु खेता ॥
 पै नहिँ तासु साथ बिधि दीना , सत्रुजनन कहँ बिजयी कीना ।
 तिन दिलीस निरबासित कीना , ताँतिय कहँ फाँसीबध दीना ॥
 नाना भागि गयो नयपाला , लछमी भसम भई रनज्वाला ।
 देस-भाग पलटा अस लीना , दासभाव-बंधन दृढ़ कीना ॥

कूटनीति सन गौर तत्र , बिबस देसजन कीन ।

सखाभाव दिखराय कै , धर्म-अरथ हरि लीन ॥६॥
 सिच्छा-क्रम नव निरमित कीना , निजहित-साधन महँ चित दीना ।
 आंगलजन - साहित - बिगयाना , पढ़िपढ़ि छात्र कुमति लहि नाना ॥
 धर्म-करम-मरजादा त्यागी , होय परम पर-संस्कृति-रागी ।
 तजि कै सकल देस-अभिमाना , रहि परतंत्र मोद तिन माना ॥
 भाखा-भाव-भेख निज त्यागे , सरनि-बिदेसि संग अनुरागे ।
 गीता तजि बैबल सन प्रेमा , पढ़त सेक्सपियर करि नेमा ॥

ब्रह्मचरज - तपदान बिहाई , भोग-विलास लिये अपनाई ।
बिगतमान जासों कछु पावैं , दिवस-निसा ताकर गुन गावैं ॥

छुद्र जदपि अंगरेज-जन , भारतीय गुन - ऐन ।

तदपि उच्च पदवी सबै , लहहिं गौर दिन-रैन ॥७॥

धरम-प्रचारक आंगल आई , सबल सहाय राज कर पाई ।
धरम-बिहीन हिंदु बहु कीने , तिनहिं अपार प्रलोभन दीने ॥
सिलप-कला भारत कर नासी , मंचस्टर कर सिलप बिकासी ।
धन-संपति सिगरी हथियाई , भारतहित तजि फूट-लराई ॥
दीनदसा लखि भारत केरी , कह्यो यतीस दयानंद टेरी ।
जदपि सदोस सुराज सुहावा , परसासन-सुख मोहि न भावा ॥
होय सुराज सदा सुखमूला , परसासन जानिय हिय-सूला ।
निज संस्कृति-भाखा-परिधाना , अहहिं सुसासन-मूल निदाना ॥

इक समाज थापन कियो , सुन्दर ललित-ललाम ।

देस-धरम-उपकार हित , आरज कीनो नाम ॥८॥

सत्य अरथ करि धरम प्रकासा , मतबिभेद कर कीन बिनासा ।
दलित-बन्धु पुनि तिन अपनाये , जवन अनेक धरम पथ लाये ॥
*ईश्वर - केसव - मोहनराया , भारतहित करि अमित उपाया ।
देसभगति-परिचै निज दीना , जातिसुधार-जतन बहु कीना ॥
असटादससत अधिक पचासी , कांग्रेस नाम समिति परकासी ।
ह्यूम नाम अंगरेज उदारा , भारतहित निज हिय तिन धारा ॥
कतिपै भारतीय संग लीने , देस-सुधार मनोरथ कीने ।
देसभगत-जन होय प्रधाना , सेवा-करम करहिं बिधि नाना ॥

✽ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन तथा राजा राममोहन राय—१९वीं सदी के बंगाल के प्रसिद्ध समाज-सुधारक ।

सासक - जन कहँ प्रेरहीं , तजि प्रभुता-कुबिचार ।

प्रजासंग हित करहु तुम , सासक-धरम बिचार ॥९॥

सासकजन प्रभुता - मदमाते , रहहिं रैन-दिन स्वारथ-राते ।

बैसराय इक करजन नामा , नीति-निपुन अतुलित बलधामा ॥

कुटिल दैव मति ता कर छीनी , बंगबिभाजन दुरमति-दीनी ।

जननी - जनमभूमि - अनुरागी , बंगजुबक निज संस्कृति-रागी ॥

लखि निज मातृभूमि-अपमाना , सासकजन-विरोध मन ठाना ।

आंगल-जाति बनिज कर प्रेमी , अरथलाभ-साधन कर नेमी ॥

तासों ता पर करन प्रहारा , वस्तुविदेसि-निसेध बिचारा ।

भारत-व्यापि भयो आन्दोलन , सासक-हिय-समता कर दोलन ॥

* बाल-पाल अरु लाल तहँ , नेता - पदवी लीन ।

नौ-सुदेसि-कनधार बनि , सुविधि संचालन कीन ॥१०॥

सवन सुदेसि-सपथ दृढ़ लीनी , आंगल-बनिज-हानि बहु कीनी ।

कति पै जुबक कोप तब कीना , जहँ तहँ बध गोरन कर कीना ॥

दारुन दमन-चक्र तब चाला , सासक कस्ट देयँ बिकराला ।

फाँसी - दंड अनेकन दीना , बंदीगृह अवरन धरि दीना ॥

कछुक जुबक निरवासित कीने , अवरन कर धन-घर हरि लीने ।

† कोंकन कर केहरि गुनधामा , बालगंगधर तिलक सुनामा ॥

जनमसिद्ध अधिकार हमारा , अहहि सुराज तासु ललकारा ।

सुनि तिहि निरवासित करि दीना , ब्रह्म-देस कारा-मधि कीना ॥

* बाल...लाल = महाराष्ट्र - केसरी बाल गंगाधर तिलक,
श्री विपिनचन्द्र पाल (बंगाली राजनीतिज्ञ), लाला लाजपत राय ।

† कोंकन = महाराष्ट्र का समुद्रतटवर्ती भाग ।

लजपतराय सुनामधर , नेता नीति-प्रवीन ।

भयो पंचनद - केहरी , देस-बहिर तिहि कीन ॥११॥

जिमि जिमि बढ़त कस्ट-सरिधारा , बढ़त जुबक-हिय उमग अपारा ।
 खर गेंद-देखहु द्विति मारा , उखरत पुनि लहि बेग अपारा ।
 कायर कस्ट पाय घबरावै , वीर-मनुज साहस बढ़ि जावै ।
 पाँच बरस पाछे रिपु हारा , देहलि महँ करि इक दरवारा ॥
 आंगल-नृप घोसित अस कीना , बंगबिभाग-कुमत तजि दीना ।
 सासक थगित दमन तब कीना , दंड-विधान सकल तजि दीना ।
 अस जनमत परभाव दिखावा , देसभगत-हिय मोद बढ़ावा ।
 संगठन सन कारज-सिधि होवै , फूट सकल मानव-बल खोवै ॥

लघु पिपीलिका संगठित , करहि नाग-संहार ।

फूट परे तिन कर करै , नाग समोद अहार ॥१२॥
 आंगल भेद-नीति अपनाई , फोरि लिये कछु मुसलिम भाई ।
 हम कहँ देउ पृथक निरवाचन , तिन कीनो अनुचित बरजाचन ॥
 नीति-निपुन तब तिलक बिचारा , आंगल कीन कुटिल-नय-वारा ।
 ता कर उचित करन प्रतिकारा , लखनउ संधि-पत्र रचि डारा ॥
 मुसलिम कर इच्छा करि पूरी , राखी देस-एकता रूरी ।
 जूरूप जुद्ध भयो अति भारी , जरमन अरु अंगरेज मँभारी ॥
 आंगल-हित भारतजन कीना , प्रतिफल तिन रौलट बिल दीना ।
 गांधी असहयोग तब कीना , ब्रिटिस-राज कहँ चैलंज दीना ॥

तिन सुराज-साधन गने , त्रिविध - ककार - बिराग ।

आरज-मुसलिम - संगठन , अरु खादी - अनुराग ॥१३॥
 असहयोग कर सफल प्रयासा , कीन बिफल आंगल-जन-आसा ।
 काल पाय मदिरामद जावै , प्रभुता-मद निसदिन अधिकावै ॥

सासक - जन सत्ता-मदमाते , प्रजा सतावत नाहिं अघाते ।
 आंगल करहिं हिंद कर सोसन , धन-बिबसाय-देस निज पोसन ॥
 बिनु सुराज सोसन किमि नासै , भारत-भागभानु किमि भासै ।
 कांग्रेस तब निसचै अस कीना , सुराज-पन्थ गहि लीना ॥
 सो करि बीर जवाहिर नेता , रावीतट लवपुर समवेता ।
 त्रिवरन-धुज सुन्दर फहरावा , लच्छ अखंड-सुराज बनावा ॥

गिरि सों उदगम पाय जिमि, सागर प्रति सरि धाय ।

तिमि सुतंत्रता-निम्नगा , सिंधु - सुराज समाय ॥१४॥
 बीर जवाहिर अरजुन-तूला , मोहन जिमि केसव सुखमूला ।
 कौरव इव सासक-जन जानौ , इरविन जरठ पितामह मानौ ॥
 कांग्रेस पांडव-रूप सुहाई , देवत निज अधिकार दुहाई ।
 कौरव जिमि पांडव-हक छीना , जनता-हक सासक हरि लीना ॥
 जिमि भारत कर संगर भारी , पांडु-तनय-कुरुवंस मँभारी ।
 भयो पवित्र कुरुखेत सुधामा , तिमि सासक-कांग्रेस-संग्रामा ॥
 अरजुन कर सारथि जिमि स्यामा , जननायक गांधी अभिरामा ।
 भारतजय माधव जिमि कीना , सत्यसमर जय मोहन लीना ॥

मास प्रथम द्विबिस तिथी , सन उन्निस-सत-तीस ।

प्रन लीनो स्वातन्त्र्य कर , जनता कोटि बतीस ॥१५॥
 गांधी निजकारजक्रम साधा , जस सुराज महँ होय न बाधा ।
 निखिल निसेध मादक द्रव केरा , परिवर्तन बिनिमय-दर केरा ॥
 धरनी-कर कर अरध-बिमोचन , सैन्य-कर कर पूरन-मोचन ।
 संगर-व्यय अनुचित अति भारी , राजपुरुष - बेतन छतिकारी ॥
 अरध-करन समुचित तिस केरा , या महँ हित भारत कर हेरा ।
 बसन-बिदेसि-रोधि-कर थापन , तट-बिपार भारत कहँ दापन ॥

जिन लहि राजनीति-बस कारा , तिन कर होय तुरत छुटकारा ।
गुप्तबिभाग पुलिस कर त्यागन , निज रूढ़ाहित आयुध माँगन ॥

बैसराय सम तिन कह्यो , अस तुम करहु सुधार ।

बिनु सुधार सासन अहै , जनता-गर अय-भार ॥१६॥

हरविन स्रवन करी नहिं बाता , तब गांधी जन-भाग्य-बिधाता ।
† सैन्धव-कर-निसेध कर ठानी , निरधन-जन-प्रतीक तिहि मानी ॥
सबिनय-सासन-भंग सुनामा , आंदोलन चाल्यो सुखधामा ।
अस्सी सिस्स साथ लै मोहन , चल्यो उदधिप्रतिजन-मन मोहन ॥
गुर्जरदेस-जलधि-तट सोहै , दंडि-ग्राम साजन-मन मोहै ।
सिस्सन सह जन-गन-मन-ईसा , चलि कै पन्थ दिवस चौबीसा ॥
पहुँच्य मनवांछित असथाना , करि उपवास-भजन-असनाना ।
बिनु कर लवन ग्रहन कछु कीना , लवन-बिधान भंग अस कीना ।

करम करहिं जस सुजन-जन , इतर मनुस तिमि जान ।

जनता सो कारज करै , जो बुध करहिं प्रमान ॥१७॥

धीवर-कृसक जलधि-तट-बासी , उदधि-अम्बु सन लवन निकासी ।
लवन-बिधान भंग करि दीना , लगुड़-प्रयोग पुलिस तब कीना ॥
कतिपै नर घायल तिन कीने , जन अनेक कारागृह दीने ।
नगर-गाँव-जनपद चहुँ ओरा , सबिनय-बिधि-निसेध कर सोरा ॥
भयो अमित सासक भयकारी , तिन तब दमन-नीति परचारी ।
कांग्रेस-पति कारागत कीना , गांधि स्वयं तिस कर पद लीना ॥
बैसराय कहँ सूचित कीना , लवन-डिपो-धरसन चित दीना ।
बैसराय तब कीन निदेसा , करहु बन्दिगृह गांधि-निवेसा ॥

† सैन्धव = नमक — महात्मा जी की नमक-कर विरोध-सम्बन्धी दाँडी यात्रा का वर्णन ।

कारा महाँ गांधी-गमन , सुनि जनता अकुलाय ।

देसब्यापि हरताल तब , कीनी सहज सुभाय ॥१८॥
 लवन-डिपो धरसनपुर माहीं , गांधी-सुत सह सेवक जाहीं ।
 वा के संग सरोजिनी चाली , मानहु जयदेवी रन-आली ॥
 मोहन नाम सुमिरि तिन भाखा , अटल प्रेमव्रत चहियत राखा ।
 सत्रु करत जदि कठिन प्रहारा , तदपि न चहियत ताहि निवारा ॥
 सत्य-अहिंसा कर अस नेमा , अनभल-करत चहहु रिपु-छेमा ।
 सेवकगन अनुसासन मानी , पुलिस-प्रहार सहन की ठानी ॥
 लगुड़-प्रहार पुलिसजन कीने , सेवक सुमन-हार-सम चीने ।
 मुंडतुंड - चरनादिक - भंगा , सहत बढ़हिं पुनि सहित उमंगा ॥

बीरपाँति अवकास कहँ , पूरहिं सहित उमंग ।

इतर बीर जस-जलधि महाँ , बाढ़त बीचि - तरंग ॥१९॥
 छत-बिच्छत-तनु मरदित-अंगा , जूझहिं बीर मुदित रनरंगा ।
 करहिं नृसंस लगुड़ कर वारा , गनहिं गांधि-सिसु पीयुसधारा ॥
 बीर-त्रिसत घायल तहँ भयऊ , सेवक-जुग सुरपति-पुर गयऊ ।
 करहिं कलुक घायल-जन सेवा , सेवक इतर लहहिं जस-मेवा ॥
 रनहत बीर लहत फल जोऊ , सेवा सन सेवक-जन सोऊ ।
 रनहत बीर अमरपुर जावै , सेवक सुजस अमरपद पावै ॥
 गांधितनय मनिलाल सुनामा , रमनीरतन सरोजनि नामा ।
 तिनहिं पकरि कारा महाँ दीना , समुझहिं निज करतव करि लीना ॥

मूरख-जन जानै नहीं , सत्य-समर कर ढंग ।

कस्ट सहन करि सत्यप्रिय - हिय महाँ बढ़त उमंग ॥२०॥
 इत रन चलत अहिंसा केरा , दूजा पेसावर महाँ हेरा ।
 हिंसा-करम प्रथम तहँ भयऊ , पुरसासन सासक तजि दयऊ ॥

‡लाल कमीज बिमल जस लीना , पुर-प्रबन्ध सेवक-दल कीना ।
 दिवस तीन बीते पुनि सासक , भयो नगर-सासन-अभिलासक ॥
 लालकुरति अबदुल कर चेला , गतस्वारथ पुर दीन सहेला ।
 दुरजन-नर कर सहज सुभाऊ , कृत उपकार गनत नहिं काऊ ॥
 बिपद-काल गहि विनय अपारा , रिपुपद सीस तुरत चह डारा ।
 कारज-सिद्ध भये बिपरीता , बिसरहि सुभचिन्तक निज मीता ।

लालकुरति - सेवक जबै , अबदुल आयसु मानि ।

पुर-प्रबन्ध तिहि सौँपि कै , सिधिरगवन मति ठानि ॥२१॥

सासक सठ तब अवसर पाई , सेवक-दल पै गोलि चलाई ।
 घायल होय गिरे बहु सेवक , मृत्युकवल भे कछु जनसेवक ॥
 सेवक-जन निज बंधु उठाई , औसध-सदन दिये पहुँचाई ।
 तहँ कीनो तिन कर उपचारा , अगद-योग सब रोग निवारा ॥
 धोखा जदपि सत्रुजन कीना , सेवक तदपि द्वेस नहिं चीना ।
 सहन-सक्ति लखि बिसमित लोकू , आपद सहहिं बीर तजि सोकू ॥
 भाखत जग धनि खान गफारा , अबदुल जिन अचरज करि डारा ।
 अहहिं प्रसिद्ध नृसंस पठाना , तिन कहँ दीन अहिंसा-दाना ॥

मनहु मंत्र-बस भुजग तिन , कीनो दसन - बिहोन ।

लखहु अहिंसा-मंत्र सौँ , केहरि मृग-सम कीन ॥२२॥

*अबदुल खान पुरुसपुर-गाँधी , जन-अधिकार-ग्रहन मति बाँधी ।
 जीवन-सार गन्यो अनुसासन , कीन नियन्त्रित करम रु भासन ॥

‡ पश्चिमोत्तर प्रदेश में खान अब्दुल गफारखाँ द्वारा संगठित सेवक दल जो 'लालकुर्ती' के नाम से प्रसिद्ध था ।

* खान अब्दुल गफार खाँ 'फ्रंटियर गांधी' के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

मानहु कांग्रेस कर सुभ सासन , बसन विदेसि केर निरबासन ।
 मद-निसेध कर करहु प्रचारा , सहहु सुमन-सम सत्रु-प्रहारा ॥
 निज सिस्पन तिन अस उपदेसा , करहिं प्रानपन तासु निदेसा ।
 अस बिधि सत्य-समर-सरि बाढ़ी , देस समस्त सरनि निज काढ़ी ॥
 ढाहति बनिज-बिदेसि कगारे , आंगल-बल-मंदिर छिति डारे ।
 देसभगत हरखावन - हारी , देय सुराज-खेत महुँ वारी ।
 आंगल-हित जमसरित सम , सुरसरि भारत हेत ।

सत्य-समर-सरिता लखौ , लाभ अलाभ समेत ॥२३॥
 बारदौलि गुर्जर सुभथाना , कर-निसेध कृसकन मन ठाना ।
 अत्याचार सासक बहु कीने , पसु-केदार-सदन हरि लीने ॥
 देसभगत साहस नहिं हारा , भय तजि अस करि उच्च पुकारा ।
 कर कर इक धेला नहिं दैहैं , जब लागि गांधि-निदेस न पैहैं ॥
 मुम्बापुरि कांग्रेस - सुभराजा , सत्ता-पहित अनूपम साजा ।
 हाटवाट त्रिवरन धुज सोहैं , भारत-मान-चिह्न मन मोहैं ॥
 सुभ्र बसन खादी कर धारे , बल्लमटेर लगुड़ कर धारे ।
 केसरि सारि पहिरि कुलनारी , सत्यअहिंसा-सुभ-व्रत-धारी ॥
 बसन - बिदेसी हाट पै , अरु मदिरा - आपान ।

धरना दै ठाड़ैं अटल , कांग्रेस - सासन मान ॥२४॥
 बसन बिदेसि-बनिज जे करहीं , देस-द्रोह-पातक नहिं डरहीं ।
 सेवक करहिं विनय तिन पाहीं , देस-धरम-हानी सुभ नाहीं ॥
 सत्याग्रह कर अभित प्रभाऊ , बनिज बिदेसि चलत नहिं काऊ ।
 सत्य-प्रभाव दमन-नय हारी , उरगअबलजिमिनिरखिखगारी ॥
 भीसम-सम इरविन मतिमाना , स्वारथ लागि दमन हित जाना ।
 पै नहिं चित्त सांत तिस केरा , प्रभुवर ताहि संधि-प्रति प्रेरा ॥

*मकडानल-वैजयुड मतिमाना , स्रम-दल-नेता परम सुजाना ।

आंगल-भारत-हित नहिं जाना , कांग्रेस-सासक-संधि-समाना ॥

मकडानल निज दूत तब , भेज्यो मोहन पास ।

सत्य-समर कर समन-हित , संधि-करन कर आस ॥२५॥

कारा महाँ भेंख्यो तिन जाई , संधि-करन कर बात चलाई ।

ता कहँ गांधी कह्यो समुभाई , संधि-नियम जानहु अस भाई ॥

मद्य-निसेध लवन-कर-टारन , बसन-विदेसि-प्रवेस-निवारन ।

देसभगत-जन-कारा-मोचन , अनुचित सासक-बल-संकोचन ॥

सुन्दर नवविधान-निरमाना , सपदि सुराज-सार सुभ दाना ।

सप्रू-जयकर नाम सुनेता , भये संधि-नाटक-अभिनेता ॥

गांधी कहँ तिन कह्यो बुभाई , दैव दसा अब सुभ दरसाई ।

§स्रमदल अहहि परम अनुकूला , बैसराय इरविन समतूला ॥

संधि-करन अब उचित है , छोरि कलुक निज माँग ।

इरविन सों पुनि तिन कह्यो , तजहु दमन कर साँग ॥२६॥

गांधी बात कहहिं सुबिचारी , या दिन संधिकरन हितकारी ।

†नतरु जुबकजन-नेता भारे , बाबु सुभास नरायन न्यारे ॥

* रैम्जे मैकडानल वा कर्नल वैजयुड--इङ्गलैण्ड की Labour Party (श्रमिक दल) के प्रमुख नेता । उस समय मैकडानल इङ्गलैण्ड के प्रधान मंत्री थे ।

† सर तेजबहादुर सप्रू—युक्तप्रान्त के प्रसिद्ध न्याय-विशारद, मुकुन्दराव जयकर—बंबई के विख्यात न्यायपरिडन—दोनों उदार-दल (Liberal party) के प्रमुख नेता ।

§स्रमदल—Laobur party ।

† जयप्रकाश नारायण—प्रसिद्ध समाजवादी (Socialist) नेता ।

सत्य-अहिंसा कर व्रत त्यागी , होवहिं हिंसापथ - अनुरागी ।
 अस सम्मति लहि सचिव प्रधाना , संधिकरन महँ निज हित माना ॥
 इरविन कहँ तिन पळ्यो सँदेसा , तजहु बन्दि तजि सकल अँदेसा ।
 सुभ सन उन्निस सत इक्तीसा , जनवरि मास तिथी सटबीसा ॥
 बरसी दिन सुतन्त्रता केरी , भारत - बैसराय सुभ हेरी ।
 कारा सन नेता सब छोरे , भेंटि परस्पर मुदित न थोरे ॥

कांग्रेस-लघुसमिति जुटी , तीरथराज प्रयाग ।

संधिनियम-निरधार-हित , सोधन भारत - भाग ॥२७॥
 मोदकाल घटना दुखदायी , मोतिलाल मीचू बनि आयी ।
 समर-सुराज-महारथि वीरा , नीति-कुसल नेता रनधीरा ॥
 भारतहित जिन सरबस वारा , धन-धरनी-परिजन-परिवारा ।
 आत्मजरतन जवाहिरतूला , पुत्रबधू कमला - समतूला ॥
 तासु कलत्र रानि-समरूपा , आपु बदान्य-सिरोमनि-भूपा ।
 सत्य-समरमख सरबस होमा , कीनो पान अमरजस-सोमा ॥
 तासु बिरह मोहन दुख पायो , पुनि बिचार सन मन समुभायो ।
 चिंता-जोग न अस जन होई , करम करत स्वारथ तजि जोई ॥

देसजाति-हित जिन दियो , तन-मन-धन-सुख-सार ।

अमर सुजस पायो सुफल , रिसि दधीचि-अनुहार ॥२८॥
 मारच पंच तिथि इरविन-गाँधी , संधि-समय-निसचय मति बाँधी ।
 सविनय-सासन - भंग-अँदोलन , जिन कीनो आंगल-द्विय-दोलन ॥
 गांधि कियो ता कर संकोचन , इरविन कीन बन्दिजन-मोचन ।
 हतधन-संपति लोकन दीनी , सांत-बहिस्कृति स्वीकृत कीनी ॥
 सागरतट-समीप जे रहहीं , लवन-बनावन-सुबिधा लहहीं ।
 इरविन अस प्रमान करि लीना , गांधी सफलमनोरथ कीना ॥

राजसचिव कर पाय निदेख, इरविन वाहि अस दीन सँदेख ।
गोलमेज-समिति महँ जाई, निज सहयोग देउ अब भाई ॥

गोलमेज-समिती प्रथम, कांग्रेस-प्रतिनिधि-हीन ।

बिनु मयंक जस जामिनी, रही निपट स्त्री-हीन ॥२९॥
बर बिनु सोह न रुचिर बराता, बिनु मयंक पूतो कर राता ।
आंगल-मुसलिम-सिक्ख - ईसाई, भारत-नृप अरु हरिजन भाई ॥
बिबिध जाति-दल-मत कर नेता, नंदननगर भये समवेता ।
पै न समागम पूरन जाना, राजसचिव तासों मतिमाना ॥
कांग्रेस कहँ सँदेस पठावा, निज प्रतिनिधि भेजहु मनभावा ।
पुर-कराचि अधिवेशन कीना, कांग्रेस-पतिपद बल्लभ लीना ॥
इरविन-संधि-समर्थन कीना, गांधी निज प्रतिनिधि चुनि लीना ।
जनता कर मौलिक अधिकारा, तिन पर कीन बिसेस बिचारा ॥

कलुक जुबक आये तहाँ, कर गहि कृस्न-पताक ।

संधि कहा गांधी कहौ, सठ सन सहित तपाक ॥३०॥
*वीर भगत नरमनि जिन मारा, देय कलेस जतीन सँहारा ।
देसभगतजन कस्ट अपारा, धन-बैभव हरि दीने कारा ॥
वा सन करहु संधि कर बाता, सासक खल प्रभुता-मदमाता ।
करत अनीति अनेक प्रकारा, सब बिधि करत अनीठ हमारा ॥
तव मृदु-बानि गांधि समुभावा, सठ सन रखहु न सठता-भावा ।
धरम-अहिंसा कर अस रीती, दुस्ट-सुवार करहु सह-प्रीती ॥
दानव-सम दुरजन नर जोऊ, प्रेम-प्रभाव सुधरिहै सोऊ ।
चन्द्रकान्तमनि उपल कठोरा, बिधु-कर-परस द्रवत नहिं थोरा ॥

*सरदार भगतसिंह—२४ मार्च १९३१ को इन्हें फाँसी मिली;
जतीन्द्रनाथ दास—लाहौर जेल में भूख हड़ताल से मरे ।

सतनु ग्यान दुजवर सुभग , मालबीय मतिमान ।

महिला-रतन सरोजिनी , क्रिया सदेह समान ॥३१॥
 तिन सँग सोहत मोहन कैसे , ग्यान-क्रियाजुत ईस्वर जैसे ।
 सुभसन उन्निस-सत-इकतीसा , मास अगस्त तिथी सतबीसा ॥
 चढ़ि जलयान विलायत जावा , भारत-हित-साधन मन चावा ।
 राजसचिव तहँ स्वागत कीना , भवन बिसाल बास-हित दीना ॥
 राजसदन दुरजोधन केरा , जिमि जदुनाथ न इक चख हेरा ।
 बिदुर-कुटीर जाय सुख पावा , तजि पकवान साक मन भावा ॥
 भव्य-भवन तिमि गांधि बिहाई , दीन-जनन-बस्ती अपनाई ।
 †लिस्टर नाम अमित गुनवारी , कन्या एक परम उपकारी ॥

ब्रह्मचरजब्रत धारि कै , संजमसील दयाल ।

निसिबासर सेवा करै , निरधन-जन-प्रतिपाल ॥३२॥
 जिमि सबरी कर भगति सुहाई , प्रभुदित निरखि भये रघुराई ।
 परनकुटीर जाय पगु धारा , वा कर इह-परलोक सँवारा ॥
 तिमि मोहन लिस्टर-गृह जाई , आरजजन-मरजाद निभाई ।
 सेवा कर सुभ अवसर दीना , पूरन सकल मनोरथ कीना ॥
 राजभवन सब दल कर नेता , सम्मति-हेत भये समबेता ।
 तिन महँ सोहत मोहन कैसे , उडुगन-मध्य विमल ससि जैसे ॥
 दूजे प्रतिनिधि दीप-समाना , मोहन प्रकट भानु-सम जाना ।
 नेता अवर विविधमतरूपा , गांधी प्राकृत-धरम-सरूपा ॥
 सांप्रदायिता-भाव सों , प्रेरित होय अमन्द ।

देशजाति-हित त्यागहीं , स्वारथ-रत मतिमन्द ॥३३॥

† Miss Muriel Lister—लण्डन के East End नामक निर्धन जनता से अधिकृत भाग में रहने वाली गांधी-भक्त समाज-सुधारिका ।

जस दीपक लघु करहिं प्रकासा , जहँ तहँ परिमित लहि निज भासा ।
 तिमि मतबाद-पंक महँ लीना , लघु-लघु माँग करहिं मतिहीना ॥
 मोहन उज्जल भानु-प्रकासा , करतनिखिल-तम-तोम-बिनासा ।
 निज-सासन-अधिकार जतोवा , बिसद कखो परराज न भावा ॥
 राजसभा सोहत किमि मोहन , राजसूय-मुख जिमि मनमोहन ।
 विद्या - विनय - तप - संजमसाली , सोभा राखत परम निराली ॥
 चरखा - चक्र - सुदरसनधारी , माधवसम निरबल-हितकारी ।
 अवर सभासद मानिक-रूपा , मोहन हीर रतनकुलभूषा ।

निज स्वारथ-चिन्तक सबै , समिति-सभासद अन्य ।

गतस्वारथ मोहन तहाँ , भारत - भगत अनन्य ॥३४॥
 मोहन-रूप लखहिं नर कैसे , भाव रहहिं उर अन्तर जैसे ।
 मकडानल समदल कर नेता , गोल-समिति-नाटक-अभिनेता ॥
 मोहन तिन कांग्रेसपति माना , जनता-प्रतिनिधि इव सनमाना ।
 भारत - सासन - थंभ - समाना , गन्यो जदपि रिपु उत्कट जाना ॥
 *चरचिल नाम महा-अभिमानी , कुटिल-नीति-पंडित अघखानी ।
 मोहन धूमकेतु इव लेखा , ब्रिटिस-राज अन्तकसम पेखा ॥
 कोपकृसानु जरहिं सब अंगी , भावी निरखि ब्रिटिस बलभंगा ।
 कहत सोक इक नगन फकीरा , होय ब्रिटिस-हित कालसमीरा ॥

निगड़बढ़ करि डारऊ , गांधी कारा माहिं ।

ब्रिटिसराजरिपु जानि कै , हित हमार नतु नाहिं ॥३५॥

मुसलिम लखहिं गांधि कहँ कैसे , नर सदोस सासक कहँ जैसे ।

†भीमराव दलितन कर नेता , स्वारथरंग-कुसल - अभिनेता ॥

*विंस्टन चर्चिल—इंगलैंड की (Conservative Party) अनुदार दल का नेता , कट्टर साम्राज्यवादी तथा भारत की स्वाधीनता का प्रमुख विरोधी ।

†बी. आर. अम्बेदकर—गांधी-विरोधी दलितवर्ग का नेता ।

निज परिपंथि लख्यो तिन गाँधी , कारज-हानि-करन मति बाँधी ।
 देसभगत-जन मोहन जाना , तरि-सुराज-कनधार-समाना ॥
 विविध-भाव मधि सोहत कैसे , चपलजलधिजल मन्दर जैसे ।
 जस जस उचित सबन समुभावा , नीति-धरम कर मरम बतावा ॥
 हरिजन-मुसलिम-आंगल सारे , सोदर तुल्य अहहिं मम प्यारे ।
 अस तुम सब मिलि करहु प्रयासा , भारत कर जस पूजहि आसा ॥
 आंगल सन नहिं सत्रुता , मुसलिम सन नहिं बैर ।

हरिजन सोदर सम अहै , सब प्रति हों निरबैर ॥३६॥
 आंगल तजि भारत कर सासन , सोदर-सम बैठहु इक आसन ।
 मुसलिम मानहु मोर निहोरा , भारतहित लेखहुँ हित तोरा ॥
 मातृभूमि भारत निज मानौ , हिंदुन निज अग्रज करि जानौ ।
 ब्रिटिस-राज-आस्रय तजि देऊ , निज-अधिकार उचित तुम लेऊ ॥
 हरिजन तुम मम सोदर-भ्राता , हिन्दुन सन प्राकृत तुव नाता ।
 बालमीकि रामायन कीनी , मानवधरम-सरनि फुट कीनी ॥
 भगत कबीर सन्त रविदासा , हिन्दु-धरम कर मरम प्रकासा ।
 साँभे अहहिं गुरु मम तोरे , जनि अलगाव करहु तुम भोरे ॥

हिन्दु जदपि दुख बहु दियो , राखिय जनि चित खोरि ।

हिंदुन सन नाता अमिट , नख-आमिस किमि छोरि ॥३७॥
 हिंदुन कहँ अस सम्मति दैहों , तुव अधिकार सकल मनवैहों ।
 तजहु सकल अलगाव विचारा , मेल किये हित होय तुमारा ॥
 हरिजन-हिंदु सहोदर-भ्राता , तिन कर संतत प्राकृत नाता ।
 हों बरु देउँ प्रान निज त्यागी , होवन देउँ न फूट अभागी ॥
 अस बिधि तिन सब कहँ समुभावा , न्याय-धरम कर तत्त्व बतावा ।
 स्वारथरत हितवचन न माना , निज हित-अनहित मूढ़ न जाना ॥

अवसर लहि आंगल बल कीना , भेद-बिचार सुदृढ़ करि दीना
हितकर बचन बिकल भे कैसे , महिस-निकट बंसी-धुनि जैसे ।

दादुर-करकस-रव सुनी , गह्यो कोकिला मौन ।

मूरखजन-समुदाय महँ , सुनत बुधन की कौन ॥३८॥
गह्यो मौन मोहन मतिमाना , बिरथा बचन न कहहिं सुजाना
भारत लौटन प्रति मति कीनी , माँगि सुराज-आस तजि दीनी ।
तेजवन्त कर सहज सुभाऊ , कर पसारि नहिं जाचत काऊ
जिन नाहर करि-कुम्भ विदारा , को तिहि करत मृगन सरदारा ।
निज बल पावहिं निज अधिकारा , मानवन्त जन केहरि-सारा ।
जदपि परस्पर होवत भेदा , तदपि करहिं नहिं साजन खेदा ॥
आंगल-भूष सँदेस पठावा , मोहन कहँ निज सदन बुलावा ।
बिनु संकोच गयो तहँ गाँधी , लीनो प्रेमरज्जु सन बाँधी ॥

महिमा जासु सुरेस-सम , तेज प्रभाकर - तूल ।

सखाहेत सुभ कल्पद्रुम , पै सपत्न - हिय - सुल ॥३९॥
जासु राज अथये नहिं भानू , रिपुकुल पादप-वृन्द कृसानू ।
नृपकिरीटमनि - मंडित - पादा , मानहिं देस बिबिध मरजादा ॥
जा के निकट जात सकुचाई , देस - विदेस - राजकरसाई ।
तिन फकीर आता कहि टेरा , चकित होय लोकन अस हेरा ॥
जानहिं लोक न गांधि प्रभाऊ , जस जानत आंगल-झितिराऊ ।
*मनि-महिमा जौहरि पहिचानै , साकबनिक लघुमति किमि जानै ॥
भारत जनगनमनअधिनायक , मोहन सब विधि पूजन-लायक ।
अस बिचारि मान तिहि दीना , स्वागत करि निज करतब कीना ॥

* परीक्षको वेत्ति हि हीरकार्घ्य,

शाकस्य क्रेता न जनः कदाचित् । (वि० ध० म०)

मास चारि लागि रहि तहाँ , भारतजन - हिय - ईस ।

भारतहित - चरचा करी , टारे ख्याल खबीस ॥४०॥
मोहन पुनि भारत प्रति आयो , देस-दसा लखि अति दुख पायो ।
लाट विलिंगडन सत्तावादी , जन-अधिकार परम प्रतिवादी ॥
इरविन कर पदवी तिन लीनी , नीति सकल परिवर्तित कीनी ।
इरविन - गांधी-सन्धि-प्रतिवादा , करि तजि धरमनीति-मरजादा ॥
बीर जवाहिर खानगफारा , नेता पकरि दिये तिन कारा ।
सत्यसंध गांधी लिखि पाती , बैसराय परजा तव थाती ॥
अहित तुमार बाहि दुख दीने , तिन हित-वचन कान नहिं कीने ।
†कटुहितवचन कहत नर जोऊ , बाहि सुनत दुरलभ जन दोऊ ॥

गांधि बाजि रनदुन्दुभी , ग्रन सुराज कर लीन ।

सबिनय-सासन-भंग कर , पुनि प्रचार तिन कीन ॥४१॥
सासक दमन कठिन तव कीना , सहित पटेल गांधि धरि लीना ।
कांग्रेस कर धनसम्पति छीनी , घोर बिथा असहायन दीनी ॥
सड़सठ-सहस बंदि तव कीने , कारागार सकल भरि दीने ।
पै नहिं दमन चलत बहु काला , धीरजबल द्रुत होय बिहाला ॥
लाट विलिंगडन बलमदलीना , तिन धीरज-परभाव न चीना ।
धीरज-बल पांडव बलधारी , निज करगत कीनी महि सारी ॥
धीरज-बल हरिचंद नरेसा , पुनि पाये बनिता-सुत-देसा ।
धीरज-बल कटु बिपदा मीता , होवत प्रभु-वर-तुल्य पुनीता ॥
समय पाय सासक थके , भरि भरि कारागार ।
चकित रहे अवलोकि कै , धीरज अमित अपार ॥४२॥

† 'अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः'

तब कारा मोचन तिन कीना , देसभगत बंधन हरि लीना ।
 पै नहिं नेता-जन कहँ छोरा , अनुचित करम करै मतिभोरा ॥
 गाँधी रहत यरवदा अन्दर , गनत ताहि जस माधव-मन्दिर ।
 उन्निस-सत सन बरस बतीसा , मास अगस्त अहहि अति खीसा ॥
 ब्रिटिस-प्रधान-सचिव अस भाखा , भारत-हित हौं हिय महँ राखा ।
 संप्रदाय-भगरन कर कीना , चहँहुँ उपाय कलुक्क समिचीना ॥
 सो तुम मान्य करहु मिलि सारे , प्रस्न जटिल सुलभहिं अतिभारे ।
 पृथक देउँ निरवाचन सबहीं , सुख सन रहहिं सरबदल तबहीं ॥

अस बिधिमकडानलकियो, कपट सहित सडजन्त्र ।

भारतजन लरि मरहिं जस, रहैं सदा पर-तन्त्र ॥४३॥
 भारतभाल - कुटिल - ग्रहरेखा , कांग्रेस-भानु-केतु सम पेखा ।
 मकडानल-निरनय जब गाँधी , टारन-हित तब परिकर बाँधी ॥
 हरिजन-पृथक करन कर चाला , मोहन-हिय लागी जिमि भाला ।
 लसत सुधासम बिसमय हाला , तुमजनिपियहु गरल कर प्याला ॥
 दीसत सुभग सुमन-वरमाला , अहहि जथारथ उरग कराला ।
 भारत-जन अस कहि समुझावा , पै उपदेस नहिंन चित लावा ॥
 मोहन तब निज बचन बिचारी , मरन बरत दृढ़-मति मन धारी ।
 *आरजजन कर सहज सुभाऊ , बचन रहै बरु जीवन जाऊ ॥

देहसुद्धि मनसुद्धि अरु , आतम - सुद्धि उपाय ।

अहहि नहीं उपवास सम , कहहि सुजन सतिभाय ॥४४॥
 तनसोधन मल अपहरि सारा , रुज निवारि बलदेवनहारा ।
 हरि त्रयदोस देय सुखसारा , सुबरन इव तन सुभग सँबारा ॥

† यरवदा—पूना की जेल ।

*‘रघुकुलरीत सदा चलि आई , प्रान जाय बरु बचन न जाई ।’
 (तुलसी रामायण)

मानस-आधि कस्टकर जोऊ , अनसन-अगद बिनासत सोऊ
 सवल रसायनसम करि डारै , दुख-उदवेग - निरासा टारै ।
 मत्सर - बैर - मानमद - मोहा , स्वारथ-लोभ-कपट अरु कोहा
 मन-बिकार समरथ जस दानव , निज अधिकार करहिं जब मानव ।
 तब उपवास-व्रज गहि धीरा , टारत सकल दनुज-कृत पीरा ।
 मलबिखेप आदिक बहुदोसा , लूटहिं जब बिबेक कर कोसा ।
 मधवा-सम तब आतमा , बृजिन-वृत्र भय खाय ।

लुपत निरासा - कन्दरा , निज बल-तेज गँवाय ॥४५॥
 तब दधीचितनु धरि उपवासा , निज तनु अरपि हरत सुरत्रासा ।
 संजम-कुलिस पुरन्दर पाई , बृजिन-वृत्र कहँ देत गिराई ॥
 वृत्र हने सिंहासन पाई , सुरपति मानत मोद बधाई ।
 पाय सुराज सुरगपति सोहा , मानत सकल सुरासुर लोहा ॥
 आतम-उन्नति कर उपवासा , अहहि अनूपम पूरन-आसा ।
 अनसन कर गांधी जब ठानी , सबरन हिन्दु बरन-अभिमानी ॥
 पंडित मालवीय अस प्रेरा , चाहिय बन्धु-सम हरिजन हेरा ।
 ता कहँ त्रास जोऊ तुम दीने , कीने करम विविध नय-हीने ॥

तिन पै पछतावा करौ , निज करतब सुबिचार ।

हरिजनबन्धु-सुधार बिनु , होय न देस-सुधार ॥४६॥
 भीमराव दलितन कर नायक , हिंदुनगनत निसितजिमि सायक ।
 गाँधि-सुजस सुनि पाव न चैना , मत्सर-अनल दहत दिन-रैना ॥
 कुलिस-कठोर हृदय तिस केरा , निरदयभाव गांधि-प्रति हेरा ।
 कहत गांधि दंभिन कर नेता , कुटिल नीति-बल-बल-समेता ॥
 दलित - सपत्न महाभयकारी , सबरन-हिंदु-जनन-उपकारी ।
 रच्यो ढोंग अनसन-व्रत केरा , दलितन-हित घातक हौं हेरा ॥

†दुरजन कर अस सहज सुभाऊ , दोस-लखन बिनु काज न काऊ ।
जिमि क्रमेल उपवन महँ जाई , छाँड़ि मधुर फल कण्टक खाई ॥

गांधी-गौरव-सुजस जग , गावहिं सब नरनार ।

ता कहँ ढोंगी कहत सठ , भीमराव अनुदार ॥४७॥
मालवीय वा कहँ समुभावा , मीत सुनहु मम प्राकृत भावा ।
हरिजन अंग जाति मम केरे , तिन कहँ सत्रु नासहित प्रेरे ॥
पर-अधीन मानव पगहीना , जीवन-रहित चरन तनु-झीना ।
हरिजन-हिंदु सहोदर भाई , नखसनआमिसकिमिबिलगाई ॥
गांधी चहत जियन निज त्यागा , हरिजन-हिंदु उभय-अनुरागा ।
तिन बिच फूट न होवन देई , बरु निज प्रान अन्त करि लेई ॥
गांधी कर जीवन बहुमूला , जनहित होय न ईधन-तूला ।
सो अब मिलि कछु करिय प्रयास , रहै अछत जिमि जीवन तास ॥

पुन्यनगर महँ अस भयो , मदन - भीम - संवाद ।

पुन्यसंधि सन समित भे , हरिजन - हिंदु - विवाद ॥४८॥

*पुन्य-संधि मकडानल मानी , छाँड़ी पृथक-करन-मनमानी ।
पूरन व्रत गांधी कर भयऊ , निज-पन-उदधि पार तव गयऊ ॥
अनसन तजि पारन जत्र कीना , हरिजन-दुज अभिनंदन कीना ।
भारत-हिय अस बढ़त प्रमोदा , कान्ह अछतजिमिमुदितजसोदा ।
सन उन्निस सत त्रय अरु तीसा , दीन निदेस आंगल-अबनीसा ।
समित भई आंदोलन-आंधी , कारा सन छाँड़हु अब गांधी ॥

† 'कर्णामृतं सूक्तिरसं विहाय दोषे प्रयत्नः सुमहान् खलस्य ।

क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य, निरीक्षते कण्टकजालमेव ।

(बिल्हण)

* पूना पैक्ट नाम से प्रसिद्ध हिन्दु-हरिजन समझौता ।

मानस-आधि कस्टकर जोऊ , अनसन-अगद बिनासत सोऊ ।
 सबल रसायनसम करि डारै , दुख-उदवेग - निरासा टारै ॥
 मत्सर - बैर - मानमद - मोहा , स्वारथ-लोभ-ऋपट अरु कोहा ।
 मन-विकार समरथ जस दानव , निज अधिकार करहिं जब मानव ॥
 तब उपवास-व्रज गहि धीरा , टारत सकल दनुज-कृत पीरा ।
 मलबिखेप आदिक बहुदोसा , लूटहिं जब बिबेक कर कोसा ॥

मधवा-सम तब आतमा , बृजिन-वृत्र भय खाय ।

छुपत निरासा - कन्दरा , निज बल-तेज गँवाय ॥४५॥
 तब दधीचितनु धरि उपवासा , निज तनु अरपि हरत सुरत्रासा ।
 संजम-कुलिस पुरन्दर पाई , बृजिन-वृत्र कहँ देत गिराई ॥
 वृत्र हने सिंहासन पाई , सुरपति मानत मोद बधाई ।
 पाय सुराज सुरगपति सोहा , मानत सकल सुरासुर लोहा ॥
 आतम-उन्नति कर उपवासा , अहहि अनूपम पूरन-आसा ।
 अनसन कर गांधी जब ठानी , सबरन हिन्दु वरन-अभिमानी ॥
 पंडित मालवीय अस प्रेरा , चाहिय बन्धु-सम हरिजन हेरा ।
 ता कहँ त्रास जोऊ तुम दीने , कीने करम बिबिध नय-हीने ॥

तिन पै पछतावा करौ , निज करतव सुबिचार ।

हरिजनबन्धु-सुधार बिनु , होय न देस-सुधार ॥४६॥
 भीमराव दलितन कर नायक , हिंदुनगनत निसितजिमि सायक ।
 गाँधि-सुजस सुनि पाव न चैना , मत्सर-अनल दहत दिन-रैना ॥
 कुलिस-कठोर हृदय तिस केरा , निरदयभाव गांधि-प्रति हेरा ।
 कहत गांधि दंभिन कर नेता , कुटिल नीति-छल-झझ-समेता ॥
 दलित - सपत्न महाभयकारी , सबरन - हिंदु - जनन - उपकारी ।
 रच्यो ढोंग अनसन-व्रत केरा , दलितन-हित घातक हौं हेरा ॥

†दुरजन कर अस सहज सुभाऊ , दोस-लखन बिनु काज न काऊ ।
जिमि क्रमेल उपवन महँ जाई , छाँड़ि मधुर फल कण्टक खाई ॥

गांधी-गौरव-सुजस जग , गावहिं सब नरनार ।

ता कहँ ढोंगी कहत सठ , भीमराव अनुदार ॥४७॥

मालवीय वा कहँ समुभावा , मीत सुनहु मम प्राकृत भावा ।
हरिजन अंग जाति मम केरे , तिन कहँ सत्रु नासहित प्रेरे ॥
पर-अधीन मानव पगहीना , जीवन-रहित चरन तनु-झीना ।
हरिजन-हिंदु सहोदर भाई , नखसनआमिसकिमिबिलगाई ॥
गांधी चहत जियन निज त्यागा , हरिजन-हिंदु उभय-अनुरागा ।
तिन विच फूट न होवन देई , बरु निज प्रान अन्त करि लेई ॥
गांधी कर जीवन बहुमूला , जनहित होय न ईधन-तूला ।
सो अब मिलि कलु करिय प्रयास , रहै अबत जिमि जीवन तास ॥

पुन्यनगर महँ अस भयो , मदन - भीम - संवाद ।

पुन्यसंधि सन समित भे , हरिजन - हिंदु - विवाद ॥४८॥

*पुन्य-संधि मकडानल मानी , छाँड़ी पृथक-करन-मनमानी ।
पूरन व्रत गांधी कर भयऊ , निज-पन-उदधि पार तव गयऊ ॥
अनसन तजि पारन जब कीना , हरिजन-दुज अभिनंदन कीना ।
भारत-हिय अस बढ़त प्रमोदा , कान्ह अबतजिमिमुदितजसोदा ।
सन उन्निष सत त्रय अरु तीसा , दीन निदेस आंगल-अवनीसा ।
समित भई आंदोलन-आंधी , कारा सन छाँड़हु अब गांधी ॥

† 'कर्णामृतं सूक्तिरसं विहाय दोषे प्रयत्नः सुमहान् खलस्य ।

क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य, निरीक्षते कण्टकजालमेव ।

(बिल्हण)

* पूना पैक्ट नाम से प्रसिद्ध हिन्दु-हरिजन समझौता ।

भारत - सासन - नव्य - बिधाना , बिनु कांग्रेस संभव नहीं जाना ।
सोउ हमार साथ नहीं दैहै , जौ लौं गांधि-निदेस न पैहै ।

कारागृह सों छूटि कै , गांधी निसचय कीन ।

जाति - सुधार - सुतन्त्रता , हरिजन-हित महँ लीन ॥४९॥
राजनीति तजि कै तब गाँधी , हरिजन-हित निज परिकर बाँधी ।
हरिजन - सेवक - संघ बनायो , हरिजन-हित इक पत्र चलायो ॥
हरिजन-हित धन-संचय कीना , हिन्दु-समाज उचित पद दीना ।
मंदिर-गमन आदि अधिकारा , दीने सब हरि कस्ट अपारा ॥
मध्यप्रदेस माँझ इक ठाई , हरिजन-वस्ती दरिदपुर-न्याई ।
सेवाग्राम नाम तिहि दीना , रुचिर कुटीर तहाँ निज कीना ॥
करि कै दरिदरायन सेवा , लहन चहत जन-उन्नति-मेवा ।
बीब गँवारन सोहत कैसे , कपिन मध्य रघुनायक जैसे ॥

देसदीनता देहधर , ग्राम गांधि अनुमानि ।

ग्रामोद्योग - सुधार - हित , जतन करन कर ठानि ॥५०॥
जहँ तहँ चरखासंघ बनाये , खादी-बिक्रय-केन्द्र रचाये ।
कीन प्रबल मदपान-निसेधू , दूसित रहन-सहन प्रतिसेधू ॥
सेवाग्राम अधम इक गाँवा , तासु प्रभाव भयो सुखठाँवा ।
तीरथ-सम ता कहँ जन जानी , इस्ट-देव-सम मोहन मानी ॥
सरधा-भेंट धरहिं निज आई , जावहिं मुदित मनोरथ पाई ।
सन्त बसत जिहि पावन थाना , सो थल पूत प्रयाग-समाना ॥
जा थल इक मलयज द्रुम होई , चन्दन करत अवर तरु सोई ।
सन्तपुरुष पारससम जाना , करत कुजनत्रपु हेमसमाना ॥

राजनीति तजि गांधि जब , जनसुधार चित दीन ।

कांग्रेस कर नेतृत्व तब , बीर जबाहिर कीन ॥५१॥

जिमि बसिस्ट गुरु रघुकुल केरे , कुरुकुल पूज्य व्यास-मुनि हेरे ।
 सनमारग चालहिं जजमाना , तिन कर कुसल परम सुख माना ॥
 तिमितजि सकललोक-अधिकारा , कांग्रेस-पूज्य भयो सुखसारा ।
 देसभगत बापू कहिं बोलैं , भेद सकल निज मन कर खोलैं ॥
 गनहिं गांधि गनपति-समतूला , सरधा-पात्र परम सुखमूला ।
 लेय असीस करहिं सब काजा , मानहु सोई मनोरथ-राजा ॥
 सासन नव जब थापित भयऊ , जनप्रतिनिधिनिरवाचनभयऊ ।
 कांग्रेस तब लहि गांधि-निदेसा , कौंसल महँ पुनि कीन प्रवेसा ॥

बैसराय - अनुरोध ते , प्रान्तसचिव पद पाय ।

भारत-सेवा करहिं नित , कांग्रेस-जन सतिभाय ॥५०॥
 गांधी तिन कहँ दीन निदेसा , खादी-उन्नति करहु हमेसा ।
 हरिजन-कस्ट निवारहु सारे , करहु जतन मद-टारन वारे ॥
 बापू कर अनुसासन पाई , कांग्रेस-सचिव सीस निज नाई ।
 कारजक्रम निसचित अपनावा , पै नहिं मन-इच्छित फल पावा ॥
 सासन-सरनि नहिन अनुकूला , आंगल-राजनीति प्रतिकूला ।
 कुटिलनीति-विस-वीरुध फूली , मुसलिम-लीग करमपथ भूली ॥
 §जीना नाम लोभमदलीना , देसभगति - सुभभाव - बिहीना ।
 वा सठ कहँ नेता निज मानी , लागी लीग करन मनमानी ॥

ब्रिटिस-नीति-परभाव ते , निज करतव सब भूलि ।

देस-अहित निज हित लखै , नयन परी जनु धूलि ॥५३॥
 देस-उधार-हित साधन जेते , लागहिं वाहि गरल-सम तेते ।
 स्वारथजुरविकारहत जोऊ , भाव न वाहि मधुरस कोऊ ॥

§मुहम्मद अली जिन्ना — बम्बई के बैरिस्टर, मुसलिमलीग के अधि-
 नायक, कांग्रेस के कट्टर विरोधी ।

भारत-हित-घातक जो कौऊ , साधन बाहि लगत प्रिय सोऊ ।
 मदिरा हानिमूल जग जानै , बीब सोई अमृत करि मानै ॥
 कांग्रेस भारत-हित चित धारी , कीने जतन मेल-हित भारी ।
 स्वारथरत जीना अभिमानी , मेलमिलाप बात नहिं मानी ॥
 पर-उपकार - वृत्ति तब गाँधी , कांग्रेस-लीग-मेल मति बाँधी ।
 निर-अभिमान गयो घर वाके , हित-विचार धरि मन सुभ वाके ॥

*बहु विधि तिहि समुझायऊ , भयो प्रभाव न मूल ।

जदपि सुधा बरसै जलद , लहत ठूँठ नहिं फूल ॥५४॥
 बहुविधि धरमनीति समुझाई , देस-जाति-हित-बात चलाई ।
 जुगति-प्रमान दिये तिन नाना , पै सठ एकहू चित्त न आना ॥
 वीतराग पलटी घर आयो , सठ प्रति नहिं कछु कोप जनायो ।
 सत्य - प्रतिग्य धरमधुरधारी , होवहिं जे जन पर-उपकारी ।
 परहित चित धरि परम सुजाना , गनहिं न निज मान रु अपमाना ।
 कांग्रेस महँ इहि अवसर आई , फूट-अनय निज धाक जमाई ॥
 बाबु सुभास जुबक-दल-नेता , पच्छ प्रबल निज करि समवेता ।
 गांधी-विचार-सरनि-तजि मानी , कांग्रेस-पति-पद-पावन ठानी ॥

†सत्य-अहिंसा-निरत नित , कांग्रेस-जन इक स्रष्टे ।

सियाराम सुभनाम जुत , गांधी कहँ अति प्रेष्ठ ॥५५॥
 गांधी पच्छ बाहि कर लीना , घोसित सकल देस महँ कीना ।
 जय सुभास कर परिभव मोरा , असमतअहहिसुनिसचितमोरा ॥

* फूलै फलै न बेंत , जदपि सुधा बरसै जलद ।

मूरख दिये न चेन , जो गुरु मिलै बिरंचि सम् ॥

(तुलसी रामायण)

† पट्टाभि सीतारमैया—एक गांधी-भक्त कांग्रेसी नेता ।

जन बहुमत सुभास पुनि पावा , कांग्रेस-पति-पद पाय सुहावा ।
गांधी-भगत जवाहिर - आदी , भये सुभास-पच्छ-प्रतिवादी ॥
सो तजि कांग्रेस-पति-पद गयऊ , अग्रगामिदल - नेता भयऊ ।
भारतीय लघुराजमहीपा , आंगलभानु-दत्त-दुति - दीपा ॥
छीनहिं सकल लोक-अधिकारा , देवहिं कस्ट प्रजा कहँ भारा ।
गांधी तिन कहँ कीन सचेता , कांग्रेस अहहि लोकमत नेता ॥

आंगल-जन-आसा तजौ , कांग्रेस सन चित लाय ।

असविधि होय तुमार हित , कहहुँ मीत सतिभाय ॥५६॥
अब नहिं दूर सोउ सुभकाला , आंगलजन जब काढ़ि दिवाला ।
जावहिं लौटि पुनि आपुन देसा , कांग्रेस पैठहि राजनिवेसा ॥
पै हित बचन कान नहिं कीने , कस्ट अनेक प्रजा कहँ दीने ।
राजकोट - आदिक रजवाड़े , अत्याचार-बिजय-धुज गाड़े ॥
लोक-उक्ति कीनी तिन साँची , खूँटे के बल बझिया नाची ।
करुन पुकार प्रजाजन केरी , करुनानिधिसुनि कै बिनु देरी ॥
सविनय - सासन - भङ्गसुनामा , आंदोलन चाल्यो सुखधामा ।
कसतुरबा गांधीप्रिय - जाया , प्रजा-प्रेम वा हिय उमगाया ॥

निरखि कस्ट निजबच्छ कर, होय सुरभि जिमि दीन ।

प्रजा देखि तिमि कस्ट महँ , वा चित भयो मलीन ॥५७॥
सत्यसमर-नेता पद पाई , सासक सन करि न्याय-लराई ।
कारा महँ डेरा तिन कीना , पतिअनुगमनअमरजस लीना ॥
गांधी जदपि रोगबस छीना , तदपि प्रजाहित-करम-प्रवीना ।
सासक-चित-सोधनहित धीरा , अनसनव्रत-मति कीन गभीरा ॥
सासकजन कछु ध्यान न दीना , भये मन्दमति दमन-प्रवीना ।
गांधी अनसनव्रत तब ठाना , हलचल देस मची सब थाना ॥

बैसराय थिति निरखि गभीरा , सन्धिकरन-हित कृत मति धीरा ।
राजकोट निज दूत पठावा , तिन तहँ संधि-सँदेस सुनावा ॥

राजकोट-मँडलेस तब , संधि गांधि सन कीन ।

करहुँ लोक-अधिकार जुत , बंदी बंधन - हीन ॥५८॥

कांग्रेस कछु प्रभुताबल पाई , समरथ लागि करि लोक भलाई ।
न्यायसरनि रहि न्याय-प्रवीना , करि सुराज-हित जुगति नवीना ॥
चलहि गांधि-अनुसासन पाई , निज करतब करि होय भलाई ।
दलत्रय बैर-प्रदर्शन कीना , आंगल भूमिप दुरमति जीना ॥
आंगल-मत कांग्रेस-प्रभुताई , ब्रिटिस-राज कर करहि बुराई ।
देस-नरेस कहहिं मन माहीं , कांग्रेस-राज कुसल मम नाहीं ॥
स्वारथरत जीना अभिमानी , भारत-हित हानी निज जानी ।
विघन अनेक पन्थ महँ आये , पै नहिं देसभगत घबराये ॥

* नीतिनिपुन जन निन्दहीं , किधौं करहिं गुन-गान ।

धीर मनुज करतब-निरत , गनै न मान-अपमान ॥५९॥
निंदहिं नर बरु नीतिनिधाना , अथवा करहिं रुचिर गुनगाना ।
कर्मठ मनुज धरमधुरधारी , करहिं करम निज नय-अनुसारी ॥
अरथ-लाभ अरु हानि-बिबेका , तजि अनुसरहिं जगतहित-टेका ।
देस-जाति-हित सरबस दीना , तन-मन-धन सब अरपन कीना ॥
देस-भगत सुभ नाम धरावा , सेवा करि निरमल जस पावा ।
प्रेम-प्रभाव सत्रु बस कीने , कस्ट-कलेस काहु नहिं दीने ॥

* निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु ,

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा ,

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥ (भर्तृहरिः)

जनम-अबधि जिन किय उपकारा , दानव-पाप द्विमा-असि मारा ।
सो किमि परहि लोभ कर पासा , सकल तजी जिन स्वारथ-आसा ॥

देसभगत लहि मानपद , मान करहिं नहिं मूल ।

बिनय-सहित सेवा करै , सफल बिटप-समतूल ॥६०॥

मिलै न बिनु आयास , मानव कहँ स्वधीनता ।

होय न मुदित-उदास , धीर मनुजजय-अजय महँ ॥६१॥



सप्तम सोपान

संस्कृति सुभ सुरपादपतूला , पर-उपकार जासु सुभमूला ।
सम - दम - सहनसीलता - रूपा , साखा ता कर रुचिर अनूपा ॥
विनय - दया - तप - संजम - दाना , ललित तासु पल्लव-दल जाना ।
विस्व-प्रेम-समता कर भावा , तासु मधुर फल अति मनभावा ॥
सत्य-अहिंसा मृदु रस-सारा , तासु जियन कर मुख्य अधारा ।
मत्सर-मोह - कोप - मद - माना , अरथलोभ आदिक रिपु नाना ॥
कुटिल कीट सोऊ छतिकारी , गुपतरूप दानव - तनुधारी ।
तिन हित समर-कठोर-कुठारा , करुनाभाव समूल उपारा ॥
लोभ-मूल जग अहहि रन , प्रेमभाव कर नास ।

पसुबल-पोसन परम पटुं , आतमबल कर हास ॥१॥
सभ्य मनुज संस्कृतिबल पाई , उन्नति करत परम सुखदाई ।
ऋजुतः-जुत करि सकल विहारा , पावहि सुख-संपति-बल भारा ॥
भौतिक सुख-साधन सब पाई , तजत न मानस कर सुघराई ।
स्वारथ बैरमूल गनि सोऊ , परछति-करम करत नहिं कोऊ ॥
*त्रिविध अरथ-पथ कहहिं सयाने , दान भोग अरु नास बखाने ।
संस्कृत-चरित होय नर जोऊ , पर अधिकार हरत नहिं सोऊ ।
समुचित बहुविधि भोगहि भोगा , लखि अधिकार करत धनजोगा ॥
निज कुटुम्ब जानहि जग सारा , हरहि दीन-दुख-भार अपारा ॥

* दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयस्तु विभवस्य ।

यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥ (हितोपदेश)

मत्सर बैर-विरोध कर , करि कै अमित विकास ।

करत अहिंसा-सत्य अरु , आतमबल कर नास ॥२॥

स्वारथमूल समर जग जाना , प्रेमभाव-हित कुटिल-कृपाना ।

मित्रभाव-समता अरु तोसा , इनकर करहि रिकत सब कोसा ॥

दान - दया - उपकृति - सदभावा , तिनहि बिनासत जिमि द्रुम दावा ।

वैर - विरोध - नृसंसुभाऊ , ता कर परिपोसक दुखदाऊ ॥

काम - कोप - स्वारथ-अभिमाना , दुरगन दुखद अहहिं जग नाना ।

तिनकर समर जनक-सम जाना , तिन कहँ पोसत सुनु-समाना ॥

ललितकला अरु साहित जोऊ , ता हित विसम-गरल-सम सोऊ ।

जन-उपकार-करम सुभ जेते , थगित होयँ रन छिरतहि तेते ॥

नरजीवनसंहार अरु , साहित - कला - बिनास ।

नास धरम अरु अरथ कर , समर सुजन-हिय-त्रास ॥३॥

दुरबल मनुज रहहिं जग कैसे , मृग-सावक केहरि-भय जैसे ।

चिंता-अनल दहैं दिन-राती , जा कर होय सबल अरि वाती ॥

देस अबल तिमि आस्रयहीना , सिसु अनाथ इव अतिसय दीना ।

मसोलिनी इटली कर सासक , भयो नृसंस-विचार-प्रकासक ॥

हवस देस ऊपर करि धावा , ता कर राज सकल हथियावा ।

कीन जपान चीन कर धरसन , करिकै निखिल तासु धन-करसन ॥

हिटलर पुनि जरमन-अधिनायक , भयो पौलंड-मरम महँ सायक ।

आंगल-फ्रांस संधि तब कीनी , हिटलर कहँ चेतावनि दीनी ॥

ख्रीस्ट अबद उन्नीस-सत , बरस नवाधिक-तीस ।

मास सितम्बर त्रय तिथी , रन छिरयो अति खीस ॥४॥

मायाबल लहि हिटलर कूरा , दनुज-रूप धारन करि पूरा ।

लघु लघु देस हड़पि बहु लीने , कस्ट अपार प्रजा कहँ दीने ॥

संकट लखि आंगल-अधनीसा , बरन चह्यो भारत-मन-ईसा ।
 बैसराय लहि तासु निदेसा , गांधी कहँ द्रुत दीन सँदेसा ॥
 सिमला महँ तब भयऊ मिलापा , प्रीति-सहित तिन कीन सँलापा ।
 गांधी कह्यो बिनु भारत पूछे , समर-मनोरथ होवहिं छूछे ॥
 प्रजातन्त्र-हित लरहु जु भाई , भारत ध्रुव तुव होय सहाई ।
 भारत कहँ द्रुत देय सुराजू , साधहु मीत सकल निज काजू ॥

ब्रिटिसराज - हित-साधना , यदि अभिमत इक तोर ।

रनहित भारत-प्रेरना , नहिं अभिमत तब मोर ॥५॥

बैसराय उत्तर अस दीना , रन-परिनाम-लखन समिचीना ।
 रन जीते ब्रिटिसाधिप मीता , करहिं सकाम विचार पुनीता ॥
 भारत कहँ देवहि अधिकारा , उपनिवेश - सासन - समसारा ।
 गांधी कहत सुनहु तुम मीता , तुव विचार कांग्रेस विपरीता ॥
 सो किमि समर साथ तुव देई , देसद्रोह कर अपजस लेई ।
 गांधी-निदेस सहित अनुरागा , कांग्रेस-सचिव मानि पद त्यागा ॥
 लखि अनुसासन-रति तिन केरी , चकित रह्यो जग तिन प्रति हेरी ।
 गतस्वारथ सेवाव्रतलीना , होय न सुजन अरथहित दीना ॥

मुदित भये नहिं पाय पद , सचिव-रूप अभिराम ।

खिन्न भये नहिं छाड़ि पद , सेवकजन निसकाम ॥६॥

भारत-हित-प्रेरित पुनि गाँधी , जीना-वरन-हेत मति बाँधी ।
 कांग्रेस - लीग - परस्पर - भेदा , मिटहिं जथा मत्सर-कृत खेदा ॥
 अस बिधि जतन जाय तिन कीना , पै बिधिकुटिल साथ नहिं दीना ।
 बाढ़त जिमि जिमि मेल-प्रयासा , तिमितिमि टरत संधि कर आसा ॥
 भेद - बिचार - बढ़ाबनहारा , जीना परम दुराग्रह धारा ।
 कहत हिन्दु-मुसलिम विय जाती , तिनमधिकछुनहिंप्रीतिलखाती ॥

जाति-धरम अरु रीति-रिवाजा , अहहिं भिन्न सब समिति-समाजा ।
भाखा-भेख-भाव-मत नाना , तिन कर कछु समान नहिं जाना ॥

जीना कर अस बात सुनि , संप्रदाय - बिस - सानि ।

गांधि लौटि निजगृह गयो , चरचा निसफल जानि ॥७॥

ख्रिस्ट अबद उन्नि-सत-चाली , लीग-प्रमुख जीना बकचाली ।
लवपुर कीन लीग-अधिवेसन , करन हेत किञ्चित अनवेसन ॥
कुटिल उपाय जासु बल पाई , मुसलिमलहहिंअखिलप्रभुताई ।
सिंधु - बंग - सीमान्तप्रदेसा , थान-बलोच पंचनद देसा ॥
जहँ जहँ मुसलिम कर अधिकाई , तहँ तहँ इक नव-देस बनाई ।
पाकिसतान नाम करि वाका , लखहुँ मनोरथ-फल निज पाका ॥
अस बिचारि तिन दीन सुभावा , सो सब लीगजनन अपनावा ।
आपुन भेद-नीति फल देखी , भयो ब्रिटिस-मन हरख बिसेखी ॥

कांग्रेस-मन अति खेद तब , लखि कै लीग कुचाल ।

हानी निज आदर्स कर , देस - भाग पैमाल ॥८॥

हिटलर सपदि फ्रांस बस कीना , ब्रिटिस भये तब बन्धु-बिहीना ।
सकल दलनमिलि निसचयकीना , मिस्त्रि-सासन चाहियत कीना ॥
चरचिल कहँ निसचित करि नेता , सत्रु-समन-हित भे समबेता ।
जरमन-बल बाढ्यो जय पाई , आंगल-थल तिन घात लगाई ॥
बन्दन-पुर बम-बरखा कीनी , पै नहिं सक्यो धरनि कछु छीनी ।
देसभगत करि उच्च पुकारा , आंगल-थल प्रियदेस हमारा ॥
मातुसमान परम हितकारी , लखि उपकार जायँ बलिहारी ।
तन-मन-धन सब अरपन कीने , होयँ उरुन नहिं प्रानहु दीने ॥

जरमन सन तब मिलि गये , इटली अरु जापान ।

ब्रिटिस-केहरी-घात-हित , जुटे बाध-बृक-स्वान ॥९॥

कूकुर कहँ घृत हज़म न होई , कथनी अस चरितारथ होई ।
 व्यु निस-देस इटली हथियाई , मिसिर-देस पर आँख गड़ाई ॥
 जरमन करि प्रभुता-मद-हीने , जूरुप-देस बहुल बस कीने ।
 कस्ट अपार प्रजा कहँ दीने , धनवैभव तिनके सब छीने ॥
 पुनि जपान निज पग पसरावा , चीन-राज्य छीन्यो करि धावा ।
 धरसन करि अमरीकन बेड़ा , सोवत सिंह मनहु तिन छेड़ा ॥
 *जम्बुक-मरन-काल जब आवै , सहित उमग मसजिद प्रति धावै ।
 रुज़बलट लखि तासु ढिठाई , कोपसहित रनभेरी बजाई ॥

चरचिल सन करि सन्धितव, अंध-उदधि महँ जाय ।

प्रजातन्त्र-प्रतिपाल-हित , प्रन कीनो सतिभाय ॥१०॥

कलुक काल सत्रुन जय पावा , सुहृद-पच्छ नहिं चरन बढ़ावा ।
 जूरुप-देस बहुल तिन जीते , आफ्रिक-देस किये सुख-रीते ॥
 दीपदीपान्तर निज बस कीने , बरमा - स्याम - सिंहपुर - छीने ।
 समर पेखि भारत नियराया , कतिपय मानव-हिय घबराया ॥
 नरपतिगन आंगल-सँग कीना , कतिपय-दल सहाय कलु दीना ।
 कांग्रेस जदपि जुद्ध-प्रतिकूला , सांति-सुदेस-हेत अनुकूला ॥
 सेवक-जन कहँ दीन निदेसा , भारतहित तुम कहु हमेसा ।
 करहु उपाय सोउ दिन-रैना , जा सों रहहि देस महँ चैना ॥

तव जीना कर लीगहू , समर साथ नहिं दीन ।

पै सैनिक भरती बिखे , कलु प्रतिबन्ध न कीन ॥११॥

उन्निस सत सन द्वै अरु चाली , चरचिलअसइकजुगतिनिकाली ।
 क्रिप्स नाम इक सचिव सयाना , भारत प्रति तिन तुरत पठाना ॥

* 'जब गीढ़ की मौत आती है तो मसजिद में जा कर मृतता है'—(उर्दू कहावत)

वा कहँ अस अनुसासन दीना , जाय मिलहु गांधी अरु जीना ।
 देउ सुमति जिमि समर सहाई , होवहिं भाब-तटस्थ बिहाई ॥
 गगनपन्थ भारत महँ आवा , नेतागनन सँदेस पठावा ।
 जीना-गांधि मिलन-हित आये , तिन कहँ नृपति-निदेस सुनाये ॥
 समर-अन्त लागि करहु प्रतिच्छा , ब्रिटिस-भूप पूजहि तुव इच्छा ।
 उपनिवेश-सम देय सुराजू , साधहि भारतहित सब काजू ॥
 नवसासन निरमान करि , निज - इच्छा - अनुसार ।

आंगल-प्रति दुरभावना , सकल करहु परिहार ॥१२॥
 केवल अलपजाति-अधिकारा , ता महँ दखल न होय तुमारा ।
 देस-नृपति पुनि भारत जेते , हमसन सन्धि करहिं नव तेते ॥
 मोहन कहँ सुभाव नहिं भावा , ब्रिटिस-वचन बिसबासन आवा ।
 रौलट-एक्ट कथा दुखदाई , वा कर स्मृति-मार्ग द्रुत आई ॥
 कद्यो सुराज देउ अब भाई , यामहँ भारत-ब्रिटिस भलाई ।
 होय सुतन्त्र भारत जदि आजू , करै तुरत आंगल-हित-काजू ॥
 पर-अधीन जब लौं मम देसा , लोकन किमि देवहुँ संदेसा ।
 भारतजन जूझहु रन माहीं , सोय तुमार अवर बिधि नाहीं ॥

लीग-अधिपनहिंकीनपुनि , क्रिप्स - विचार प्रमान ।

जदपि तासु प्रतिसेध-हित , जुगति दीन तिन आन ॥१३॥
 कहत नहीं भारत इक देस , या महँ संसै कर नहिं लेस ।
 मुसलिम कहँ सासन-अधिकारा , देवहु करि भारत-बँटवारा ॥
 दुबिधा महँ तब क्रिप्स बिचारा , निज करतब नहिं सकत निहारा ।
 होय निरास गयो निज देस , कद्यो सचिव सन बृत्त भदेस ॥
 चरचिल कोप प्रबल तब कीना , फुँकरत उरग जथा मनि-हीना ।
 बंक भृकुटि लोयन रतनारे , फुरकत रदपुट दसन भयारे ॥

गरल-बमन-सम भीसन बानी , कहत गांधि अस दुरमति ठानी ।
नगन-साधु कर लखहुँ ठिठाई , ब्रिटिस-भूष सन करत लराई ॥

धेनु मनावहि कुसल किमि , मृगपति सों करि बैर ।

ब्रिटिस-सिंह सों उरभि कै , नहिं कांग्रेस कर खैर ॥१४॥
सासक करि कै सदय-विहारा , गांधि-सुभाव विकृत करि डारा ।
करिहौं उचित तासु अबसासन , राखिसुरच्छितब्रिटिस-सिंहासन ॥
राज-द्रोहि-जन कर करि मरदन , होवहुँ ब्रिटिस-राज-रिपुतरदन ।
सो इमि करत रह्यो कुबिचारा , करतब निज गांधी निरधारा ॥
आठ अगस्त पुन्य तिथि आई , भारत भाल-तिलक-सम भाई ।
आंगल कहँ चेतावनि दीनी , भारत-तजन-प्रेरना कीनी ॥
करहु सुतन्त्र हमहिं तुम आजू , देवहु मम अधिकार सुराजू ।
लखहु बहुरि किमि भारतवासी , होवहिं समर सत्रु-सदनासी ॥

हिंसा-रहित निरोध करि , रिगुविरोध कर मीत ।

दिखरावहिं सब जगत कहँ , सत्य - प्रेम कर रीत ॥१५॥
यदि मम बचन नहिन तुम माना , निज-हित-बात करी नहिं काना ।
कांग्रेस-हित तब कगैं निदेमा , सत्यसमर अब करहु प्रवेसा ॥
सख अहिंसा कर बलकारी , साहस-सहित हस्त निज धारी ।
देस - जुवक - वारक - नरनारी , लरहिं सत्य-रनखेत-मँभारी ॥
अस प्रन करि जावहिं रन धीरा , पाय सुराज हरैं सब पीरा ।
नातरु सत्यसमर तजि देहा , जैहैं समुद अमरपति-गेहा ॥
केहरिनाद अकनि तिसकेरा , चरचिल बैसराय कहँ प्रेरा ।
भीसन दमन-जन्त्र तिन चाला , कांग्रेस-कुचलन कीन खयाला ॥

कारागत नेता किये , कारजगृह करि बन्द ।

धनसंपति सब छीनि कै , दीने कस्ट अमन्द ॥१६॥

*आगा खाँ कर भवन बिसाला , कारागृह तिहि कीन कराला ।
 †जाया-सचिव-सहित तहँ गाँधी , राख्यो बहु प्रतिबन्धन बाँधी ॥
 कारागृह सुनि मोहन डेरा , देसभगत-जन सासक टेरा ।
 भारत तजहु तुरत तुम भाई , या महँ लखि निज-देस-भलाई ॥
 नेता पूज्य हमारो गाँधी , जायासहित बंदिगृह बाँधी ।
 कीन अहित भारत कर भारा , धरमनीति - प्रतिकूल - बिहारा ॥
 तजहु सकल नेतागन प्यारे , अहहिं सुदेस नयन कर तारे ।
 नतरु बिसम तुव पापनिदानू , दहहिसकुलजिमिविटषकृसानू ॥

मानव जे अभिमानजुत , हित-सिख करहिं न कान ।

अवरन कहँ बहु हानिकर , करहिं स्रोय निज हान ॥१७॥
 चरचिल हितसिख एक न मानी , निज बल फूलि रह्यो अभिमानी ।
 पसुबल कर अनिजंत्रित क्रीड़ा , करन चहत गरबित गत-क्रीड़ा ॥
 बैसराय कहँ आयसु दीनी , कांग्रेस-बल सब लेवहु बीनी ।
 उरग-समान अहहि भयकारी , दमनदंड सन देवहु मारी ॥
 भारतजनभरती अधिकारि , प्रबल सुसासित सैन सजाई ।
 ब्रिटिसराज कर नींव दढ़ाई , होवहु नृप कर समर-सहाई ॥
 करहु उपाय मीत कछु रूरे , मम अभिलास होयँ जस पूरे ।
 पाय निदेस दमन दढ़ कीना , कीने काज अमित नयहीना ।

सासक-जन कर दमन जिमि , दिबस दिबस अधिकाय ।

देसभगत - साहस तथा , छिन छिन बाढ़त जाय ॥१८॥
 लकुट - प्रहार गोलिका - वारा , बरसहिं संतत जिमि जलधारा ।
 देसभगत-जन नहिं कछु डरहीं , अचलसिखरजिमिपयकनपरहीं ॥

❀ खोजा नामक मुसलमानों का धार्मिक नेता ।

† महादेव देसाई—महात्माजी के निज्जु मन्त्री ।

धन-संपत्ति - परिजन - परिवारा , जनमभूमि-हित तिन सब वारा ।
 सत्य-अहिंसा कर ब्रतधारी , सहत समुद संकट अतिभारी ॥
 तप कठोर लखि कै तिन केरा , कियो बिरोध जनता-हिय डेरा ।
 सासक - बरग - अमंगल सोचै , करम-सहाय करन संकोचै ॥
 *जयप्रकास जुबक-दल-नेता , भानु-समान प्रभा-समवेता ।
 ब्रिटिस-अनय-नासन मति ठानी , जुबक तासु अनुसासन मानी ॥
 देसद्रोहि जन मारि कै , लूटै सख - सँभार ।
 रेलतार कहँ काटि कै , जारै पुलिस - अगार ॥१९॥
 †अरुना-अलि साहसि-हिय मोहै , भारत-भाल-अरुन इव सोहै ।
 साहस-बल-कौसलरन राच्यो , सासकहिय महँ खरबर माच्यो ।
 बाबू सुभास अग्रदल-नेता , कुटिलनीति - भेदन - ततवेता ।
 ‡सठ सन करहु सदा सठताई , अस तिन नीति प्रकट बतराई ॥
 ब्रिटिसगुप्तचरनैन मँभारी , नीति-बिसारद बहु रज डारी ।
 भेस बदरि जरमन-प्रति जावा , देसभगत तहँ सैन्य सजावा ।
 पतन बिलोकि सिंहपुर केरा , मलयदेस कीनो तिन डेरा ।
 तिन सुराजहित सेना साजी , ब्रिटिस-बिरोध-दुन्दुभी बाजी ॥
 वरमःविजयि जपान सन , सन्धि कीन जय-आस ।
 मातृभूमि - स्वातन्त्र्यहित , जूमे वीर सुभास ॥२०॥
 आंगल-भागभानु पुनि चमका , आसा-नवल-तेज लहि दमका ।
 हिटलर बैर रूस सन कीना , गुप्त तेज वा कर नहिं चीना ॥

* जयप्रकाश नारायण—प्रसिद्ध समाजवादी नेता तथा उनकी स्त्री प्रभावती देवी ।

† अरुणा—एक अग्रदल की नेता, श्री आसफअली नामक कांग्रेस नेता की पत्नी ।

‡ 'शठे शाठ्यं समाचरेत् ।' (चाणक्यनीति)

§स्टालिनग्राड ओर बड़ि धावा , रूसिन-कर तब मुख कर खावा ।
 आफ्रिक महँ इटली करि साथा , मित्र-चमू सन लायउ माथा ॥
 जरमन लरहिं महारथि-तूला , पै नहिं दैव तिनहिं अनुकूला ।
 सो तहँ पाय पराजय लौटा , विफल प्रयास दैव जब खोटा ॥
 मित्रचमू करि सबल बिरोधा , बरमा महँ जापान निरोधा ।
 हिन्द-सुराज-चमू रन हारा , आंगल ताहि कियो गत-कारा ॥
 भाग उदै जब होत है , सुधरै बिगरे काम ।

काज बने पुनि बिगरिहैं , भये बिधाता बाम ॥२१॥
 भारत-भाग भयो बिपरीता , दुख-संकुल सुख-संपति-रीता ।
 कसतुरबा पति-प्रेम-पुनीता , सीतासम अति धैर्य-परीता ॥
 कारा महँ पतिभगति-परायन , जीरनकाय भई सुरगायन ।
 बीतराग गाँधी गतकामा , धीरज-सुमति-आदि-गुन-धामा ॥
 ब्रह्मचरज उत्तम व्रतधारी , सेवारत मानव-हितकारी ।
 छनिक सोक अनुभव तिन कीना , रवि जनु मेघ-पटल महँ लीना ॥
 देह-क्रिया बिधिवत करवाई , सुन्दर सरल समाध बनाई ।
 मौन-सहित तहँ नितप्रति जावै , सरधा-सहित प्रखून चढ़ावै ॥
 कसतुरबा जानै सबै , भारत - जनगन - अम्ब ।

तासु निधन कर बृत्त जनु , परयो सीस पै बम्ब ॥२२॥
 *संकट कबहुँ एक नहिं आवै , इक पाछे दूजो भट धावै ।
 कसतुरमिरन - सोक दुखदाई , भारत-जन नहिं सकत भुलाई ॥

§ रूस के तत्कालीन तानाशाह जोसेफ स्टालिन के नाम पर बसा हुआ रूस के दक्षिण-पूर्व में स्थित एक प्रसिद्ध नगर ।

* Misfortunes never come single, but in battalions.

—शेक्सपियर

तौ लौं इक अकाल भयकारी , बङ्ग-मही द्रुत आय उजारी ।
 प्रबल प्रभंजन बिटप उपारी , करत मसान-तुल्य फुलवारी ॥
 बन-द्रुमदल जिमि दहत दवारी , छार करहि छिन माँहि पजारी ।
 तिमि अकाल-दारुनदुख-दावा , बंगभूमि-खलिहान जरावा ॥
 पन्द्रह लाख मनुज कर भेंटा , गहि जनु काल भरयो निज पेटा ।
 भारत-जन पावहिं दुख नाना , जूका सरत न सासक काना ॥
 सिसु कर क्लेश न जानई , जिमि विमात हियहीन ।

जनता-दुख किमि जानहीं , सासक स्वारथ - लीन ॥२३॥
 राजगुपाल नीति - ततवेता , देसभगति - सदभाव - समेता ।
 कांग्रेस-लीग-मेल विनु नाहीं , भारत-जन सुतन्त्रता पाहीं ॥
 अस विचारि कारा महँ जाई , गांधी कर अनुसासन पाई ।
 जीना सन कीनी तिन भेंटा , चाहत बैर-विरोध समेटा ॥
 बहु प्रयास निसफल तिन कीना , भसम-घृताहुति-सम फलहीना ।
 उन्निस सत चतुराधिक चाली , सासकजन कछु सुमति सँभाली ॥
 गांधी कहँ कारा सन काढ़ा , भारतजनमन आनँद बाढ़ा ।
 बैसराय - प्रति पाती प्रेसी , अहहँ मीत तुव परमहितैसी ॥

घोसित करहु सुराज द्रुत , सासन-सरनि सुधारि ।

रनहित करौं सहायता , आन्दोलन निरवारि ॥२४॥
 हितकर बात नहीं तिन मानी , चाहत चलावन निज मनमानी ।
 पुनि गांधी जीना पहाँ जाई , संधि-करन कर बात चलाई ॥
 वा कहँ तिन बहु विधि समुझावा , देस-जाति-हित-मरम बतावा ।
 पै नहिं ध्यान तनिक तिन दीना , स्वारथलीन हठी बहु जीना ॥
 बैसराय नृप-आयसु पाई , सिमला महँ इक समिति बुलाई ।
 सरब दलन कर नेता आये , आरज-मुसलिम-सिक्ख सुहाये ॥

कांग्रेसपति स्त्री अबुलकलामा , भूलाभाई संग गुनधामा ।
जीना संग लियाकतखाना , मुसलिम-दल-नेता-सम जाना ॥

सिक्खन कर नेता प्रमुख , तारासिंह सुनाम ।

हरिजन-नेता भीम पुनि , पहुँचे सिमलाधाम ॥२५॥

गांधी जदपि सभासद नाहीं , तिसु विनु समिति सोहकल्लु नाहीं ।
नखत-समूह रहे नभ बाई , विनु मयंक नहिं रैन सुहाई ॥

वेवल-लाट समिति-अभिनेता , मिलन-जग्य कर कुसल प्रनेता ।

गांधी कहँ आदर तिन दीना , कांग्रेस-अधिनायक-सम चीना ॥

सहज-गँभीर बचन तिन भाखा , कांग्रेस निज अधीस चुनि राखा ।

अबुलकलाम अजाद सुनामा , नीति-निपुन विद्या-गुन-धामा ।

ताहि विचारि मान कर जोगू , होहु मुदित लहि तासु सँजोगू ।

गनहु मोहि कांग्रेस कर मीता , राखहुँ तासु लाभ नित चीता ॥

भारत-जन-गन कर अहै , कांग्रेस-प्रतिनिधि-तूल ।

अहै अजाद ता कर अधिप , अस तुम करहु कबूल ॥२६॥

जीना कहत निरर्थक बानी , गांधी कहहु मृसा तुम जानी ।

कांग्रेस प्रतिनिधि हिंदुन केरी , लीग जथा मुसलिम कर हेरी ॥

अबुलकलाम अरथ कर दासा , कांग्रेस-रत निज-स्वारथ-आसा ।

कठपुतरि इव तुव कर सोऊ , निज विचार नहिं राखत कोऊ ॥

जातिद्रोहि मुसलिम-हित-घातक , मानविहीन गनत नहिं पातक ।

बंधु-विरोध-जनित अति भारी , सो किमि बात करन अधिकारी ॥

सत्य अहहु तुम कांग्रेस-नायक , हिंदु-जाति कर कुसल-विधायक ।

हैं तिमि मुसलिम-जन कर नेता , आवहु होयँ संधि-अभिनेता ॥

† 'नक्षत्रताराग्रहसंकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः ।'

राजसभा महँ देवहू , मुसलिम कहँ समभाग ।

कांग्रेस-प्रतिनिधि-भाव कर , दावा देवहु त्याग ॥२७॥

वेवल शरत तीन तब दीनीं , निज थिति बिसद भूरितिन कीनी ।

बैसराय - सेनापति छाड़ी , राजपुरुस कौंसिल सों काढ़ी ॥

दल प्रतिनिधि निरबाचित जोऊ , करहुँ सदस्य कौंसिल कर सोऊ ।

हिन्दू - मुसलिम-समता मानी , अलपदलन अधिकार प्रमानी ॥

भारत कर सासन सुभ चालौं , आंगल-भारत-हित प्रतिपालौं ।

जीना-गांधि सुनहु मत मेरा , अहहि कुसल जा महँ सब केरा ॥

अंसरूप निज-सासन पाई , होवहु अब तुम समर-सहाई ।

समर-अंत नृप परम उदारा , देय तुमहि सासन कर भारा ।

पूरब प्रति गांधी चलै , जीना पच्छिम ओर ।

कहहु भला कैसे रहैं , रवि-रजनी इक ठौर ॥२८॥

गांधी कह भारत इक देसा , मम मत रहहि अखंड हमेसा ।

द्रविड पंचनद गुज्र बंगा , प्रांत सकल भारत कर अंगा ॥

आरज - मुसलिम - सिक्ख-ईसाई , हरिजन-पारसीक सब भाई ।

भारत-मातु केर सुत सारे , अहहिं परस्पर सोदर प्यारे ॥

भेदभाव आंगल करि दीना , तासों हित-अनहित नहिं चीना ।

लरहिं परस्पर स्वारथ लागी , देस-जाति-हित-कारज त्यागी ॥

सो जदि ब्रिटिस जायँ तजि भारत , होयँ सुखी भारत-जन आरत ।

जीना कहत करि भारत-खंडा , देहु हमहिं इक देस अखंडा ॥

निज संस्कृति अरु सभ्यता , निज भासा - बिबहार ।

निज सासन करिहैं सुखी , मुसलिममत - अनुसार ॥२९॥

तारासिंह कहत सुनु भाई , मुसलिम-हित कर देहु दुहाई ।

कहहु न मानहुँ हिंदु-प्रभाऊ , राखहु निज-सासन कर चाऊ ॥

तिमि सिख-बंधु पंचनद माहीं , मुसलिम-सासन मानहिं नाहीं ।
 भारत कर जदि होवहिं खंडा , देहु सिखन इक देस अखंडा ॥
 जहँ निजगुरु-सासन-अनुसारा , सासन करहिं परम सुखसारा ।
 भीमराव हरिजन कर नेता , भयो भेदप्रस्ताव - प्रनेता ॥
 अस्ट कोटि भारत महँ हरिजन , सहहिं सतत हिंदुन कर तरजन ।
 देवहु तिनहिं देस इक न्यारा , हरिजन-थल नामक अति प्यारा ॥
 सुख सन जहँ हरिजन बसैं , लहि सुराज सुखसार ।

दिवस-रैन उन्नति करैं , सबरन - भीति बिसार ॥३०॥
 तब लखि तिन कर अनय अपारा , गाँधी अबस मौन द्रुत धारा ।
 बायस-करकसरव जहँ होई , पिक तहँ रहत मधुर-सुर गोई ॥
 स्वारथलीन अहहिं जहँ नेता , स्वारथ - कपट - रंग - अभिनेता ।
 देस-जाति-हित सकल बिसारी , स्वारथ-लोभ चित्त महँ धारी ॥
 अस्थि-सकल सुखे लहि जाना , लरहिं परस्पर जिमि लघु-स्वाना ।
 कारज सफल होय किमि तहँवा , धर्म-भीति अपमानित जहँवा ॥
 वारिधि महँ जिमि तरल-तरंगा , करहिं सुदृढ़ नौका-मदभंगा ।
 तिमि स्वारथ-परिता भयकारी , आसा - नावडुबावनहारी ॥
 जिमि पासानप्रहार ते , मुकुरभंग हूँ जाय ।

तिमि स्वारथ-परभाव ते , संधि-आस बिनसाय ॥३१॥
 मत्तनाग जिमि तोरि अलाना , करत उपद्रव बहुविधि नाना ।
 जौ लौं लहत न अंकुसवारा , अथवा सिंह-चपेट-प्रहारा ॥
 हिटलर तिमि करि अति उतपाता , भयो सकलजूरुपदुखदाता ।
 अंकुसवार रूस तब दीना , मित्रन मिलि निरबल पुनि कीना ॥
 तासु सहाय बिलग करि लीने , बार बिसम इटली पै कीने ।
 साहस छाँड़ि परयो पग सोई , कादरहिय साहस नहिं होई ॥

मित्रन मिलि बोल्यो पुनि धावा , निज पग तुरत जपान हटावा ।
हिटलर कहँ तब पाय अकेला , मित्रन कीन परास्त सहेला ॥

बम-बरसा भीसन करी , बरलिनपुर पै जाय ।

हिटलर-सत्ता छिनक महँ , दीनी सकल मिटाय ॥३२॥

निजप्रभावनास लखि सोऊ , जीवन महँ सुख लखत न कोऊ ।
संभावितजन कर अपमाना , गनहिं सुजन जमदंड-समाना ॥

रिपुसन करि तब समर कराला , हिटलर गयो काल कर गाला ।

*ता कर पतन पेखि मतिमाना , भाखहिं पतन-मूल अभिमाना ॥

पोत - बिमान - सैन्यदल छीने , प्रमुख चमूपति बंदी कीने ।

चीन - रूस - अमरीका - मेला , तासन भिरत जपान अकेला ॥

अजय बिलोकि देसप्रिय बीरा , उपजी मित्रचमूहिय पीरा ।

बम परमानु भयंकर डारा , हिरोसिमा सुभ नगर उजारा ॥

विवम भयो जापान तब , लखि भीसन संहार ।

नरनारी-धन-विभव कर , दारुन दनुजविहार ॥३३॥

अस्त्रसस्त्र तजि समर-सँभारा , तब तिन चित्त संधि महँ धारा ।

मित्रन देस हस्तगत कीना , पोत-बिमान-सैन्यदल छीना ॥

पै नहिं बिजय पाय अभिमाना , मित्रदलन मानस महँ आना ।

प्रभु कर कीन अमित धनवादा , घर घर होवहिं मंगलनादा ॥

सट बत्सर लागि रन भयकारी , भयो मनुज-धन-धान्य-सँहारी ।

अब पुनि सांति भई सुखकारी , पावस इव निदाघस्रमहारी ॥

सैनिक लौटि गृहन प्रति आये , सिसु उत्सुक भेंटन हित धाये ।

पतनि तासु पति-प्रेम-पुनीता , जोहहिं पथ प्रियप्रेमपरीता ॥

*Pride goeth before a fall — एक अंग्रेजी कहावत । ‘नरक मूल अभिमान’ । (तुलसी)

अहर्हि मुदित नरनारि सब , लखि आहव कर अन्त ।

घरम-अन्त जिमि जलद लखि , हरख मयूर मनन्त ॥३४॥
उन्निस सत पंचाधिकचाली , हिटलर कपट-कुसल बकचाली ।
समर लरत अंतक-मुख जावा , सपदि जपान तासु पथ धावा ॥
समरबिजय लहि आंगल बीरा , भये अचिन्त बिसरि सब पीरा ।
निरवाचन तब तिन निज कीना , सासन-बिधि-सुधार-चित दीना ॥
गतप्रभाव चरचिल तब भयऊ , एटली प्रमुख-सचिव पद गहऊ ।
समदल कर प्रभुता अधिकार्ई , नूतन सासन-सरनि चलाई ।
तजि समस्त अनुदार अनीती , गही समाजवाद सुभरीती ।
जनता-हित मानस महँ राखी , भयो धनिकजन-हित-घृतमाखी ।

बिस्तृत आंगल राज्य कर , पोसक चरचिल ठीठ ।

एटली पुनि होवन चहत , जन-अधीन कर ईठ ॥३५॥
असि-प्रभाव भारत हम जीता , असि-प्रभाव राखहिं तिहि मीता ।
चरचिल अस करि उच्चपुकारा , भारत-हिय विराग करि डारा ॥
पसुवल-मान करत अति सौई , भारत-द्वेस न राखत गोई ।
तजहु हिन्द अस अकनि पुकारा , दीने चरचिल कस्ट अपारा ॥
जिमिजिमिबद्धत अनय-सरिधारा , तिमितिमि साहसअमित अपारा ।
लहि लहि जुबक पार द्रुत जाई , साहस लखि भय सकल बिलाई ।
एटली तब अस कीन बिचारा , चाहियत बैरभाव अब टारा ।
प्रेमसमेत शत्रु बस कीना , निसचय होय द्वेस-बिस-हीना ।
अस बिचारि प्रेसन किये , सचिव प्रमुख तिन तीन ।

*क्रिप्स अलैग्जेण्डर तथा , पैथिक नीति - प्रवीन ॥३६॥

* सर स्ट्रेफर्ड क्रिप्स , होरेस एलेग्जैण्डर और लार्ड पैथिक लारन्स—तीन प्रसिद्ध सचिव ।

तिन बिचार अस बिधि तब कीना , भारत-हित चहियत इमि कीना ।
 देसभगतजन - बंधनमोखू , छमन-सुराजचमू कर दोखू ॥
 जनता कर प्रतिनिधि जन जोऊ , पावहिं पुनि सासन-पद सोऊ ।
 बैसरायकौंसल कर ठाई , देसी-सासन छनिक बनाई ॥
 उपनिवेश - सासन - अनुकूला , होय ब्रिटिस-भारत-सुखमूला ।
 जनता-प्रतिनिधिसभा बुलाई , अखिल सुराज-गुटिय सुलभाई ॥
 सासन-बिधि नूतन निरमाई , सब दल होयँ सहोदर भाई ।
 परिहरि सकल ब्रिटिस प्रति द्वेसा , सखा-सदस हित करहिं हमेसा ॥

राजसचिव तीनहु जबै , देहलि पहुँचे आय ।

प्रमुखदलन नेता तबै , लीने तुम्ह बुलाय ॥३७॥
 अबुलकलाम कांग्रेस कर नेता , जीना मुसलिम-लांग-प्रनेता ।
 नृपमंडल नायक भूवाला , तारासिंह पंथरखवाला ॥
 भीमराव हरिजन-अधिनायक , समदल कर नेता इक लायक ।
 महिला-जन-प्रतिनिधि तहँ एका , आयो निज सत पै धरि टेका ॥
 कानन महँ मृग बसहिं अनेका , होवत हरि बनभूखन एका ।
 तिमि दलनायक तहँ बहु आये , पै बिनु गांधी न समिति सुहाये ।
 सादर सचिवन वाहि बुलावा , मानि निमंत्रन देहलि आवा ॥
 राजमहल दलनायक आना , बगहिं सुखी भोगत रा नाना ।

त्याग-मूर्ति गांधी तहाँ , बिगतलोभ-मद - मान ।

हरिजन-बस्ती कहँ दियो , आसम-सम सुभ मान ॥३८॥
 सचिवन तब इक स्कीम बनाई , हिन्द - संघ - थापन सुखदाई ।
 ब्रिटिसप्रांत अरु देस-नरेसा , जाके होवहिं अंग हमेसा ॥
 डाक-तार अरु रेल-बिभागा , नयविदेस रच्छा सन रागा ।
 आपुन व्ययहित धन-संपादन , अस अधिकार किये प्रतिपादन ॥

समिति सहाय तासु विय बरनी , धारा-सभा अरु कारज-करनी ।
संप्रदायमतभेद जो होई , मुख्यदलनप्रतिनिधिमिलिसोई ॥
करहिं परस्पर निज निपटारा , दीने ताहि सकल अधिकारा ।
सासन कर जे अवर विभागा , ता कहँ संघ प्रांत-हित त्यागा ॥

अहहिं प्रांत स्वाधीन सब , निज-निज मंडल माहिं ।

सकल-देस-हित लाभ महँ , संघ-विवस सो आहिं ॥३९॥
धारासभा प्रांत कर जोई , निरवाचित करि प्रतिनिधि सोई ।
प्रेसहिं संघ-समिति महँ जोई , करहिं विधान सामन कर सोई ॥
निरवाचन-गन-त्रितय बनावा , मुखबो नाम प्रथम मनभावा ।
पुप्स नाम दूजा गन जानौ , तीजा बंग-असामहि मानौ ॥
जदपि स्कीम महँ दोस अनेका , गांधी तदपि लख्यो गुन एका ।
भारत रहहि इमि देस अखंडा , फूटहि अवसि फूट कर भंडा ॥
सो तिन कांग्रेस कहँ मत दीना , स्कीम-समर्थन कर समिचीना ।
भारत -खंडन-सुपन बिलीना , लखि हतास भयो अति जीना ॥

भारतथितआंगल पुनः , हरिजन -सिक्ख -समेत ।

तजि दीनी सुभ जोजना , जानि अफल निज-हेत ॥४०॥
राजसचिव लखि विफल प्रयासा , गये सुदेस सकल तजि आसा ।
छनिक-देसि -सासन -निरमाना , वेवल पै निज करतव जाना ॥
*कांग्रेस-मुख नेहरू अरु जीना , तिन कहँ तुरत निमंत्रन दीना ।
आवहु मम सहाय-हित मीता , सासन होय जु प्रेम-परीता ॥
कांग्रेस-लीग अवर दलमेला , देस-सुसासन करहि सहेला ।
नेहरू देसलाभ चित धारी , वेवल कर आसा सतकारी ॥

लीग-अधिप जीना अभिमानी , वेवल कर इक बात न मानी ।
नेहरू तब सासन सुभ साजा , भयो सचिव-मंडल-सिरताजा ॥

खीस्ट अबद उन्नीस सत , सट - उत्तर चालीस ।

मास आठ सोडस तिथि , जीना लीग - अधीस ॥४१॥
वेवल - नीति - विरोध - प्रदर्शक , दुस्ट-मनुज-मानस कर हर्षक ।
तब प्रतिवाद-दिवस-अनुसासन , दीनो बिसम देस-सुखनासन ॥
बिसमय तब करि लीग प्रचारा , कीन उपद्रव भारत भारा ।
ठाँव-ठाँव भीमन उतपाता , भये दुखद जिमि उलका-पाता ॥
कलिकाता - नगरी सुभ सोहै , सुखमासन सुर-किन्नर मोहै ।
धवल-धाम-सोभा अति न्यारी , सुख-संपति नहिं जात सँभारी ॥
तहँ तब प्रकट भयो विकराला , प्रलयकालदुर्दम जनु काला ।
भीसन अनल - उपद्रवरूपा , दारुन मनहु दनुज-कुल-भूपा ॥

काल-गाल सम बदन महे , डारि लिये नरनार ।

कञ्चनपुर सम नगर सुभ , कियो बिनक महँ द्वार ॥४२॥
नर-आभिस-भूखे जिमि दानव , मारहिं तिमि मानव कहँ मानव ।
रजनिकाल विहरै जिमि चोरा , निरभय तिमि पिसितासन घोरा ॥
लूट-खसूट करहिं चहुँ ओरा , सुनत नहीं कछु बिनय-निहोरा ।
बनिता-वृद्ध-तरुन-सिसु जोऊ , होवत दनुज-क्रोध-बस सोऊ ॥
बहहिं चतुर्दिक सोनित-धारा , पावस जिमि सरिनीर अपारा ।
रुण्डरु मुंड बहहिं तहँ कैसे , भाड़भँखाड़ सरित-जल जैसे ॥
खलजन बाँधि नास-हित फँटा , भवन अनेक किये दव-भँटा ।
सुखमाकर पुर सुरगसमाना , कीन भयावह नरकसमाना ॥

दान-दया - करुना - बिमा , मित्रभाव - उपकार ।

बिनसे उत्तम भाव सब , लखि पातक-अधिकार ॥४३॥

बिसम बैर-ज्वाला तब फैली , मानहु भीसन व्याधि बिसैली ।
नवाखली चटगाँव-रु हौरा , बिसम बैर-दानव करि दौरा ॥
करिकै द्वेसभावबिसतारा , कीने मुसलिम कुपित अपारा ।
प्रीति पुरातन सकल बिहाई , हनहिं हिंदु जिमि धेनु कसाई ॥
लूटहिं विभव भवन दब देई , बल-प्रयोग मुसलिम करि लेई ।
महिला बहु अपहृत करि लीनीं , भूसुरसुरभिदेव-व्रति कीनी ॥
संसित लखि निज जीवन-सारा , धरम-विभव-धरनी-परिवारा ।
आरज जनमभूमि निज त्यागी , भये प्रवास-गमनअनुरागी ॥

जीवन-धन-धरनी-कुसल , धरम - आत्मसम्मान ।

निजकुटुम्बपोसन नहीं , किमि तहँ बसै सुजान ॥४४॥
बंग-हिंदु विनु घर-परिवारा , आस्रयहित बिहार पगु धारा ।
सहधरमिन कर गति दुखदाई , लखि बिहार-आरज दुख पाई ॥
कीनो निज-हिय कोप अपारा , करिहँ बंधु-कस्ट-प्रतिकारा ।
अस बिचारि मुसलिम-बध कीना , करुनाभाव सकल तजि दीना ॥
बंग अनय मुसलिम जस कीने , सूद-समेत बिहारिन दीने ।
दच्छिनप्रांत पंचनददेसा , संप्रदाय-बिस कीन प्रवेसा ॥
आरज-जवन पगस्पर भिरहीं , निरदय-भाव-गरत महँ गिरहीं ।
तजि कै सकल प्रीति-बिबहारा , हिंस्र-जन्तु इव करहिं प्रहारा ॥

जदपि मुम्बई पंचनद , भयो उपद्रव सांत ।

तदपि बिहार-रु बंग महँ , मानव रहे असांत ॥४५॥

तब गांधी करुना - अवतारा , अस निज करतब रुचिर बिचारा ।
जाय नवाखलि डारउँ डेरा , मो कहँ प्रभुवर अब अस प्रेरा ॥
बरसि प्रेम-बारिद सुखदाई , बैर-अनल सब देउँ बुझाई ।
ग्राम रुचिर सुन्दर सीरामा , रचि तहँ आस्रम इक अभिरामा ॥

मुसलिम-मधि तिन कीन ठिकाना , दीन-रखन करतव निज माना ।
 प्रेमसहित मुसलिम समभायो , सोदर-सम जानहु हमसायो ॥
 भारत कर तुम दोउ सपूता , भगरि परस्पर होउ कपूता ।
 प्रेम पुरातन उभय बिसारी , करहु देस कर अनहित भारी ॥
 अहहि एक जगदीस प्रभू , तिस कर नाम अनेक ।

राम कहो अच्छा कहो , भजहु वाहि तजि टेक ॥४६॥
 मानव सकल तासु संताना , भाखहिं बेद-पुरान-कुराना ।
 *मानजोग मुहमद मतिमाना , निरअपराध-हनन अध माना ।
 गनहु हिंदु लघु-भ्रात-समाना , कबहुँ उचित नहिं बैर कमाना ।
 सरनागत कहँ देय कलेसा , सहज नरक नर पाय प्रवेसा ॥
 हिंदुन कहँ अस दीन निदेसा , रामभगत तुम रहहु हमेसा ।
 रामसरन नहिं कस्ट-कलेसा , रामसरन सुख मिलत हमेसा ॥
 रामभगत निरभय भयहारी , रामभगत दुखियन उपकारी ।
 रामभगत मानव-कुल-वंधू , राखत सब सन प्रेम-संबंधू ॥

रामभगत कहलाय कै , डरत मीचु सों जोय ।

अमर-अगद कहँ पाय खल , डरत बीछु सों सोय ॥४७॥
 आंगल अब निसचै करि लीना , भारत-तजन अहै समिचीना ।
 सो तुम प्रेम-सहित रहि साथा , उन्नत करहु देस कर माथा ॥
 आंगल नतरु कुटिल-नय-पंडित , लखि तुव ऐक्य-भावना खंडित ।
 भेदनीति कहँ पुनि अपनाई , निज-सासन कर नींव द्ढ़ाई ॥
 भारत-तजन-भाव तजि दैहैं , निज-स्वारथ-साधन करि लैहैं ।
 जाय बिहार कीन उपदेसा , मुसलिम सन करु प्रीत हमेसा ॥

आरज-धरम-मरम सुभ एहा , सरनागत सन परम सनेहा ।
सरनागतसम तुव हमसाये , होय अमित अघ तिनहिं सताये ॥

सरनागतपालन करौ , जदपि प्रानभय होय ।

सरनागतहित जूझहीं , सुरग जायँ नर सोय ॥४८॥
परिब्राजक जिमि घर-घर जावै , धरम-निदेस सबन पहुँचावै ।
करत छेम तिन कर सुखदाई , गृहमेधिन करतव समुझाई ॥
ग्राम-ग्राम गांधी तिमि जावै , सत्य - अहिंसापाठ पढ़ावै ।
कुसल-छेम चाहत सब केरी , प्रेम-भाव-करतव महँ प्रेरी ॥
घरम-जनित जिमि दारुन दावा , पावस-पय लहि सकल नसावा ।
तिमि गांधी-उपदेस-पियूखा , सांत करत हिय हित-जल-रूखा ॥
प्रेम-प्रसार गांधि अस कीना , बैर - विरोधभाव हरि लीना ।
देसभगति कर पाठ पढ़ाई , नूतन प्रेम-सरनि सिखलाई ॥

अखिल-एसिया-रास्ट्रगन , जुरे देहली आय ।

नेहरु निरवाचिा कियो , सभा-अधिप सतिभाय ॥४९॥
देस - विदेसन नेता आये , प्रेमभाव उर महँ सरसाये ।
सोचन-हित सुचि सांति-उपावा , समर-जनित जिमि दुःख दुरावा ।
गांधी पाय निमंत्रन आवा , उड़गन महँ जिमि चंद सुहावा ।
सत्य-अहिंसा कर उपदेसा , दीनो नासन सकल-कलेसा ॥
बैर सों बैर-समन नहिं होवै , घृत सों अनल सांत किमि होवै ।
देस सकल करि प्रेम परस्पर , होवहु बिस्व-छेमहित तत्पर ॥
समरसाप करि देवहु दूरा , सांति-अभिय बरसहु भरपूरा ।
प्रेम - दया - सदभाव हमेसा , भारत कर पावन संदेसा ॥

आपुन छेम-रु जगत को , जो चाहत तुम मीत ।

बैरभाव सब त्यागि कै , करहु परस्पर प्रीत ॥५०॥

भारत अहहि बुद्ध कर देसा , त्रिसरत नहिं प्रियदरसि-सँदेसा ।
 धरम-विजय करि प्रेम-अधारा , मनुज-जाति पावत सुख-सारा ॥
 बल सन जोउ सत्रु बस कीना , बल लहि प्रतिसोधन चह कीना ।
 प्रेम-प्रभाव-बिबस रिपु जोऊ , बैर-बिचार सकल तजि सोऊ ॥
 पर-उपकार-जतन कर इच्छुक , होवत अधिक प्रेम कर भिच्छुक ।
 राजनीति महँ प्रेम-प्रभाऊ , होय अपार न संसय काऊ ॥
 भारत-रन-सुतन्त्रता माहीं , आयुध सत्य-प्रेम सम नाहीं ।
 लहि सुराज सुखसंपति साथी , उन्नत करिहँ भारत-साथी ॥

सत्य-अहिंसा-समर महँ , गांधि-विजय ध्रुव पेखि ।

सरबदेसनेता तहाँ , स्ताधा करहिं बिसेखि ॥५१॥

मनुज महान मान-अपमाना , जस-अपजस गनि एक समाना ।
 करहिं करम निज स्वारथ-हीना , पर-उपकार-करम-परवीना ॥
 समिति-अन्त देहलि तजि गाँधी , बंग-गमन-हित परिकर बाँधी ।
 जाय नवाखलि कीनो डेरा , बंगालिन भायप-प्रति प्रेरा ॥
 छनिक-देसि-सासन तिहि काला , नहरु-लियाकत संग सुचाला ।
 बाधा बिबिध जदपि पथ माहीं , धीर-मनुज घबरावत नाहीं ॥
 कांग्रेस चलत देस-हित-गैला , लीग करत परचार बिसैला ।
 तिन कर भयो विलच्छन मेला , मिलहिं जथा लहसुन अरु ऐला ॥

अवगुन महँ गुन प्रगटई , पाय दैव अनुकूल ।

हरयो लियाकत लवनकर , गांधी मनअनुकूल ॥५२॥

दुरजन जदपि धरत बहुदोसा , साजन तदपि करत नहिं रोसा ।
 जीना कीन बिरोध-प्रचारा , गांधी तदपि प्रेम चित धारा ॥
 प्रेम-प्रभाव लखहु सुभ मीता , जीना गांधि प्रेम सन जीता ।
 उभय परस्पर मिलि मत कीना , प्रेम-सँदेस देस कहँ दीना ॥

रहहु परस्पर सिगरे भाई , तजि सब बैर-बिरोध-लराई ।
मन-वच-करम रहहु तुम ऐसे , रहहि परस्पर सोदर जैसे ॥
गहहु प्रेम सन निज अधिकारा , त्यागहु बैर - बिरोधबिचारा ।
पै मतभेद प्रबल इक आई , नेता बिय मधि कीन जुदाई ॥

भारत देस अखंड है , कहै गांधि मतिमान ।

जीना चाहत भाग द्वै , भारत - पाकिस्तान ॥५३॥
गांधीमत भारत इक देसा , अहहि एक अरु रहहि हमेसा ।
तासु विभाजन अनुचित माना , निज-जननी-वध-जतन समाना ॥
आरज-मुसलिम मम मत माहीं , भारतमातु नयन-जुग आहीं ।
जीना करत प्रबल हठ एका , पाकिस्तान बनावन - टेका ॥
मुसलिम-हिंदु पृथक बिय जाती , अहहिं परस्पर जिमि दिनराती ।
पृथक देस लहि आपुन एका , रहैं सुतंत्र अस मुसलिम-टेका ॥
उत्तम मरन न परवस जीना , रहहिं कदापि न हिन्दु-अधीना ।
सिक्ख-रु बंगबासी अस भाखैं , हम नहिं मुसलिम-सासक राखैं ॥

माम जून उन्नीस सत , अस्टाधिक चालीस ।

भारत कर सासन तजौं , निसचै बिसवे बीस ॥५४॥
आंगलपति अस घोसित कीना , आंगल-भारत-हित हम चीना ।
निसचिततिथितजिहैं निजसासन , भारतजन गहि भारत-सासन ॥
होयँ सुखी अस आस हमारी , बैर-बिरोध समस्त बिसारी ।
*मांडवटन प्रतिनिधि नृप केरा , सखत-तुल्य भारत तिन हेरा ॥
आंगलपति कहँ तिन मत दीना , भारत-तजन तुरत समिचीना ।
मुसलिम कहँ देबहु इक देसा , जा महुँ रहहिं सुतंत्र हमेसा ॥

करि कै बंग पंचनद - भंगा , तासु बनावहु समुचित अंगा ।
पाकिसतान - रु भारतनामा , उभय देस पावहिं सुखधामा ॥

ख्रिस्ट-अवद उन्नीससत , सात अधिक चालीस ।

मास आठ तिथि पंचदस , हिन्द तजैं इंगलीस ॥५५॥
आंगल-पति घोसित अस कीना , उभय-देस-हित या महँ चीना ।
मास अगस्त पंचदस वारा , आंगल-नृप निज बचन सकारा ॥
भारत-खंड दोउ तिन कीने , पाक-रु हिन्द नाम सुभ दीने ।
उपनिवेश-सम दीन सुराजू , साजी सैन्य देसहितकाजू ॥
बंग-पंजाबभंग करि दीना , बचन प्रमान तुरत निज कीना ।
मांटवटन नृप-प्रतिनिधि नीका , रास्ट्र-अधिप कहँ दीनो टीका ॥
राजनबाबु सकल गुनधामा , रास्ट्र-अधिप-पद लहि अभिरामा ।
प्रमुख-सचिव नेहरु कहँ कीना , तासु सहाय पटेलहि चीना ॥

भारत लही सुतंत्रता , आंगल गये सुदेस ।

त्रिवरनधुज फहरावहीं , जय - पताक - समवेस ॥५६॥
त्रिवरनधुज चहुँ ओर सुहाये , भारत-जस चहुँ दिसि पसराये ।
मोदप्रमोद भये चहुँ ओरा , जय जय गांधि करैं सब सोरा ॥
घर-घर होवत मंगलगाना , मोद मनावहिं पुरजन नाना ।
हरख प्रवाह उमड़ि बढ़ि आवा , नासत सकल दुरित दुखदावा ॥
बाजहिं घर-घर मोद बधावा , मानहु रंक इन्द्रपद पावा ।
देहलि होय महोच्छ्व भारी , गाँधि-सुजस गावहिं नरनारी ॥
बापू धन्य अमर-जस-भाजन , सतत देस-हित-चिन्तक साजन ।
रन - सुराज - संचालन कीना , रिपु-मद-गरल प्रेम सन बीना ॥

दासभावबंधन हरे , मंगल प्रेम - प्रभाव ।

परसासनकर्दम - धँसी , काढ़ी भारतनाव ॥५७॥

भयो सुराज - पोत - कनधारा , भारत - भागधुरंधर भारा ।
 सत्य-अहिंसा अटल पुजारी , विस्व-प्रेम-अभिभावक भारी ॥
 धरमनीति कर मेलकरावन , ऋजुता कर सुभपाठसिखावन ।
 धरमपन्थनेता सुखकारी , मोहन नाम असंगलहारी ॥
 मोद - पयोधि - मगन नरनारी , पै नहिं सुस्थ-चित्त वृजिनारी ।
 उर-अन्तर जारत दुखदावा , खंडन-दुख भारत कत पावा ॥
 कस्ट प्रबल ता कहँ इक आना , गनहुँ अहिंसा प्रान-समाना ।
 सो अब राजनीति-थल आई , सकहि न निज गौरव प्रकटाई ॥

कांग्रेस निज सासन रची , करिहै अमित सुधार ।

पै नहिं सेना-पुलिस बिनु , रखिहै निज अधिकार ॥५८॥
 हिंदू - मुसलिम - सिक्ख - ईसाई , हरिजन मिलि इक समिति बनाई ।
 भारत कर सुभ सासन साजा , मनहु ऐक्य तहँ सतनु विराजा ॥
 अभिनंदन-मंगल दिन आवा , हरख-प्रमोद चहुँ दिसि छावा ।
 ता छिन बात विलच्छन देखी , रनसुतन्त्र-जय पाय बिसेखी ॥
 सेनापति मोहन गतमाना , जाय नवाखलि कीन ठिकाना ।
 मनुज महान करम निज करहीं , फल-आसा नहि मनमहँ धरहीं ।
 कंचन धूरि गनहिं इकरूपा , विगतबिकार सुजन-हिय-भूषा ।
 गनहिं समान मान-अपमाना , विजय-पराजय सम करि जाना ॥

सतत लोकसेवा - निरत , विगत - लोभ - मद-मान ।

मनुजरतन अन-मन-हरन , सीतल इन्दु - समान ॥५९॥
 देस-बिभाजन कर परिनामा , भयो पंचनद-हित दुखधामा ।
 मनुज रूप धरि दनुजन केरा , मानहु कुटिल काल-कलि प्रेरा ॥
 करहिं नृसंस जुबकजनघाता , मारहिं जरठ-बाल-तियब्राता ।
 घोर करम तहँ करहिं पिसाचा , मानहु पाप नगन हूँ नाचा ॥

हरहिं सतीत्व सतीजन केरा , करहिं न कान दुखित-जन टेरा ।
 जारहिं गेह छूटि धनधाना , फिरहिं उच्छ्वंखल प्रेत-समाना ॥
 लहहिं सँतोस न हरि धन-धामा , लूटहिं दुष्ट धरम सुखधामा ।
 धरमधीर रमनी अरु बीरा , तजहिं देह नहिं सुधरम-हीरा ॥

देह नासि अरु धरम थिर , अस बिचारि मन धीर ।

समुद तजै तनु धरम-हित , निदरि कालकृत पीर ॥६०॥
 बंग-विभाजन अपि दुखदाई , भयो अमित रिपुजन-सुखदाई ।
 तासु हिये बिलसत अस आसा , भारत ग्रसित विभाजन-पासा ॥
 होवहि मद-मत्सर कर डेरा , दीसहि प्रेम न कितहूँ हेरा ।
 भारतीय लरि मरहिं परस्पर , रहहिं सदा मदमत्सर-तत्पर ॥
 तासु बिरोध माहिं मम लाहू , अनहित लखि उर अमित उद्धाहू ।
 पै खल-हिय-अभिलास न पूजी , देखी बात तहाँ इक दूजी ॥
 सांति समस्त बंग महि छाई , प्रकटत सहज गांधि-प्रभुताई ।
 सकल प्रयास भयो तिस केरा , मुसलिम हिंदु अनुज-सम हेरा ॥

ईद-महोच्छव मिलि कियो , तजि कै बैर-बिबाद ।

हिंदू-मुसलिम मिलि कियो , जय भारत सुभनाद ॥६१॥
 गांधी तब देहलि महँ जाई , बिरलागृह महँ धूनि रमाई ।
 नियम-समेत करत सतसंगा , रामनाम-जप चलत अभंगा ॥
 देत पंजाबिन कहँ उपदेसा , तजहु कदापि न तुम निज देसा ।
 तजहु सुदेस न वरु मरि जाऊ , कादर मान लहत नहिं काऊ ।
 मानी मनुज सिंह-समतूला , तजत सुदेस नहिन सुखमूला ।
 पाकिस्तान-हिंद कर सासक , होहु उभय गड़बड़ कर नासक ॥
 रच्छा करउ अलप-मत केरी , मानहु मीत सुमति तुम मेरी ।
 पाकदेस महँ जाय अकेला , हौं अब करहुँ निवास सहेला ॥

रामनाम सुभ टेक गहि , तजिकै मनुज-भरोस ।

जो कोऊ मो कोहनै , वा प्रति करहुँ न रोस ॥६२॥
 सब थल जाय प्रेम-संदेस , देवहुँ सुभ करतव-उपदेस ।
 जासों अलपमतन दुख हरहीं , प्रेमभाव आपुन चित धरहीं ॥
 जव लौं चलत द्वेस अरु घाता , तव लौं भाव न प्रेम-सुबाता ।
 संप्रदाय-बिस बिसम प्रभाऊ , गनहिं उभयदल हित नहिं काऊ ॥
 करहिं परस्पर घात-प्रघाता , सब तजि प्रेमभाव कर बाता ।
 अस लखि मोहन निसचै कीना , अनसन-व्रत चहियत अब लीना ॥
 भारतजन जिमि बैर बिहाई , होवहिं प्रेम - पंथ - अनुयाई ।
 पाप-निचयहित कुलिस-समाना , अनसन मनरुज-भेसज जाना ॥

ख्रिस्ट अवद उन्नीस सत , अस्टाधिक चालीस ।

तिथी त्रयोदस जनवरी , अनसन कीन यतीस ॥६३॥
 अनसन करत न करतव त्यागा , जनहित करत सदा बड़भागा ।
 तासु भाव लखि चिंतित लोकू , भये निमग्न जनु सागर-सोकू ॥
 *शान्ति-समय इक तुरत बनाई , बचन दीन रहिहैं जिमि भाई ।
 मुसलिमजन - जीवन-धन-धरमा , रखिहैं जानि परम सुभ करमा ॥
 हिन्दुन अस आस्वासन दीना , अनसन तजि तिन पारन कीना ।
 कतिपय दिवस गये इक मूढ़ा , धरम-अन्ध अघकर्दम-बूढ़ा ॥
 बिरलाभवन जुबक इक आयो , तिन तहँ दारुन बंब चलायो ।
 ईसकृपा न भई कछु हानी , रहे अछत बैठे सब प्राणी ॥
 राजपुरुस बंदी कियो , जुबक धरम - मदमूढ़ ।
 गांधी कहँ जोऊ कहत , मुसलिम-मीत निगूढ़ ॥६४॥

करुनामय उदार-चित गाँधी , तासु उधार-आस चित बाँधी ।
 कस्यो जुबक पथभ्रष्ट बिचारा , मो कहँ धरम-सत्रु निरधारा ॥
 भयो प्रवृत्त मोर बध माहीं , वा कर दोस गनहुँ कछु नाहीं ।
 अहहि जुबक नहिं निंदन जोगू , वा पै उचित न दंड-प्रजोगू ॥
 बंध-विमोचन-हित तनु धारा , कैद करन नहिं करम हमारा ।
 उपमंत्री गांधी-पटचेला , नीति-कुसल सरदार पटेला ॥
 कहत बापु तव अरि दुखदाई , तनु-व्यति हेत रहे लिव लाई ।
 जो हों राउर आयसु पाऊँ , राजपुरुस कछु नियत कराऊँ ॥

आयुधकरगहिदिवसनिंसि , करहिं सुरच्छन तोर ।

देस-धरम-हित होय अरु , अभिमत उत्तम मोर ॥६५॥
 मोहन प्रेमसहित तिहि वारा , मम हित करहु न मीत बिचारा ।
 हों कछु निज तनु सोच न राखी , सत्य कहों माधव मम साखी ॥
 *जा कर होय राम रखवारा , ता कहँ कवन बिटावनहारा ।
 करम करहुँ निज तजि अभिमाना , सन महँ सुमिरि सदा भगवाना ॥
 †मो कहँ सुमनहार गर डारा , अथवा उरग उभय इक-सारा ।
 देस-धरम-जनता-हित लागी , हों नित जिय-अरपन-अनुरागी ॥
 जौ लों मम तनु कारज-जोगू , करतव सन नहिं होय बियोगू ।
 हिंदू-मुसलिम केर मितार्ई , जीवन-लच्छ अहहि मम भाई ।
 भारत-सेवा-जग्य महँ , आहुति करि निज देह ।
 मनुजमात्र कहँ दरसिहों , जीवन कर फल एह ॥६६॥

* 'जा को राखै साइयाँ, मारि सकै नहिं कोय ।

बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय' ॥ (कबीर)

† To me bouquets (सुमनगुच्छ, गुलदस्ता) & bullets
 (बंदूक की गोलियाँ) are alike—महात्मा गाँधी ।

आरज-मुसलिम बैर-विरोधा , करहिं गांधि-जीवन-उपरोधा ।
 मनुज-देह-घातक ब्रन जैसे , भावविरोधि जाति-हित तैसे ॥
 जनवरि मास तिथी सटबीसा , सुमिरि सुतंत्रदिवस जन-ईसा ।
 मन महुँ अस विचार सुभधारा , करऊँ सबल अब प्रेमप्रचारा ॥
 जावहुँ नगर-नगर अरु ग्रामा , देवहुँ अस सँदेस सुखधामा ।
 ईस-कृपा लहि रुचिर सुगाजू , करहु देम-उन्नति-हित काजू ॥
 तनमनबचन झँडि सब बैरा , सतत मनावहु भारतखैरा ।
 समिक करै भारतहित काजू , तिनकर पोसन धनिक समाजू ॥

कुटिल दसा सनि करजथा , प्रकट होय अति खीस ।

भारत-हित-नासन तथा , भई जनवरी तीस ॥६७॥
 निजसेवक कहँ प्रात पुकारी , गांधि कछो मम पत्र-पिटारी ।
 ल्यावहु उतरु देहुँ तिन केरा , कछु भरोस नहिं जीवन केरा ॥
 सुद्र-हृदै मानुस जो कोऊ , घटना भावि लखै द्रुत सोऊ ।
 दर्पन महुँ प्रतिबिंबित जैसे , होयँ पदारथ मुनिमन तैसे ॥
 दिन-द्वयकाल पंचघटि बीते , देवल प्रति जावहिं अधरीते ।
 हिंदु-जुबक तहँ तब इक आयो , आदर-मिस तिन मस्तक नायो ॥
 नाथूराम विनायकरावा , अवसर लहि पिसतौल चलावा ।
 कठिनकुठारवार सहि जैसे , द्रुमवर गिरत गांधि तहँ तैसे ॥

राम राम हे राम कहि , धरनि परे सुखधाम ।

चकित भये नरनारि सब , मच्यो बिकट कुहराम ॥६८॥
 बैद्य-विचच्छन्न जतन अनेका , करहिं गांधि-जिय-रच्छन्न-टेका ।
 पै सब होयँ विफल तहँ कैसे , भाग्यबिहीन-मनोरथ जैसे ॥
 बापू सुरपुर जाय सिधारा , जब तिन दारुन बचन उचारा ।
 सोक-प्रवाह अमित तब बाढ़ा , धीरज-तरु सकिहै किमि ठाढ़ा ॥

ढाहत नर-हिय-सरित-कगारा , जलमय करि सुख-खेत अपारा ।
 सहसनयन बरसहिं जलधारा , उमड़त सोक-जलद हिय भारा ॥
 तड़ित-धोस इव हाहाकारा , छायो सोक-रूप तम भारा ।
 अस्तु भरे चंचल चख कैसे , चपला-चमक मेघ महुँ जैसे ॥

जनसमूह समवेत तहुँ , धारयो दुरदिन - रूप ।

नैन-बास्प बारिद मनौ , पवन उसास-सरूप ॥६९॥

विपिन-मध्य जिमि प्रसरत दावा , दारुन-वृत्त चतुर्दिक धावा ।
 देसप्रमुख नेता अकुलाये , तड़ितवेग देहलि प्रति धाये ॥
 देस-पिता कर निधन निहारी , रोवहिं सिमु-सम पंडित भारी ।
 सोक-विकल जनता तहुँ सारी , देवत दुष्ट नाथु कहँ गारी ॥
 सत्य - अहिंसा - धरम - पुजारी , प्रेम - सरूप जगत-हितकारी ।
 सकल जगत जाकर परिवारा , अहह दुष्ट ! गांधी कत मारा ॥
 दीनबंधु हरिजन - कुल - पालक , दारिद-दुख-पातक-कुल-घालक ।
 राज विदेसि-साप जिन टारा , अहह दुष्ट ! गांधी कत मारा ॥

देसपिता कहँ मारि कै , देस कियो दुखलीन ।

कुलकलंक खल नाथु तुव , जीवन जग गुनहीन ॥७०॥

सोक-विकल नहरू मितबैना , बास्प - सरित - परिप्लावित-नैना ।
 सोक - उदधि - मज्जितहियवारा , स्रद्धा-मृदु तिन वचन उचारा ॥
 जीवन - दीप भयो निरवाना , भारत सोक-समुद्र समाना ।
 देसपिता सुरपुर किय गौना , भारत भयउ सोक कर भौना ॥
 अब अस उचित करै कृत ऐसे , जीवत बापु किये सुभ जैसे ।
 सत्य-अहिंसा सन करि प्रेमा , देस-उधार-करम करि नेमा ॥
 अनुसरि गांधि-चरन-जलजाता , भारत-मनुज-मात्र गनि आता ।
 सब सन करै प्रेम-बिबहारा , बैर-विरोध-भाव तजि सारा ॥

बापू कर जीवन जदपि , भयो धरनि पै अन्त ।

अमर तासु जस-आतमा , जीवहि काल अनन्त ॥७१॥

बापू जदपि अमर पुरवासी , होय हमार पंथ-परकासी ।

भारत-हित तिन लीन सुराजू , उचित करन पूरन सुभ काजू ॥

कहत पटेल सोक तजि भाई , चलहु गांधि-सासन चित लाई ।

*अबुल प्रसाद राजगोपाला , सरधाजुत उदगार निकाला ॥

देसभगति - धुरधारन - सीला , चलत त्याग-पथ परमकटीला ।

बापु समान न होवहि दूजा , करत सकल जासू जग पूजा ॥

सत्य-अहिंसा - सुभ्रत - धारी , बिनु कारन मानव-हितकारी ।

चरन-चिह्न अनुसरि सुभ तासू , लहहु मीत हिय परमहुलासू ॥

सरधांजलि प्रेसित करी , देस - बिदेस - अधीस ।

गांधि सुजस गावहिं सबै , उत्तम - मद्धम - खीस ॥७२॥

मनुजमात्र - संततहितकारी , गांधी सत्यमहाव्रतधारी ।

विस्वसांति कर अटल उपासक , जगत-पूज्य कह आंगल-सासक ॥

†रास्ट्र-अधिप अमरीका केरा , द्रुमन नाम सरधा सन प्रेरा ।

भाखत गांधि मनुज-तनु-धारी , मानहु विस्व-प्रेम सुखकारी ॥

देसदेसान्तर नेता जेते , करहिं गांधि-गुन-गायन तेते ।

कहत एक करुना-अवतारा , गौतम बहुरि मनुज-तनु धारा ॥

भाखत अवर प्रेमवपुधारी , प्रकटे पुनि ईसा अघहारी ।

तीजा कहत कृस्न भगवाना , गीतामृत पुनि आय पिलाना ॥

* भौ० अबुलकलाम, बाबू राजेन्द्र प्रसाद तथा चक्रवर्ती राज-गोपालाचार्य ।

† हेनरी द्रुमन—अमरीकन जनतन्त्र-संघ के प्रधान ।

महापुरुष जस गाय कै , पावहिं मोद सुजान ।

मद-मत्सर-अभिमान-जुत , समुझहिं निज अपमान ॥७३॥
 स्वारथ-रत मद-मोह-परीता , ईर्ष्याजुत उदारमतिरीता ।
 संप्रदाय - बिस - दूसितनैना , जीना कहत डाह-कटु बैना ॥
 गांधि रख्यो हिन्दुन कर नेता , समर-सुराज-प्रमुख - अभिनेता ।
 तासु निधन होवहि अतिकारी , हिन्दुन-हित निसचय अतिभारी ॥
 गुनगाहक मानव नहिं जोऊ , दोस-निरीछन-उत्सुक सोऊ ।
 करि गुनवान-निरादर मूढ़ा , दरसत निज अधमाइ-निगूढ़ा ॥
 नाहिन होत सुजन कर हानी , गुन सन सकल करत बस प्रानी ।
 दिवस-काल नहिं पेचक पेखे , देवहि दोस कवन रवि-लेखे ॥

बेतस नहिं फूलै फलै , बरसहिं अमिय पयोद ।

खलजनमन सुधरै नहीं , साजन - बचन - विनोद ॥७४॥
 सुन्दर स्यंदन सुविधि सँवारा , तिस पै खादि-खचित तनु धारा ।
 सादर सुमनहार छितराये , मानहु भूखन विविध सजाये ॥
 संग चलत सैनिक-गन बाजा , साजे सकल अनूपम साजा ।
 नेता सकल देस कर साथी , चलहिं कहत गांधीगुनगाथा ॥
 लखहु जलूस मोटर-गज-बाजी , मानहु नृप चतुरंगिनि साजी ।
 विजय-बधू-ब्याहन-हित जाई , मनमोहन बारात सजाई ॥

+ 'नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम् ।' (भट्टहरिः)

गर न बीनद बरोज शबपरी चश्म चश्मे आफताब रा चि गुनाह ।'

(गुलिस्ताँ—शेख सादी)

यदि चमगादड़ की आँख दिन के समय नहीं देख सकती, तो इसमें सूर्य की आँख का क्या दोष ।

'सूर्यालोकं यदि न सहते वाग्गुदः दृष्टिदोषात् ।

तत्राक्षेपः त्रिभुवनगुरोः न्यस्यते केन भानोः । (वि० ध० म०)

भवनपीठ बैठे नरनारी , बरसहिं सुमन मनहु असुरारी ।
ता द्विन सोक-मगन नरलोका , मानहिं मोद अमित त्रिदिवोका ॥

गांधि भयो वररूप तहँ , मीचु मनोहर नारि ।

परिनै-हित ता के चल्थो , विमल-चरित वृजिनारि ॥७५॥
राजघाट जमुनातट जाई , विधिबत सुन्दर सेज सजाई ।
अगर - तगर - चंदन - बहुभारा , जोरि तहाँ पावन तनु धारा ॥
बदन मनोहर मोहन केरा , अन्तिम बार प्रजाजन हेरा ।
आगे बढ़ि सरधांजलि दीनी , धन्य धन्य सुमधुर धुनि कीनी ॥
तदनन्तर करि मंत्रउचारा , विप्रन पूत हुतास पजारा ।
पावकदेव ज्वालतनुधारी , भौतिक-देह भसम करि डारी ॥
अमर जीवहित स्यंदन साजा , मोहन कीन अमरपुर-राजा ।
होय धरनितल हाहाकारा , अमरपुरी महँ जै-जैकारा ॥

*वाम-अयन पुनि धवलपख , पावन संध्याकाल ।

दिव्य-ज्योति-रथ पै चल्थो , सुरपुर दीनदयाल ॥७६॥
मांटबटन प्रतिनिधि नृप केरा , राजन सुभ कांग्रसपति हेरा ।
नह प्रमुखसचिवपदधारी , अबुलकलाम अमित गुनधारी ॥
का जपटु सरदार पटेला , समरचतुर बलदेव सहेला ।
अवर सचिव तिन सँग तहँ बैठे , भारत-हित चिंतन-सर पैठे ॥
चक्रवरति तब राजगुपाला , बिस्वविदित नयग्यान बिसाला ।
प्रेमसहित तिन कहँ समुभावा , गांधि-निदेसतत्त्व बतरावा ॥
कह्यो सकल तजि सोकबिचारू , तुरत सँभारहु करतबभारू ।
महापुरुष नहिं सोचनजोगू , करतबनिरत सतत तजि भोगू ॥

बेदरहित भूसुर बुरो , नरपति नीति-बिहीन ।

भोग-निरत जोगी तथा , गृही त्याग-पथ-लीन ॥७७॥

सोचिय पंडित चरित-बिहीना , तजि निजबोध बिसयरसलीना ।

सोचनीय गुरु ग्यानबिहीना , चाहत सिस्स-बिभव सब छीना ॥

सोचनीय बटु स्वारथ-लीना , गुरु प्रति सेवा-भाव-बिहीना ।

सोचिय धनिक कृपन गुनहीना , पर-उपकारभाव बिनु दीना ॥

सोचिय सैनिक वीरज-हीना , कादर समरपलायनलीना ।

प्रमदा सोचिय पति-व्यतिकारी , भरता प्रेम-रहित बिभिचारी ॥

सोचिय सुत पितुबचन न मानै , जनक तथैव न सुतहित जानै ।

सोचनीय संतत महतारी , करत सुता नहिं सिच्छित नारी ॥

जनसेवक सोचिय छली , स्वारथरत मतिपोच ।

निजस्वारथ साधत सदा , तजि जनता-हित-सोच ॥७८॥

सत्यअहिंसापथ जिन सोधा , करतब करत लख्यो निजबोधा ।

करमजोग कर तच्च प्रकासा , कीन भगति कर चरम बिकासा ॥

ग्यानपंथगौरव दरसावा , सुभग समन्वय करि दिखरावा ।

गीतारूप चरित निज कीना , सेवाहित निज जीवन दीना ॥

सेवारत संतत सुखपावा , स्वारथभाव न मन महँ आवा ।

धरमधुरन्धर तप - अनुरागी , संजमसील बिकार-बिरागी ॥

सत्यसंध करुना - अवतारा , दीनदयाल बृजिन-रिपु भारा ।

सोचनजोग अहहि किमि बापू , धरम सदेह हरन-जन-तापू ॥

जदपि अमरपुर कीन अब , गाँधी पुनपयान ।

भारत-सिर तउ बरद कर , वाकर कबचसमान ॥

सत्य-अहिंसा कर पथ जोऊ , बापू कीन प्रदरसित सोऊ ।

मनक्रमबचन चलौ तिस ऊपर , छेमद पन्थ ~~अखरा~~ ~~अहिं~~ भूपर ॥

जा विधि होय देस-हित-साधन , अपनावहु समुचित अस साधन ।
 मुमलिम कर टारहु भय सारे , हरिजन-ताप हरहु अति भारे ॥
 सुधरै - सासक - जन - बिबहारा , करै बनिक जन सुद्ध बिहारा ।
 करै सकल भारत-हित काजू , होय सुखित जिमि लोक-समाजू ॥
 पावहिं उचित बसन-धन-धाना , जापन करहिं जियन सहमाना ।
 महिला-जन-उन्नति अति नीकी , उपचिति होय सिच्छासरनी की ॥

परमपूज्य नेता भयो , बापू मनुज महान ।

ताकर स्मारक पुन्र अस , करहु बन्धु निरमान ॥८०॥

धरमधुरन्धर धीर , सत्य - अहिंसा - प्रेम-रत ।

सततहरन - पर - पीर , करमवीर न्यायी परम ॥८१॥

सत्याग्रह - करतार , देसभगत - नेता - प्रमुख ।

द्वेसभाव - परिहार , सत्यप्रेम सन करतनित ॥८२॥

बिकट - दासता - पास , भारत कर मोचित कियो ।

हमहिं सदा तुव आस , जगमोहन गांधी अमर ॥८३॥

भारतजन कहँ जोउ , सुभ सुराजथाती दई ।

होय सुरच्छित सोउ , आसिस ऐसी दीजिये ॥८४॥

बापू पावन तोर , बिसलचरितकश्चिनुसरनो

सकल - जाति - सिस्मौर ! होय आस्ती बिस्व महँ ॥८५॥

अष्टम सोपान

सुमिरौं सुखसागर जगदीसा , दुखनासक मंगलगन - ईसा ।
 विघन-विनासक कुसलविधायक , अघहर प्रभु मंगलमुददायक ॥
 धरमपाल सरनागतरच्छक , कालरूप दानव-कुल-भच्छक ।
 पापउरगहित गरुडसमाना , विसमवृजिन-जुर-भेसज माना ॥
 दुस्टनिकंदन जनमनरंजन , खलमदगंजन भवभयभंजन ।
 मंगलमय प्रभु अखिल निरंजन , दीनदयाल सकल दुख-भंजन ॥
 त्रिविधताप-टारन अखिलेसा , वृजिन - वृत्र - मारन-त्रिदिवेसा ।
 कलिमलहरन दलन दुखब्राता , भूसुर - सुग्भि - संतजनत्राता ॥

देव-दनुज-मानव सबै , लहि अनुशासन जासु ।

सकल करै निजनिज करम , विनवौं रमा - विलासु ॥१॥

अघहर जासु सकलसुखमूला , कृपाप्रसाद पाय अनुकूला ।
 प्रतिभारूप विमल बर पाई , कविता करहिं मधुर कबिराई ॥
 गावहिं चरित महाजन केरा , पावन परम जोउ जग हेरा ।
 मरजादापुरुसोत्तम जोऊ , करम करै मानव-हित सोऊ ॥
 चरनचिह्न चलि मानव वा के , भेदहिं विसमकोट सठता के ।
 देयँ पछारि कुटिल अघब्राता , जिमि नाहर मृगजूय निपाता ॥
 बंदीकृत उत्तम गुन जेते , बंधनमुक्त करहिं द्रुत तेते ।
 सरधा कर पुनि देय अहारा , तिन कर करहिं पोस अतिभारा ॥

चरित महाजन कर अहैं , ज्योतिथंभ समतूल ।

ताके दिव्य-प्रकास पथ , लखैं मनुज सुखमूल ॥२॥

जीवन-ज्योति पाय सुखमूला , तरु इव तोय पाय अनुकूला ।
 उन्नत होय मनुज जग माहीं , या महँ रश्चक संसय नाहीं ॥
 तिमिर-तोम जस भानु-प्रकासा , द्विन महँ पावत अबसि बिनासा ।
 तिमि लहि सुजनचरितआलोका , दुर्गुननास मनुज गतसोका ॥
 जीवन-पथ चलि सरल सुचाला , पाय अमित सुख होय निहाला ।
 जग महँ लहि कीरति बहुमाना , इतरलोक पावत कलयाना ॥
 सुजनचरित जस रुचिर पियूखा , करत मधुर जीवन रस-रूखा ।
 सुजनचरित जस इन्दुप्रकासा , करत मनुज-हिय-कुमुद-विकासा ॥

सुजनचरितमानस-सलिल , क्रीडहिँ रसिकमराल ।

तजैँ दोस सैवालसम , गहिँ गुनमुक्ताजाल ॥३॥

सुजनचरित जस सागर भारा , मानवमति किमि पावहि पारा ।
 गुरुप्रसाद-बोहित सुभ पाई , मनुज सुखेन वाहि तरि जाई ।
 जो गुरु होयँ आपु कनधारा , गोपदसम होवत अकुपारा ।
 गुरुप्रसाद कछु सनमति पाई , सुजनचरितमहिमा - सुधराई ॥
 अवगत करि लहि अमित हुलास , मानस-मुद अरु चित्त-विकास ।
 सुजनचरित कछु कीन बखाना , गांधी सुजन-सिरोमनि जाना ॥
 गुन-गौरव ता कर कछु गाई , मानस मोर न मोद अघाई ।
 सुजनचरित खलु मंगल-मूला , हरत सकल मानवहियसूला ॥

सुजनचरित - संजीवनी , पापगरल करि नास ।

मोह - मूरब्बा टारि कै , देवत सुमति - बिकास ॥४॥

सत्यसंध गांधी गुन गाये , सत्यप्रेम मानस थिति पाये ।
 पुनि बिचारि अहिंसाभावा , बिस्व-प्रेम मन माहिं समावा ॥
 ब्रह्मचरज-निसठा पुनि देखी , संजमप्रति रति होय विसेखी ।
 लखि पुनि व्रत अपरिग्रह केरा , चकित-चित्त जग वा प्रति हेरा ॥

स्तेयरहित पुनि निरखि सुभाऊ , सरधा महाँ त्रुटि रहत न काऊ ।
 बहुरि बिलोकि सौचकर भावा , जा सन सुभ संतोस सुहावा ॥
 पावन तप निगमागम-पाठा , आतम-उन्नति कर सुभ ठाठा ।
 ईसभजन महाँ रुचि दिनदूनी , होय सहज पातकगति ऊनी ॥

गांधीगुनमकरंद सुभ , सुजनभ्रमर करि पान ।

नवजीवन लहि वाहि सों , छेरहिं प्रेमसुतान ॥५॥

जग महाँ प्रेम अहहि सुखसारा , मानव - जीवन - मूलअधारा ।
 सत्य-अहिंसादिक गुन जोऊ , तासु सहाय बिदित जग सोऊ ॥
 जिमि ग्रहनखत रहहिं रवि घेरे , सदगुन बसहिं प्रेम कर नेरे ।
 गांधिचरित कर अस उपदेसू , माननीय जिमि निगमनिदेसू ॥
 गांधि-चरित बरनन हौं कीना , पावन परम मधुर-रस-भीना ।
 घटना तासु कलुक सुखदाई , मेलि परस्पर सुबिधि सजाई ॥
 रतनमाल इक सुधर बनाई , रसिकजननग्रीवा पहिराई ।
 राखहिं मान सोउ अब मोरा , करि प्रमान इक तुच्छ निहोरा ॥

ईस-कृपा सों पाय कै , कलु सनमति-लवलेस ।

साररूप संग्रह करौं , गांधि - चरित - उपदेस ॥६॥

जगपति कर गुन-करम-सुभाऊ , पावन पुनि प्रभु नाम-प्रभाऊ ।
 विस्वविदित निगमागमसारा , ब्रह्म सत्य अरु जगत असारा ॥
 भगत-हेत पुनि प्रभु-अवतारा , धरम-मरम सुभ सुति-निरधारा ।
 जमनिजमादि मनुज सुखसाधन , आस्रम-बरन-धरम-व्यति-बाधन ॥
 गजसमाज - धरम - धन - नीती , स्वारथरहित परस्पर प्रीती ।
 सिच्छा - सरनिसुधार - प्रसारा , भाखा - भाव - भेख-रुचिवारा ॥
 हरिजन-जन कर बलेस-निवारन , रामराज्यथापन दुखटारन ।
 गांधीकृत अस बिबिध बिचारा , राखौं मेलि अमित सुखसारा ॥

गांधिचरित सुभसुरभिसम , पय इव तासु विचार ।

दोहन करि ता कर सुखद , लहैं सुमति स्तुति तार ॥७॥

एक दिवस देहलि-समवेता , सकल प्रमुख कांग्रेस कर नेता ।

गात्रहिं रुचिर गांधि-गुनगाथा , सरधा - भगति - प्रेमनतमाथा ॥

कलिजुग धरममेड़ किन बाँधी , मोहनदास करमचंद गांधी ।

कलिजुग कवन धरमअवतारा , धरम राखि कीनो अघ द्वारा ॥

पतित-उधार आस किन बाँधी , मोहनदास करमचंद गांधी ।

विस्व-प्रेम कर अटल उपासक , बैर-विरोध द्वेस - विसनासक ॥

प्रेमरसरि सब छिति किन बाँधी , मोहनदास करमचंद गांधी ।

सत्य - अहिंसा - धरम - पुजारी , करमवीर गांधी अघहारी ॥

सत्याग्रह सुभ अस्त्र कर , करि कै कुमल प्रयोग ।

निषट निबलमनुजन कियो, सबल - निपातन - जोग ॥८॥

समरसुराज - नेता - पदधारी , तन मन सों जनता-हितकारी ।

ब्रिटिसराज-गौरव जिन छीना , मोहनदास नीति-परवीना ॥

हरिजनजनसुधार - अभिलासी , प्रेमसुधा-सुभसलिल - विलासी ।

गौरवमय पद तिन कहैं दीना , करि कै मोहन प्रेम-नवीना ॥

महिलाजन गौरव अधिकार्ई , जनता कर अति कीन भलाई ।

नूतन सिच्छा-सरनि बनाई , छात्रजनन कर हरि कठिनाई ॥

रामभगत निसठाजुत पूरा , मन महँ धारि अभयव्रत रूरा ।

प्रबल सत्रु सन एकल जूझा , मोहन-सम जोधा नहिं बूझा ॥

सत्य मनहु नररूप-धर , धरमनीति - अवतार ।

गांधि भयो कलिकाल महँ , हरन धरा को भार ॥९॥

कलिजुग कलहकाल बिकराला , घर घर दहत द्वेस-द्व-ज्वाला ।

स्रनु जनक-जननी सन खीझै , सेवा तजि बनिता पै रीझै ॥

भ्राता-भगिनि-जनक अरु ताता , लरहिं परस्पर दुहिता-माता ।
 प्रमदा पतिव्रतधरम बिसारी , पतिदैवत कहँ देवत गारी ॥
 पुत्रबधू तजि कुल - मरजादा , कहत ससुर कहँ धिग मनुजादा ।
 कहत सासु कहँ अहहु चुड़ैला , चलहु सदा कुलटा कर गैला ॥
 बेस्या कहत ताहि पुनि सासू , करकस गिर कहि लहत हुलासू ।
 घर-घर कलहदृश्य अस दीसैं , लखिलखितिनहिंसुजनरदपीसैं ॥
 प्रेमभाव कर सृंखला , अस विधि टूटी आय ।

घर-घर सभा-समाज महँ , कलह-दृश्य दिखराय ॥१०॥
 *चलहु मेल करि अस सु ति-वानी , कस्ट हरन संतत सुखदानी ।
 'कथन करहु मिलि' मंत्र अनूपा , करत निबल-जन सुभट-सरूपा ॥
 'करहु चित्त सम' अस कहि वेदा , करत प्रदरसिन संगठन-भेदा ।
 कलि महँ करि सु ति-वचनविरोधा , मूढ़ जगावहिं आपुन बोधा ॥
 करहिं नीच आपुन मनमानी , आपुन कहँ सुरगुरुसम जानी ।
 मनु मुनीस अस मत निरधारा , वरु बुध एक न सहस गँवारा ॥
 कलि महँ नर गनना-बल-मानी , नेता-रहित करहिं मनमानी ।
 † सु तिस्मृतिवाकसुमतिजनवानी , करहिं न कान वोट-अभिमानी ॥

निज दल अलप वनाय कै , नेता स्वारथ - लीन ।

भेदभाव उपजाय कै , करैं जाति-बल छीन ॥११॥
 कलि महँ निपट नीति-प्रतिकूला , करहिं सबल निज मन-अनुकूला ।
 स्वारथ-जुत तजि धरम-बिचारा , निबलन पै करि अनरथ भारा ।
 इत - उत द्वेसभाव उपजावै , करत अनय नहिं कबहुँ लजावै ।
 सबल देस धनसंपति पाई , पासव-बल निज अधिक बढ़ाई ॥

* 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥' (वेद)

† वोट—Vote, मताधिकार ।

चाहत निबलन धन हथियावा , स्वारथ लहि लोभी मुद पावा ।
लोभ सदा उपजावत बैरा , बैर सों होय कवहुँ नहिं खैरा ॥
सबल करहिं निरबल धनहीना , क्रन्दन करहिं कस्ट लहि दीना ।
अवर सबलजन तासु सहाया , करहिं प्रकट करि कृत्रिम दाया ॥

अस स्वारथ सन उपजि कै , समर-ज्वाल बिकराल ।

धन-धरनी अरु नरन कर , करै विनास कराल ॥१२॥
रन-प्रभाव प्रसरहिं बहु रोगा , अनयबीज कर कटु फल-भोगा ।
रन सन नसहिं कला अरु धंधे , विकल मनुज धन-संकट-बंधे ॥
रन सन होय कृसी कर हानी , अन्न-अभाव लहैं दुख प्राणी ।
रन सन होय अमित जन-नासा , बहुरि असीमित बिभव-विनासा ॥
जन-धन-नास प्रगति कर आसा , छनिक पयद महँ विज्जु-बिलासा ।
प्रगति-नास ध्रुव संस्कृति-हासा , विनु संस्कृति नहिं मनुजविकास ॥
विनु विकास मानव गुन-हीना , निपट निरंकुस पसुसम चीना ।
‡द्वैवभाव निज सकल बिहाई , होवत दीनन कहँ दुखदाई ॥

धरमकरममरजाद सब , भई लोप कलिकाल ।

अधरम-कुकरम-अनय कर , उन्नति भई विसाल ॥१३॥
§बेद-विलास विप्रजन त्यागी , होवहिं कोकपठन - अनुरागी ।
जपतप - संजम - जोग - विरागा , छाँड़ि करहिं विसयन सन रागा ।
करहिं कुकृत धनसंचय लागी , कपट-कुसल नयधरम-विरागी ।
*ब्राह्मन सो जो ब्रह्म पछानै , बिप्ररूप अस बेद बखानै ॥

† गीता के १६ वें अध्याय में वर्णित दैवी संपत् अर्थात् अभय सत्वशुद्धि आदि उत्तम गुण ।

§ कोक—कामशास्त्र सम्बन्धी प्रसिद्ध ग्रन्थ कोकशास्त्र ।

* 'ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः'—

धरमाचरन करम निज मानै , स्वारथभाव न मन महँ आनै ।
 कलिमहँ तजि निगमागमग्याना , खोजहिं बिप्र धनिक जजमाना ॥
 तिन कर धरम-अरथ सब खोई , स्वारथ-सिद्धि करहिं निज सोई ।
 पुरखा जासु जगतगुरु - रूपा , लखियत सोउ परे अघकूपा ॥

जथाकथंचित सीखि कै , सुति-अच्छर दो-चार ।

बनिक-वृत्ति कहँ धारि कै , करै धरम - व्यापार ॥१४॥

द्वित्रिय धरम-रच्छा कहँ त्यागी , होवहिं विसयभोग-अनुरागी ।
 §द्वित्रिय सो जो द्यत सन राखै , महिमा अमित तासु सुति भाखै ॥
 द्वित्रिय जन सरनागतपाला , चाहत रनप्रांगन रिपु घाला ।
 विजयवधूपरिनयहित सोऊ , जम सों भय मानत नहिं कोऊ ॥
 कलि महँ द्वित्रिय कादर भारी , सुनि रननाम देयँ असि डारी ।
 गाल बजावहिं तजि सब ब्रीड़ा , खेलहिं द्यूत विसरि असि-क्रीड़ा ॥
 लखि कै निबल करहिं बहु रोसु , पेखि सबल कछु धरहिं न दोसु ।
 ससकहृदय नाहरसमरूपा , वीरवेस कादरजनभूपा ॥

द्वित्रियजन कलिकाल महँ , तजि निज धरम-विचार ।

तजि कै पालन दीन कर , करै अनय - आचार ॥१५॥

बनिक सोउ जानिय बड़भागी , देस-विभव-वरधन - अनुरागी ।
 करत अरथसंचय अति भारा , करि कै सतत शुद्धविबहारा ॥
 धन-संग्रह करि देवत दाना , पर-उपकार करत विधि नाना ।
 आपुन कहँ जनसेवक मानै , वित्त सकल जनता-धन जानै ॥
 दिवस-रैन निज आय बढ़ावै , पै नहिं लोभ-भाव मन आवै ।
 कलि महँ बनिक कृपन गुन-हीना , संतत धन-संचय महँ लीना ॥

§ 'चतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः' ।

(रघुवंश—कालिदास)

ईस-भजन-अर्चन सब त्यागी , होयँ अरथ - पूजा - अनुरागी ।
अनुचित-लाभ माहिं चित देवै , व्याज बटोरि मातु सन लेवै ॥

धरम-करम-मरजाद तजि , अनुचित करि व्यापार ।

आपुन सिर संग्रह करै , बिपुल वृजिन कर भार ॥१६॥

सेवा-धरम सूद्र कर रूरा , बेदपुरानबिहित फल - पूरा ।
जपतप सन दुज कहँ फल जोऊ , सूद्र लहत सेवा सन सोऊ ॥
बिप्र बढ़त करि ब्रह्म-बिचारा , छत्रिय पाय सुजस रन भारा ।
वैश्य करत उत्तम विवहारा , सूद्र बढ़त सेवाकृति-द्वारा ॥
कलि महँ सूद्र धरम निज त्यागी , होवहिं सतत कलह-अनुरागी ।
स्रम सन अलप-रासि धन पावै , द्यूतमद्य महँ सकल गँवावै ॥
करहिं स्वामि सन निच लराई , बेतन मम देवहु अधिकारि ।
नंतरु रोकि कारज तुव सारा , करिहँ अमित हानि-विवहारा ॥

सेवकजन अस तजि सकल , सेवा - धरम - बिचार ।

निपट निरंकुस होय कै , करहिं कुटिल विवहार ॥१७॥

वरन-धरम अस भे बिपरीता , आस्रमदल तिमि सुधरम-रीता ।
ब्रह्मचारि तजि स्त्रुति-अनुसीलन , करहिं धरमप्रति नयन-निमीलन ॥
जपतपसंजम-मारग त्यागी , होवहिं भोग-पन्थ-अनुरागी ।
तिमि गृहस्थ निज धरम बिसारी , होवहिं निपट निरंकुसचारी ।
सुभसंतति-हितकरम बिसारी , होयँ बिसय-लंपट बिभिचारी ॥
वानप्रस्थ तजि जपतपजागा , करहिं अरथ-संचय सन रागा ॥
आस्रम-धरम छँडि सन्यासी , होवहिं बिभव-संचय-अभ्यासी ।
ईस-भजन-स्त्रुति-धितन त्यागी , होवहिं मठ-थापन-अनुरागी ॥

कलिजुग महुँ असबिधि नसी , धरम - करम - मरजाद ।

*कुलरमनी कुलटा भई , पुरुस भये पिसिताद ॥१८॥
 त्यागि सती सीता कर रेखा , पतिव्रत-धरम रूप सुबिसेखा ।
 गनिकाजन - पदपद्धति पालैं , धरमबित्त अनमोलक घालैं ॥
 पति सन बोलहिं करकस बानी , पर-पुरुसन सन जनु मधुसानी ।
 गुननिधान निज कंत बिहाई , मोदहिं परनर अंग लगाई ॥
 भरता पुनि संजमगुनहीना , होवहिं परतियबंचनलीना ।
 तजि तिय रूपसील-समवेता , जावहिं खल परनारि-निकेता ॥
 दम्पतिजन तजि संजमभावा , करहिं प्रचंड रुद्ररिपुदावा ।
 ता महुँ होमहिं तनमन सारा , करहिं देह-इन्द्रिय सब छारा ॥
 संतति निरबल पाय कै , दहैं सदा दुखदाव ।

संपति सकल नसायैं निज , परि बैद्यन के दाव ॥१९॥
 परिमित आय अमित संताना , इच्छा-परिवर्धन करि नाना ।
 चहहिं अरथ-संचय बहु कीना , अतिसमसनकरिनिजतनुबीना ॥
 होवहिं रोग-बिबस बलहीना , परहिं कालमुख असमय दीना ।
 जा संतति-हित पाप कमावैं , निज तनमनधनधरम गवावैं ॥
 आवहि मरनकाल नहिं पासा , कहि कहि प्रेत जनावहि त्रासा ।
 तजि कै धरम सुमंगलमूला , मूरख रहत बिसयसुखभूला ॥
 पयघृत - साककन्द - फलफूला , सात्त्विक-असन बुद्धि-बलमूला ।
 तिन कहैं जड़मति सतत बिहाई , भखत मटन होटल महुँ जाई ॥
 कपिलापय तजि अमिय सम , मदिरा - सेवन - लीन ।
 सडरस भोजन छाँड़ि कै , खायैं अभागे मीन ॥२०॥

* पिसिताद—मांसाहारी ।

† रुद्ररिपु—कामदेव ।

‡ मटन—बकरी का मांस ।

‡तजिकै मधुर मृदुल पकवाना , खायँ केक बिसकुट अरु नाना ।
 §पीयुस-सम पायस परित्यागी , होवहिं आमलेट - अनुरागी ॥
 अस करि तामस निन्द्य अहारा , करहिं मलिन निज भावविहारा ।
 तजि कै निज देसी परिधाना , रूपविदेसि बनावहिं नाना ॥
 धोती-उपरन-पाग बिहाई , धारैं कोट-पैण्ट-नकटाई ।
 पूत सिखा-उपवीत बिहाई , चसमा चख धरि साजि कलाई ॥
 पग महँ डटि डासन कर जूता , चलहिं अकरि कलिकाल कपूता ।
 धरम-करम-मरजाद बिसारी , पहिरि विदेसि विविध रँग सारी ॥

जायँ बिपनि महँ तासु तिय , निज तन-बदन सिंगारि ।

प्रमदा-भूखन लाज तजि , ससिमुख फिरैं उधारि ॥२१॥
 दम्पति कर महँ कर गहि डोलैं , बानि बिलच्छन गिटमिट बोलैं ।
 मातपिता मज्जुल मृदुनामा , तजि कै सारथ ललित-ललामा ॥
 *सिसुन सिखावहिं मूरख बामा , पापा जनक अहहुँ तुव मामा ।
 नकली साहिब बनि अरु मेमा , पूरन करि फैसन कर नेमा ॥
 आपुन खल उपहास करावैं , तजि मरजाद न मूल लजावैं ।
 निज भासा कर करि अपमाना , पर-गिर गहि मूरख अनजाना ॥
 कामधेनु तजि छेरि दुहावैं , उभयलोक निज मूढ़ गँवावैं ।
 पावन तजि कै बैदिक भावा , चाहहिं पर-साहित अपनावा ॥

तजि गीता-बेदान्त अरु , उपनिसदन कर पाठ ।

उपन्यास मूरख पढ़ैं , निसदिन जामों आठ ॥२२॥

‡ नाना—नानखताई ।

§ आमलेट—अण्डों की भुर्जी ।

* पापा (papa)—पिता । मामा (mama)—माता ।

*तजि कै निज इतिहास-पुराना , कविकुलगुरुकृत ग्रन्थ महाना ।
 †मिल्टन-सेक्सपियर-अनुसीलन , करहिं मूढ़ करि नैन-निमीलन ॥
 परक्रिय गहि तासन कछु भावा , परसंस्कृतिहित धरि हिय चावा ।
 देवभूमि भारत कहँ त्यागी , होवहिं आंगल-द्विति अनुरागी ॥
 तजि निज बसन-भाव अरु भाखा , चाहत मूढ़ मान निज राखा ।
 सो जनु सोचि निंब कहँ दाखा , चाहत मधुर सुधारस चाखा ॥
 देसभगति सों मनुज बिहीना , होवहिं पर-अधीन अति दीना ।
 बिसठा-कृमि सम परम मलीना , जापहिं जग महँ जीवन दीना ॥
 पराधीन जा कर अहँ , भोजन - बसन - बिचार ।

मूढ़ नराधम जानिये , निपट धरा को भार ॥२३॥
 पराधीनजन सासक केरा , गुन तजि अवगुन गहि बिनु देरा ।
 करहिं अनृत-आलस सन-प्रीती , बिसरि सकल आरजजनरीती ॥
 करहिं सकल निजकाजबिहारा , सासकजनकर कृपा-अधारा ।
 स्वावलंब तजि होय अपंगा , बिघन निरखि करि साहस भंगा ॥
 धन-कृषि-वनिज हेत सब काजू , छाँड़ि सकल उन्नति कर साजू ।
 सासकमुख प्रति तकि दिनरैना , कृत्रिम लहहिं भोग-सुख-चैना ॥
 सासक पै संकट जब आवै , निज-हित-काज देस तजि धावै ।
 पर-अधीन जन निर-अवलंबा , सुमिरहिं निज ताता अरु अम्बा ॥

* कविकुलगुरु—कालिदास, रघुवंश आदि महाकाव्यों तथा शकुन्तला आदि प्रसिद्ध नाटकों का कर्त्ता ।

† मिल्टन—प्रसिद्ध अंगरेज कवि—पैराडाइज लॉस्ट नामक महाकाव्य का लेखक ।

शेक्सपियर—प्रसिद्ध अंगरेज नाटककार व कवि । हैमलेट, मैकबेथ आदि दुःखान्त व मर्चेंट आफ वैनिस आदि सुखान्त नाटकों का कर्त्ता ।

अरथ-कृच्छ्र अनुभव करैँ , अन्न-वसन कर हानि ।

पर-अधीन जन नित सहैँ , परमुख - ताकन - ग्लानि ॥२४॥

भारत-गौरव बेद - पुराना , बरनहिं विविध मधुर उपखाना ।

जनमभूमि सुरसन्तन केरी , धरमभूमि पावन अति हेरी ॥

करमभूमि आरजजन केरी , पुन्यभूमि ग्यानीजन केरी ।

जवन-चीन-आंगल-जन ग्यानी , ग्यान-स्रोत कहि बहु सनमानी ॥

विस्व-प्रथित भारत बसुधारा , बहत जहाँ दधिपायसधारा ।

देत जगत कहँ अन्न अपारा , बाँटत ग्यान-विभव सुखसारा ॥

कलि महँ धन-संपति सब नासी , लोप भई दधि-पायस-रासी ।

अन्न-अभाव-कस्ट अति भारा , ग्यान-हेत कर सतत पसारा ॥

* जगतगुरु भारत रह्यो , देय धरम - उपदेस ।

तासु तनय संस्कृत पढ़ैँ , सादर जाय विदेस ॥२५॥

देखहु दारुन दैव-कलेसा , भारतसुत अब जाय विदेसा ।

निगमागम - इतिहास - पुराना , पढ़हिं विदेसिन-सिन्धु-समाना ॥

बहत क्षीर जहँ सरितसमाना , तहँ अब तक्रहु दुर्लभ जाना ।

अन्न-भंडार जासु भरपूरा , ता सुत असन न पावहिं पूरा ॥

चक्रवरति जहँ भये नरेसा , सासन करत तहाँ मँडलेसा ।

सुभट भीम-अरजुन जहँ भारी , कादर तहँ छत्रियपदधारी ॥

भामासाह बनिक बहु-दानी , भयो देस गौरव-अभिमानी ।

तहँ स्वारथरत कृपन महाना , अरथक्रीट सम बनिया जाना ॥

दास भये हनुमंतसम , सेवाधरम - प्रवीन ।

कलिमहँ अब सोऊ भये , सेवाधरम - बिहीन ॥२६॥

* एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।

स्वं स्वं चरित्रं शिद्धेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ॥ (मनुस्मृति)

प्रजापाल रघुनाथसमाना , जनरंजक माधव भगवाना ।
 प्रजा-हेत करि सरवस-दाना , आपद महँ संतत मुद माना ॥
 कलिमहँ लखहु तासु संताना , जन-पीड़न निज करतव जाना ।
 पीयूषसम गनि भोगबिलासा , विससम गुनि परमारथ-आसा ॥
 होयँ विसयलंपट दिनराती , वृजिन-बंधु अरु धरम-अराती ।
 लाय लगान प्रजाजन-सोसन , करहिं कृपन इव निज तनपोसन ॥
 त्यागि प्रजाजन-न्याय-विधाना , करहिं विविध सडजंत्र महाना ।
 *लोक-वचन चरितारथ जाना , प्रजा होय खलु भूप समाना ॥

अस विधि कलियुग महँ नसे , धरम नीति विचहार ।

फैले पुनि विसवेलि सम , कुमति-अनय-विभचार ॥२८॥
 भारत-दीनदसा तव पेखी , उपजी हरि-हिय दया विसेखी ।
 करन हेतु ता कर उपचारा , जगतपिता उर निसचै धारा ॥
 बरन-धरम अरु नीति-विहारा , आरजजन-समुचित-विचहारा ।
 ता कर थापन महँ चित दीना , धरम-उधार-मनोरथ कीना ॥
 मोहन तव मोहन-तनु धारा , हरनहेतु भारत-दुख-भारा ।
 कलिकृत विसम धरम कर हानी , टारन सुभ इच्छा मन आनी ॥
 धरमपाल निज विरद सँभारा , चाहत ईस धरम-धुरधारा ।
 नासन-हित वृजिनासुर भारा , मधुसूदन मानव-तनु धारा ॥

सतजुग प्रभु वामन भये , त्रेता महँ पुनि राम ।

द्वापर महँ माधौ भये , कलि मोहन सुभनाम ॥२८॥
 वामन प्रभु बलिकर हरि माना , कीन सुथिर देवन-सनमाना ।
 लंकापति-वध करि रघुनाथा , कीन समुन्नत रघुकुलमाथा ॥

केसव करि कौरव-कुल-नासा , धरमभानु कर तेज प्रकासा ।
गांधी तिमि करि गौर अधीना , गौरव-पद भारत कहँ दीना ॥
राजन अस गांधी-गुनगाथा , सादर कहि नायो निज माथा ।
मोहन - भगत जवाहिरलाला , कहे बचन जनु मानिकमाला ॥
बापू - संग रहे बहुकाला , पेखत तासु चरित्र निराला ।
गौरव तदपि तासु नहिं जाना , चकित रहे लखि चरित महाना ॥

महाजनन कर होत है , देवनसम अनुभाव ।

छुद्र मनुज जानै कहा , तासु अलौकिक भाव ॥२९॥
जिमि नभजोत भानु-परकासा , अनुभव-हित विरथा करि आसा ।
होवत अंत निरास महाना , तिमि प्राकृतजन-उद्यम जाना ॥
फल जिमि मधुर उच्चतरुसाखा , लग्यो चहत बामननर चाखा ।
सफल होत नहिं तासु प्रयासा , अनुभव करत निदान निरासा ॥
तिमि प्राकृत-जनमन-अभिलाखा , सुजनचरितपीयुस चह चाखा ।
विनु पर जिमि खग उड़न-प्रयासा , विफलहोयतिमि तिनकरआसा ॥
गांधी-जस जस उदधि अपारा , मम मन पथिक निरास्रय भारा ।
तुव प्रसाद बोहित जदि पावै , सागर पार समुद करि जावै ॥

गांधिभाव-सागर अहै , अति गभीर गतथाह ।

मरजीवा तो सम कुसल , करै रतन-चय-चाह ॥३०॥
सुभ-विचार-रतन कर माला , सुन्दर सुभग अनूप विसाला ।
सुजनन - हियमंडन मनभावा , जौहरि बिरचि परम मुद पावा ॥
तासों रतन-सेस कछु मोही , देहु कृपा करि विनवौं तोही ।
गांधिभगत सरदार पटेला , कीन समरथन तासु सहेला ॥
पुनि अजाद अनुमोदन कीना , गांधि-विचार-मथन-रस-भीना ।
राजन करहु मोर हित लागी , मम मन गांधिचरन-अनुरागी ॥

तासु बिनय सुनि राजन बाबू , राखि सकै नहिं निज मन काबू ।
सुमिरि गाँधि गुनकरम सुभाऊ , पावन सुर-समान परभाऊ ॥

बिस्व-प्रेम सुभ भावना , सत्यअहिंसा - प्रेम ।

सठजन प्रति नित साधुता , अटल दया कर नेम ॥३१॥
आपुन प्रति पुनि प्रेम अपारा , सोक-प्रवाह न सकहिं सँभारा ।
देह पुलक भरि लोचन वारी , रुँधत कण्ठ अस वाक उचारी ॥
मीत भये तुम सुरपुरवासी , भूतल तजि निजजस अविनासी ।
मम हिय दहत बिरह-दुखदावा , रैन चैन नहिं दिन सुख पावा ॥
सुमिरि तुमार अमित उपकारा , उमड़त मम हिय सोक अपारा ।
मन महँ पुनि गुनि तव उपदेसू , धीरजराखन - हेत निदेसू ॥
निज मानस कहँ ढाढ़स देई , धीरज-धरम सुखद सुभ सेई ।
राखन-हित तुव भगतन-माना , चहहुँ कलुक तुव भाव बखाना ॥

मो कहँ आसिस देउ अस , गूढ़ तोर सिद्धान्त ।

समुझि परै मो कहँ जथा , कहौं तथा अभ्रान्त ॥३२॥
पुनि निज बंधुन कहँ तिन भाखा , गांधि - बिचारसोमरस चाखा ।
जो तुम चहहु देय अवधाना , सुनहु गांधिमत मंगलखाना ॥
प्रथम कहौं जगदीस सरूपा , अज अबिकारि परम सivrूपा ।
सतचित्तआनँदरूप सुहावा , जासु सुजस सुति संतत गावा ॥
सिरजत धारत नासत स्वामी , बिस्व-प्रपञ्च प्रभु अन्तरजामी ।
सत्य सनातन बल-बुधि-धामा , अलख निरंजन हरि सुखधामा ॥
धरम राखि अधरम सब घालै , संकट महँ सरनागत पालै ।
बिप्रधेनु - सुरसन्त - सहाई , सतत भगतसंकर जगराई ॥

सिरजन - धारन - नासकर , अमितरूप जगभूष ।

हिम तुसार बरखा-उपल , नीर एक बहुरूप ॥३३॥

कुंडल - कंकन - नूपुररूपा , भूसन वनहिं अनेक अनूपा ।
 मूल-अधार हेम तिन केरा , तिमि बहुरूप ईस जग हेरा ॥
 धवलरूप दिनकर - आलोका , भाजनभेद बिबिध अबलोका ।
 जगपति तिमि गतसकलबिकारा , मायासबल रूप बहु धारा ॥
 नाम बिबिध जगदीस्वर एका , गुन लखि करहिं मनीसि बिवेका ।
 इन्द्र बरुन जम रुद्र गनेसा , व्यापक ब्रह्म रमेस महेसा ॥
 रामकृसन केसव जगदीसा , अहुरमजद खालिक बुध ईसा ।
 माधव मधुसूदन असुरारी , हसीकेस अच्युत त्रिपुरारी ॥

जदपि नाम वा कर सकल , अभिमतप्रद अभिराम ।

मोहन कहँ भावै परम , रुचिर नाम स्त्रीराम ॥३४॥

*कहत रकार धरमरति होवै , कदत अकार कुमति सब खोवै ।
 उचरि मकार लहै नर आसा , राम कहे ध्रुव पातकनासा ॥
 धरमअरथ कामरु अपवरगा , जियत लोकसुख मरि सुभ सुरगा ।
 देवत रामनाम सुखदाई , निगम-पुरान कहहिं मुनिराई ॥
 रामनाम संजीवन चारू , टारत पापगरल अति मारू ।
 रामनाम सुरसरि-पय रूरा , पातक-पंक पखारत पूरा ॥
 रामनाम पीयूषसम जानौ , भवरुज कर परमौसध मानौ ।
 रामनाम सुभ मंत्र प्रभाऊ , कलि-अहिगरल टरत सबकाऊ ॥

रामनाम महिमा अमित , जानै बिरला कोय ।

जा कर पुनप्रताप सों , राम कृपाजुत होय ॥३५॥

निरगुन प्रभु कहि नेति बखाना , बेदव्यास-सुति-संत-पुराना ।
 मन बानी सन जाय न जाना , सूखम परम अलख तत माना ॥

* राम = र + अ + म; र = रमण, रति, प्रेमभक्ति । अ = नकारात्मक । म = लक्ष्मी, कल्याण, सफलता, सिद्धि ।

सोउ सगुनतनधारनरागी , होय जगतपति जन हित-लागी ।
 जव जव होय धरम कर हानी , बाढ़ै असुर अधम अभिमानी ॥
 पावहिं कस्ट सन्तसुरधेनू , गनहिं ताहि दुरजन पद-रेनू ।
 अस्ट-अचार प्रजाजन होवै , नय-विचार सासकजन खोवै ॥
 तव तव जनम लहत जगदीसा , धरम-सरनि थापन-हित ईसा ।
 सन्तसमाजरदनहित स्वामी , नासनहित दुरजन खलकामी ॥

धरमराज थापन करै , करि पातक - संहार ।

मानव-लीला सुभग करि , हरत धरा को भार ॥३६॥

राम धरममरजादासेतू , राम विबुध-भूसुर-कुलकेतू ।
 राम निसाचरधंस - कृसानू , राम अहहि पातकतम-भानू ॥
 निगमागम सब राम रचाये , नरहिा धरम-पन्थ निरमाये ।
 ग्यान-भगति अरु करम-सरूपा , जासों मनुज तरहिं भवकूषा ॥
 ग्यान सो जानहु तत्त्वविवेका , मिथ्या जग साँचो हरि एका ।
 भगति मनुज-आतमहितमाधन , भाव-अनन्य-ईस-आराधन ॥
 पापबन्ध - मोचनहित सोई , तीव्रनधार खडगसम होई ।
 तासु सहाय करम सुभ जानौ , सुखसंपतिसाधन जग मानौ ॥

ग्यान करम अरु भगति कर , सुभग समन्वय कीन ।

गीता महँ सीकृस्न प्रभु , सतत धरम-पथ-लीन ॥३७॥
 ग्यानी कहँ प्रभु गौरव दीना , तासु रूप आतमसम चीना ।
 पै अतिकठिन ग्यान-पथ माना , होय सुलभ नहिं निरगुन ग्याना ॥
 करम-पन्थ पुनि कठिन बखाना , ता महँ होवहिं संसय नाना ।
 इस्टकरम - जपहोमविधाना , जासों होय मनुज कलयाणा ॥
 तासु करन महँ कस्ट अपारा , होय अरथद्वय अतिसय भारा ।
 सरबसुलभ पथ भगतन केरा , जा महँ चलत मनुज प्रभुप्रेरा ।

ईससहाय पाय अति रूरा , आतमसुख पावत भरपूरा ।
भाव-अनन्य भगति अति ऊँची , टारत हरिजन-विपद समूची ॥

*जोगछेम - साधन करै , तासु आप जगदीस ।

सुभ विचार मन महँ धरै , टारै भाव खबीस ॥३८॥
करमभगति अरु ग्यान सुमेला , उत्तम अहहि उपाय अकेला ।
जग महँ मानव-उन्नति-हेतू , बिसम भवोदधि-तारन-सेतू ॥
तिन कर सुभ निसकरस अनूपा , गीता करम-जोग-सुभ-रूपा ।
बरनन कीन आपु भगवाना , भवरुजभेसज कृपानिधाना ॥
+करम माहिं अधिकार तुमारा , फल पै नहिं किंचित निरधारा ।
करम-विपाक-हेतु जनि होवै , अकरमनिरत समय मत खोवै ॥
अरजुन-मिस प्रभु कीन निदेसू , करमजोग - साधन - उपदेसू ।
मानव करम करै निसकामा , फलअभिलाससकलतजिवामा ॥

प्रभु-अरपित करि करम सब , तजि कै फल अभिलास ।

करमजोग साधन करै , आतमभाव - विकास ॥३९॥
मानस जासु बसै संतोसा , पाय कस्ट नहिं मानत रोसा ।
सुख-अभिलास करै नहिं कोऊ , बीतरागभय संतत जोऊ ॥
संपद-विपद एक सम जानै , हरख-बिसाद निकट नहिं आनै ।
संजमजुत नित करै बिहारा , माटी-कंचन गनि इकसारा ॥

* अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ (गीता)

योग = अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति ।

क्षेम = प्राप्त वस्तु की रक्षा ।

+ 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

मा कर्मफलहेतुर्भः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥ (गीता)

लाभ-अलाभ मान-अपमाना , जस-अपजस पुनि जानि समाना ।
 मीत-अराति गनत सम जोऊ , सुमनहार-अहि भेद न कोऊ ॥
 विप्र-धेनु-करि-कूकुर माहीं , भेद-दृष्टि जाकर कछु नाहीं ।
 ईसभगत संतत मुद मानै , पर-उपकार करम निज जानै ॥

अभय-अहिंसा-दम-दया , सत्य-प्रेम-तप-दान ।

धीरज-बल-सुचिता-ब्रिमा , सांति-अलोभ-अमान ॥४०॥
 उत्तम गुन अम धारत जोऊ , करम-जोग-रत होवत सोऊ ।
 नर-सुधार-हित करम अनेका , निगमागम बरने सविवेका ॥
 ब्रह्मचरज - असतेय - अलोभा , सत्य-अहिंसा गुनगन सोभा ॥
 जम-गुन नाम तासु पहिचाना , निजम-समूह अवर पुनि जाना ॥
 तप-संतोस-सौच अतिपावन , भजन-पाठ अतिसै मनभावन ।
 जो नर चाहत निज कल्याणा , पर-उपकार करै सुभ नाना ॥
 स्वारथ छाँड़ि करत उपकारा , मानव पाय सुजस-फल भारा ।
 †पर-उपकार धरम कर सारा , परपीड़न पातक अतिभारा ॥

धरमसार बरनन कियो , भारत व्यास मुनीस ।

आतमसम पर जानिकै , छाँड़ौ करम - खबीस ॥४१॥
 कलि महँ लखिय धरमकृत भेदा , जासों उपजत कस्टरु खेदा ।
 मानव कहँ मानव रिपु बूझै , कूकुर सन जिमि कूकुर जूझै ॥
 हृदय राखि स्वारथ अरु डाहा , चहहिं करन परस्वारथ दाहा ।
 बैरविरोधअनल दुखमूला , जारत मनुजसमाज समूला ॥
 भारत जिन गारत करि डारा , खंडनदुख दीनो अति भारा ।
 तिन कर धरम मूल नहिं भाई , जानहु संप्रदायसमुदाई ॥

† 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।'

धरम अहै संतत सुखमूला , संप्रदाय साजनहियसूला ।

धरम-अधार प्रेम कर भावा , संप्रदाय स्वारथ उपजावा ॥

संप्रदाय - सिच्छा अहै , आपुनगैर - बिचार ।

धरम-सीख अस जानिये , सकल विस्व परिवार ॥४२॥

धरम मूल धरम सुभ बरना , इह परलोक-समुन्नतिकरना ।

दस लच्छन ता कर सुखदाई , विसद कहे मनुराज बताई ॥

धीरज - समदम - साँच - अक्रोपा , सौच - छिमा - अगयानबिलोपा ।

तस्करभावतजन सुखदाई , बुद्धि-विवेकसमुन्नति पाई ॥

सुति-स्मृति-सुजनअचारबिचारा , आतमहितकारज निरधारा ।

* धरम चतुरविध निरनै कीने , कारज सकल होयँ समिचीने ॥

निगमागम - इतिहास - पुराना , धरमतत्त्व अस कीन बखाना ।

ता कहँ भूलि मनुज अनजाना , भोगहिं निस दिन बिपद महाना ॥

जोउ धरम-रच्छा करै , निज करतव सुबिचार ।

धरम तासु रच्छा करै , दुरित सकल करि द्वार ॥४३॥

कहत जबाहिर पुनि मृदु बानी , सरधा - बिनयमधुरस - सानी ।

गाँधि-तत्त्वविद्या तुम जानी , राजन बाबु सकलगुनखानी ॥

धरमतत्त्व तुम विसद बखाना , इक रहस्य अब चाहहुँ जाना ।

बरनधरम - मरजादा जोऊ , वेदविहित जानत सब कोऊ ॥

धारणात् धर्मः

(निरुक्त)

§ मनुस्मृति में धर्म के लक्षणः—

‘धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यं क्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥

* ‘श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥’ (मनु०)

ता महँ दुज अरु सूद्र बिमेदा , उपजावहिँ संतत बहुखेदा ।
 करहि समाजदेसकर हानी , नहिँ रसना सन जाय बखानी ॥
 बापु भयो कलिजुग रिसितूला , जनताहितचितक सुखमूला ।
 परम पुरातन संस्था जोऊ , तिन किमि कीन प्रमानित सोऊ ॥
 प्रेमसहित राजन कह्यो , गाँधिप्रमानित जोय ।

बरनधरम पावन परम , बरनों तुव हित सोय ॥४४॥
 बरनास्रम करतव करि मानव , बस महँ करत प्रकृति निज दानव ।
 धरम-करम महँ लगन बढ़ावै , चरित सुधारि परम सुख । १ ॥
 सिरजनकाल ब्रह्म उपजाये , बरन चतुष्टय अति मन भाये ।
 तिन कर कीन पृथक विवहारा , सहज-धरम-गुनगन-अनुहारा ॥
 सौच-सरलता-सम-दम-ग्याना , दया - क्षिमा - ईश्वरप्रनिधाना ।
 सुतिअनुसीलन-जप-तप-दाना , विप्र-धर्म अस बिसद बखाना ॥
 धीरज - तेज - पराक्रमसीला , मरजादारच्छक नयसीला ।
 करमकुसल दानी अरु सासक , छत्रिय सहज होय अधनासक ॥

गोपालन-खेती - बनिज , सहज बैस्य कर कर्म ।

अवर-बरन-सेवा-करन , सहज सूद्र कर धर्म ॥४५॥
 द्विजसुत सहज पढ़त सुतिमंत्रा , छत्रियसुत साधत रनतंत्रा ।
 बनिक्पुत्र तिमि होय विपारी , सूद्रतनय सेवाव्रतधारी ॥
 निज निज सहजकरमअनुसारी , होवै मनुजवरन जब चारी ।
 तब समाज कर उन्नति रूरी , होवत बिस्वमुखी सुखभूरी ॥
 करम कोउ नहिँ जानिय मंदा , करताबस होवै सुभगंदा ।
 करमनिरत रविदास चमारा , भयो सुजसभाजन जग भारा ॥
 करमहीन बेनू नृप नीचू , लहि अपमान गही पुनि मीचू ।
 सहजधरम गुनहीनहु नीका , अवर धरम गुनजुत तउ फीका ॥

उत्तम मरन बखानिये , रहि निज धरम मँभार ।

अबर धरम भयजनक खलु , जदपि होय गुनसार ॥४६॥
आस्रम वेदबिहित पुनि चारी , गृही - तपी - दंडी - व्रतचारी ।
करम करहिं निज निज गुनकारी , होयँ समाज-हेत-हितकारी ॥
बरन अवर जिहि कहत अछूता , गांधीमत सो मानव पूता ।
हरिजन नाम वाहि सुखकारी , दीनो जनसमाजहितकारी ॥
सौच नाम उत्तम गुन एका , नरसमाजजीवन कर टेका ।
ता कहँ नर जोऊ अपनावै , सो किमि कहहु अछूत कहावै ॥
उत्तम बरन पाप बहु कीना , दलितन कहँ दारुन दुख दीना ॥
निजअपराध - निवारन कीजै , उचित स्वत्व हरिजन कहँ दीजै ॥

हरिजन अहहिं समाज-पग , तिन बिनु सोय अपंग ।

तासों तासु सुधार-हित , मानस धरौ उमंग ॥४७॥
अमृतकौर महिला गुनखानी , बोली सीलमृदुल तब बानी ।
कहहु कृपा करि बापु - बिचारा , नारिसुधारहेतु निरधारा ॥
जासों होय सबल गुनवारी , होवहिं देस - जातिहितकारी ।
राजन तब बानी अस भाखी , जन-उन्नति जननीकर राखी ।
महिला होयँ सुसिच्छित जोऊ , सिसुजन करत सुगुनजुत सोऊ ।
तासु सुधारि अचार-बिचारा , करहिं देस-हितकारज भारा ॥
सफल-गृहस्थ-रूप पुनि नारी , पति कर होय सहायक भारी ।
असन-बसन-व्ययचिंता टारी , गृह-कारज सब सुविधि सँवारी ॥

देसजाति-हित तासु हिय , उपजत प्रबल उमंग ।

सेवा-हित परिकर कसै , ह्वै कै निपट निसंग ॥४८॥
पतिव्रत-धरम - रतन बहुमूला , जासु धरोहर अति सुखमूला ।
तासु प्रभाव बिदित सुरदानव , हानि कहा करिहँ लघुमानव ॥

*जान दसानन सीय-प्रभाऊ , सत्यवान-तिय कर जमराऊ ।
 होय जहाँ महिला-अपमाना , सो थल रौरवनरकसमाना ॥
 †होय जहाँ महिलाजन-माना , सो थल सुखमय सुरगसमाना ।
 देसधरमप्रिय संजमसीला , परिजनहितमृदुगिरा सुसीला ॥
 वीरजनक - भरता - सुतवारी , होयँ जगतपूजित वरनारी ।
 नारि सुसिच्छित जाति-विभूसन , अनपढ़ फूहर देस-विदूसन ॥
 सीतासम महिला - रतन , होयँ सुघर जा देस ।
 सब विधि उन्नति होय तहँ , नासँ सकल कलेस ॥४९॥
 सबल अरोग सिद्धजन जोऊ , जीवन पाय वीर नर सोऊ ।
 देसधरमहितकर करि काजू , करहिं अलंकृत मनुज-समाजू ॥
 नारि सबल जननी तिन केरी , तासों देसभगत विनु देरी ।
 †मातृसदन थापित करि रूरे , सिच्छाहित साधन करि पूरे ॥
 जाति - सुधारकरम अपनावै , इह-परलोक सुजसफल पावै ।
 §जीजा देय सुघर उपदेसू , कीन तनय सिवराज नरेसू ॥
 संजय घर आयो रन हारी , धीरज-साहस-तेज बिसारी ।
 \$बिदुला तासु वीर महतारी , भेज्यो रन महँ पुनि फटकारी ॥

* सत्यवानतिय = सावित्री, जिसने अपने सतीत्व के प्रभाव से यमराज को परास्त किया ।

† 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । (मनुस्मृति)

‡ मातृमन्दिर अथवा Maternity Homes.

§ जीजा = शाहजी भोंसला की वीर पत्नी, शिवाजी की माता जीजाबाई ।

(उद्योग पर्व)

\$ बिदुला और उसके पुत्र संजय की कथा महाभारत में है ।

जाय विजय पाई तहाँ , लरि अराति के संग ।

बीरनारि-परभाव लखि , रहे सुभट सब दंग ॥५०॥
जगजीवन पुनि स्रमिकन नेता , बोल्यो बचन बिनय-समवेता ।
कलिजुग महँ धनिस्रमिक विभेदा , नरसमाज उपजावहिं खेदा ॥
बापुकथित कछु तासु उपावा , सुनन हेत मो मन अति चावा ।
राजन तब सुन्दर गिर बोली , देवहुँ भेद सकल द्रुत खोली ॥
धनिक-स्रमी कर अनुचित रारा , करत समाजअहित अति भारा ।
सहज उपाय तासु इक जाना , लाभ गहँ न धनिक मनमाना ॥
देयँ स्रमिन कहँ समुचित भागा , होय परस्पर सुभ अनुरागा ।
निज कहँ गनि समाज कर अंगा , करै समाजहितकाज अभंगा ॥

धनिक-स्रमीजन मेल करि , जेतो करहिं प्रयास ।

अन्न-अरथकर देस महँ , तेती होवहि आस ॥५१॥
कृषि-प्रधान भारत-स्रम माना , गौन प्रकार अवर स्रम जाना ।
तासों कृषि - सुधार सुखदाई , कोने होवहि देसभलाई ॥
करि निज खंडितखेतसुमेला , बरति विग्यानिक ढंग सहेला ।
उत्तम खाद डारि बसुधा महँ , अन्न अधिक उपजावहिं वा महँ ।
धेनु-वृसभकर जाति सुधारी , करै कृसक धन-संग्रह भारी ।
गोपालन सन दधिघृतखीरा , लहि कै होयँ बलिस्ट सरीरा ।
करिकै स्रम धनधान्य बढ़ावै , देसलाभहित हाथ बटावै ।
अन्न-कृच्छ्रदुख दूर हटावै , भारत महँ सुखसंपति लावै ॥

कृषि-प्रधान भारत मही , जीवत कृसक-अधार ।

तासु समुन्नतिमूल है , ग्रामोद्यान - सुधार ॥५२॥
करघा अरु चरखा सुखदाई , कृसकजनन कर चरम सहाई ।
कृसक रहँ सटमास निकाजू , तिन सन लहँ सकल सुखसाजू ॥

तिय-सिसु-जरठ कृसकपरिवारा , चरखा करि प्रयोग सुखसारा ।
 बसन स्वनिर्मित करै प्रयोगू , पुनि समाजहित बखसंजोगू ॥
 बसनबिदेसि गरलसम जानो , भारतहितघातक खलु मानौ ।
 तासु निवारन सहज उपाऊ , चरखा तुम दिन-रैन चलाऊ ॥
 चरखा अहहि परम सुखसारा , देस-प्रगति कर मूल-अधारा ।
 कृसकजनन कर आय बढ़ावै , बसन - बिदेसिप्रभाव घटावै ॥

अवर स्रमी-जन ग्राम महँ , तच्छक रजक लुहार ।

तिनकर पुनि विवसाय कर , जानहु उचित सुधार ॥५३॥
 भारतदेस - अधिकतरवासी , अहहिं बहुलतर ग्रामनिवासी ।
 राष्ट्र-अधार गाँव गनि तासों , करहु काज उन्नति लहि जासों ॥
 होवहिं सुखसमृद्धि सन पूरे , ग्रामीजनजीवन अति रूरे ।
 आयहेतु नगरन महँ जाई , प्राकृत धन निज अरुज गँवाई ॥
 तजि कै ऋजुसुभाव सुखसारा , होयँ कपटजुत पतित अचारा ।
 मदिरा-द्यूत-कलहरत दीना , रिनगहिकरहिंजियन सुखहीना ॥
 उन्नत करि कलु ग्रामिक-बंधे , राखहु तिनहिं गाँव सन बंधे ।
 पठन-प्रसार करहु तिन माहीं , जाते दुरगुन-दोस पराहीं ॥

कलह-द्यूत-मदपान तजि , रिन अरु पतित अचार ।

होयँ सुखी पुनि कलु करै , कारज देस-सुधार ॥५४॥
 अबुलकलाम जोरि जुग-पानी , बोल्यो गिर मंजुल सुखदानी ।
 कहहु मीत तुम बिसद बखानी , सिच्छामरनि गांधि-मनमानी ॥
 राजन तब मृदु वाक उचारी , गांधि-बिचार सैली सुखकारी ।
 सुल्करहित सिच्छा सब पावै , सुभ बिचार मन महँ उपजावै ॥
 बिमल करै आपुन बिबहारा , करै देसहित समुचित कारा ।
 सीखै धनसाधन कलु धंधा , असनबसन कर होय प्रबंधा ॥

देसगिरा माध्यम करि रूरा , बिद्यालाभ उठावहिं पूरा ।
होपसमयधनव्यय अति थोरा , ग्यान-लाभ पुनि होय न थोरा ॥

निज भासा आधार पै , लगै न सिच्छा भार ।

अलपकालसमवित्त सन , मिलै ग्यान सुखसार ॥५५॥
जाकर माध्यम बाग बिदेसी , सिच्छासरनि सो होय भदेसी ।
भरि भरि हृदय बिदेसि बिचारा , करत देस-हितनासन भारा ॥
जुवक छाँड़ि निज धरम-अचारा , गहहिं बिदेसिन भाव-बिचारा ।
रहन-सहन तिनकर अपनावै , निज मरजाद न चित्त लगावै ॥
देस-गिरा सन होय विरागा , तजि कै सकल देस-अनुरागा ।
गिटपिट करि होवहिं अभिमानी , अलपबुद्धि अति ग्यान-गुमानी ॥
वस्तु सुदेसिन सन करि बैरा , गनहिं जाति-बांधव निज गैरा ।
परम सुभग निज संस्कृति त्यागी , होयँ कुमति परकिय-अनुरागी ॥

तासों आपुन देस-गिर , सिच्छा-माध्यम धारि ।

करै जतन सुभ देसहित , देसभगत सुबिचारि ॥५६॥
पढ़ि कै निज साहित निज भासा , करि कै विमल विवेकविकासा ।
लहि कै ग्यान-प्रभाकर भासा , करि कै बुद्धिसरोजविकासा ॥
निज संस्कृति सन करि अनुरागा , धारि धरमहित निज हिय रागा ।
होवहिं देस - सभ्यता - प्रेमी , जुवक देस-सेवा-हितनेमी ॥
भारत महाँ भासा बहु पाई , कतिपय पथभूले मम भाई ।
कहहिं आंग्ल-भासा अपनावौ , ता महाँ निज बिचार पनपावौ ॥
या विधि भासाभेद मिटावौ , सुभ सुराज-पथ-उपल हटावौ ।
पै नहिं जानत अस जन भोरे , बानिबिदेसिग्रहनगुन थोरे ॥

बाग-बिदेसि ग्रहन सों , हानी होय अपार ।

धरम - संस्कृति - सभ्यता , तिहुँ कर होय संहार ॥५७॥

भासा प्रमुख भारत महुँ एका , बोली बोलहिं जदपि अनेका ।
 भिन्न-भिन्न प्रांतन के बासी , सिक्ख मराठा अरु बंगवासी ॥
 राजपूत मैथिल अरु उड़िया , गुजराती तामिल अरु मुड़िया ।
 भासा प्रमुख अहहि इक हिंदी , भासासकलभाल कर बिंदी ॥
 तासु अहहिं जुग लेखनसैली , फारसि अरु नागरि अलबेली ।
 ता मधि तजि कै रार बिसैली , आपुन सक्ति सकल अब मेली ॥
 करहु तास उन्नतिहित काजू , बाढ़ै जा विधि देससमाजू ।
 जब लौं होय न भासा एका , करहि देस किमि उन्नति टेका ॥

पढ़ि कै निज साहित्य अरु , निगमागम - इतिहास ।

धरम - संस्कृति - सभ्यता , तिहुँ कर होय बिकास ॥५८॥
 विद्या पढ़ि सिगरे नरनारी , होवहिं मानग्रहन अधिकारी ॥
 *मानव विद्याविग्रहित जोऊ , पुच्छबिसानहीन पसु सोऊ ॥
 विद्यावर सुन्दर नर पाई , करि कै कछु सुभकरमकमाई ।
 मनुज-समाज मान बहु पावै , पाय सुजस पुनि अमर कहावै ॥
 नागर निज करतव पहिचानी , निजअधिकारमरम सब जानी ।
 आपुन करि कै चरित-सुधारा , सुघर बनाय सकल परिवारा ॥
 करै देस उन्नतिहित काजू , जासों होय समृद्ध समाजू ।
 होय धरम-धन-संस्कृतिवाढ़ा , आवृभाव होवै अति गाढ़ा ॥

सिच्छासरनि सुधार सों , होय देसहितकाज ।

सुधरै नरनारी - चरित , फूलै - फलै समाज ॥५९॥
 भाखत पुनि सरदार पटेला , देसभगत गांधी-पटचेला ।
 पूज्य प्रसाद कइौ समुभाई , सासनरीति बापु - मनभाई ॥

* 'साहित्य-संगीत-कला-विहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविपाणहीनः ।'

धरम-अधार सासन कर काजू , करि किमि उन्नत होय समाजू ।
 राजनीति मारग अति टेढ़ा , तासु बिरोधि धरम कर मेढ़ा ॥
 तिनकर मेल साधि किमि गाँधी , धरमनीतिमरजादा बाँधी ।
 तब प्रसाद बोले मृदुबानी , धरमनीति अब कहौं बखानी ॥
 जा कहँ देसपिता अपनाई , ब्रिटिसराज सन कीन लराई ।
 सत्य-अहिंसापथ गहि रूरा , रिपु कर कीन पराभव पूरा ॥

भ्रांतिमूल अस धारना , धरम नीति प्रतिकूल ।

धरमनीति सुभ मेल सों , बढ़ै रास्टर सुखमूल ॥६०॥
 सत्यग्यान पुनि सत्यअचारा , व्रतधारन उन्नति तप द्वारा ।
 अनुभवग्यान करम उपकारा , रास्टरभवन मटथंभ अधारा ॥
 व्यक्ति अहै सासनगृहनींवा , ता बल थिर समाज सुखसींवा ।
 गठित समाज रास्टर-उतपादन , होय सुभग जनहित-संपादन ॥
 प्रजातंत्र सुभ सासन-सैली , व्यक्ति-सुधारमूल अलबेली ।
 व्यक्ति-संघ गनि मनुज-समाजा , कीजै सकल तासु हितकाजा ॥
 बढ़त समाज रास्टरबल बाढ़ै , उन्नतिपथ महँ निज सिर काढ़ै ।
 उन्नत रास्टर देसबलवृद्धि , होय सकल सुखसाधनसिद्धि ॥

मानव रास्टर-अधार गनि , तिस कर करत सुधार ।

धरममूल आचार अस , सासन धरम-अधार ॥६१॥
 धरममूल सासन जदि होवै , देसविपद संतत सब खोवै ।
 करत सदा सुखसाधनवृद्धि , होय जथा अभिमत फल-सिद्धि ॥
 देस पाय धन-बिभव अपारा , न्याय-उचित साधन-चय द्वारा ।
 निरबल देसन देय सहारा , करै सतत सुखसांतिपसारा ॥
 कुटिलनीति बलकपट-अधारा , सासन होय निपट गतसारा ।
 स्वारथरत लोभी नर जोऊ , करहिं देसहित काज न कोऊ ॥

बिनु स्वारथ तिनका नहिं तोड़ें , स्वारथ लागि पितु सन मुख मोड़ें ।
स्वारथ लागि साजें सब साजा , स्वारथ लागि करें सब काजा ॥

निज स्वारथ पूरन करें , तजि सब न्याय-विचार ।

परस्वारथकारज गनैं , संतत निपट असार ॥६२॥

तिन सों करन देसहित-आसा , होय जथा नभसुमन-विकासा ।
कारज करहिं सदा धन-आसा , चाहत भोगन विविध बिलासा ॥
कामकीट तजि धरम-विचारा , करत दिवसनिशि पतित बिहारा ।
बाढ़ै तिनकर अनय-अचारा , फैलत देस माहिं विभिचारा ॥
*सासकजन जस कारज करहीं , सोय प्रजाजन खलु अनुसरहीं ।
नासैं सकल धरममरजादा , होवहिं नर नृसंस मनुजादा ॥
परक्रिय तिय-संपति-वसुधारा , गहहिं दुष्टगतधरमविचारा ।
पसुबल कर करि गरव अपारा , देवहिं दीवजनन दुख भारा ॥

तनबिकार प्रकटें जथा , वन अथवा जुररूप ।

नय-बिकार प्रकटें तथा , भयकर क्रांतिसरूप ॥६३॥
बिसमरोभहित भेसज भारा , वैद कहैं करि गहन विचारा ।
सासनजुर कर जनहितचिन्तक , गनैं राजबिप्लव सुभ अन्तक ॥
जथा अगद सन देह अरोगा , पाय मनुज पावत सुखभोगा ।
क्रांति-अनंतर तिमि सब लोका , होय सुखी सब विधि गतसोका ।
नीतिमूल सासन पुनि थापी , प्रकट होत इक रास्त्र प्रतापी ।
नयबिहीन जिमि व्यक्ति बिसेसा , तजि कै धरम-विचार असेसा ॥
स्वारथरत परकाज बिगारैं , परधन अरु तिय पै कर डारैं ।
सबल रास्त्र तिमि धरम बिहाई , स्वारथनीति कुटिल अपनाई ॥

परधन-परधिति गहहिं खल , करि कै लोभ-प्रसार ।

अनुचित आपुन लाभ हित , करै अनीति अचार ॥६४॥

लोभ करत परभाव पसारा , सृजत बैर परभाव अपारा ।

बैरभाव संसय उपजावै , बैरभाव नर कुटिल बनावै ॥

अनुचितलाभरच्छनहित मानव , पसुत्रल निज बरधत जस दानव ।

करत दिवस-निसि सखसंभारा , सेनाहित व्यय करत अपारा ॥

असविधि सकल समरकर साधन , करि एकत्र करत आराधन ।

रास्त्र सबल रनदैवत केरा , तामहँ निज-हित मूढन हेरा ॥

लरहिं परस्पर जिमि गज माते , करि अपकार न चित्त अघाते ।

उरभि समर महँ धनजन नासैं , डारैं निज परगर जमफासैं ॥

धन-धरनी अरु प्राण कर , होय समर सन नास ।

धरम-सभ्यता - संस्कृति , तिहुँ कर रुकत विकास ॥६५॥

पसरत चहुँ दिसि कस्ट अपारा , करहिं दीनजन करुन पुकारा ।

अन्न-वसन कर होय अभावा , बढ़त रैन-दिन रोगप्रभावा ॥

दीन रुजारत त्राहि पुकारैं , वैद-सदन घृत-दीपक बारैं ।

लोभ-बिबस सासक बलधारी , होयँ प्रजाजन-धन-अपहारी ॥

बिगरे सासक दंडअभावा , बाढ़त निसदिन अनयप्रभावा ।

चोरचकार - छली - बटमारा , करहिं सहज परधन-अपहारा ॥

निसाकाल जिमि बन महँ स्वापद , करहिं उपद्रव होय निरापद ।

दंड बिना तिमि सासक कूरा , करहिं प्रजाजन-सोसन पूरा ॥

अनुसासन नीतिग्यजन , कहैं राज कर नींव ।

राज सबल नासै नसे , अनुसासन सुखसींव ॥६६॥

अनुसासन कर मूल-अधारा , होय सतत नयमूल-अचारा ।

होयँ प्रजा अरु सासक दोऊ , नीतिपरायन संतत जोऊ ॥

होय देस-सासन अति रूरा, देसहु सुखसमृद्धिभरपूरा ।
 प्रजातंत्रसासन सुखमूला, होय सदा जनमतअनुकूला ॥
 सासक अरु सासिन विय भाई, करहिं परस्पर प्रेम-सगाई ।
 नीतिधरम - अनुकूल बिहाग, करहिं सदा स्वारथ तजि सारा ॥
 होयँ प्रजा कर प्रतिनिधि सासक, सतत प्रजाहितभावउपासक ।
 करहिं प्रजाहितसाधनजोगू, चहहिं देससुखसंपत्तिभोगू ॥
 सासकगन अरु प्रकृतिजन, करै परस्पर मेल ।

देस-दुरित सिगरे टरै, यह सिद्धान्त अपेल ॥६७॥
 ग्राम ग्राम पंचायत थापै, पंचन कर सुभचरितहि मापै ॥
 धन कर नहिं कछु करै विचारा, देयँ तिन्हें समुचित अधिकारा ॥
 जा विधि करै कलहनिपटारा, नीति - विचार - धरमअनुसारा ।
 निज प्रतिनिधि चुनि ग्राम-समाजू, साजै जनपद-पंचन साजू ॥
 जनपद-पंच पुनि करै चुनावा, प्रांतसभा कर करै बनावा ।
 प्रांतसभा पुनि करि निरवाचन, करै देस-परिसदनिरमापन ॥
 देस-सभा पुनि चुनै प्रधाना, देसप्रमुख सासक सोउ जाना ।
 प्रांत-प्रमुख-सासक-निरधारन, तासु निरंकुसराजनिवारन ॥

देस-प्रमुख कर अहहि अस, न्यायोचित अधिकार ।

रास्त्र - सभाकरतव अहै, न्याय - विधान - सुधार ॥६८॥
 रास्त्र-सभा महँ प्रतिनिधि जोऊ, मुखिया एक चुनै निज सोऊ ।
 सोउ प्रधान-सचिव पद पावै, सचिव-सभा निज आपु सजावै ।
 सासन - करम सँभारत सोऊ, करत देस-हितकारज सोऊ ।
 भ्रान्त-प्रमुख तिमि प्रांतन भाहीं, सासनक्रम निज चारु चलाहीं ॥
 सकल देसहितकारज जोऊ, साधत देस-सासन सब कोऊ ।
 रेल-तार अरु डाकविभागा, बहिरनीति - रच्छानविभागा ॥

सकल देस - व्यापारविबर्धन , जंत्र-कलादिक कर संबर्धन ।

सकल देसहित-अरथउपार्जन , सिच्छा-सरनि-दोषपरिमार्जन ॥

अहहिं देस-सासन विसय , एते सकल विभाग ।

सेस सकल थानिक विसय , परै प्रांत के भाग ॥६९॥

भूप अनेक तथा रजवाड़े , त्रिटिसराजपालित जस पाड़े ।

तिन कर नहिं सुराज महँ काजू , मलिन करहिं जनतन्त्रसमाजू ॥

करहिं विविध विध अनयअचारा , कीनहिं जनता कर अधिकारा ।

विलयन तासु उचित खलु तासों , जन अधिकार लहैं सम जासों ॥

लिखित विधान देस कर एका , होय सकल सासन कर टेका ।

लखहु तासु पुनि मूल-अधारा , मौलिक जनता कर अधिकारा ॥

*चार प्रकार तासु बुध जानै , प्रथम भाव-स्वातन्त्र्य बखानै ।

बहुरि करम-भासनअधिकारा , धरम-विहार इच्छा-अनुसारा ॥

न्यायदृष्टि महँ होयँ सब , मानव एक समान ।

रावरंकअधिकार कर , रच्छा करै विधान ॥७०॥

अहहि सुराज सदा सुखसारा , जासु मूल सुभ न्यायविचारा ।

सत्य-अधार थिर सासन जोऊ , जनताहित सुखसाधन सोऊ ॥

करहिं प्रजा-सासक सहयोगू , उभय छाँड़ि बलकपट-प्रयोगू ।

सासक करहिं प्रजाहितकाजू , जनता पालत नियम-समाजू ॥

सासन-हित देवहिं करदाना , सफल करन हित न्याय-विधाना ।

प्रजा तनय इव सासक पालै , जनताहितघातक रिपु घालै ॥

* संयुक्तराष्ट्र अमरीका के भूतपूर्व प्रधान रूजवेल्ट द्वारा वर्णित
४ प्रकार की स्वाधीनता—१ विचार-स्वातन्त्र्य २ क्रिया-स्वातन्त्र्य
३ भाषण-स्वातन्त्र्य ४ धार्मिक विचार तथा व्यवहार की स्वतन्त्रता ।

† गहहिं प्रजा सन करधन जोऊ , देवहिं तिनहिं सहसगुन सोऊ ।

गहत धरा सन जल जिमि भानू , देय पलटि पुनि सहस-प्रमानू ॥

करहिं प्रजाजन जनकसम , सासक - गन - सनमान ।

वचन जानि हितकर अमित , सादर करहिं प्रमान ॥७१॥

गाँधि नियम अस संतत राखा , सत्य-अधार चहत फल चाखा ।

सतत सुराज-सुख-साधन केरा , साँच बिना निसफल सुख हेरा ॥

साँच बिना नहिं चहहुँ सुराजू , साँच बिना निसफल सुखसाजू ।

भावत नहिं मो कहँ परराजू , चहहुँ देसहित आपुनराजू ॥

पै नहिं मोर अनृत सन काजू , साँच बिना बिसमय सुखसाजू ।

हेमचसक महँ गरल समाना , अनृतमूल सुखसाधन जाना ॥

साँच बिना निसफल सुराजू , नाहिन मोर मुक्ति सन काजू ।

भावत नहिं त्रिभुवन कर राजू , सहित सकल सुखसाधनसाजू ॥

जियन लागि अस गाँधि कर , रही सदा सुभ टेकु ।

सत्य-पन्थ सों टरहुँ नहिं , पाय प्रलोभन नेकु ॥७२॥

धरमनीति कर मेल अनूपा , करि कै गाँधि सत्यप्रियभूपा ।

सत्याग्रह-प्रयोग करि भारा , सकल बिस्व बिस्मित करि डारा ॥

ब्रिटिसराजवल अमित अपाग , बिभव अमित आयुधचय भारा ।

एकल गाँधि गहि सत्य-अधारा , सख अहिंसा कर कर धारा ॥

मर-सुराज हेत तिन कीना , ब्रिटिसराज-मद चूरन कीना ।

ऋतप्रभाव पुनि पाय सुराजू , थापनहित जनतन्त्रक-साजू ॥

† 'प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।

सहस्रगुणमुत्सृष्टुमादत्ते हि रसं रविः ॥ (रघुवंश-कालिदास)

† 'सत्य के बिना स्वराज्य प्राप्त की मुझे तनिक भी इच्छा नहीं'—(म० गाँधी)

न्यायविधान कर कीन सुभावा , तासु मूल सुभ सत्य बनावा ।
दृढ़-अधार भवन थिर जैसे , सत्य-मूल सासन थिर तैसे ॥

धरमनीति सुभ मेल सन , थापित कीन सुराज ।

धरमनीतिसन उचित अब , तासु प्रचालन काज ॥७३॥
नीति-विसारद राजगुपाला , भाखत पुनि मृदु गिरनयपाला ।
विस्वविदित सुभ साँति-प्रसारक , गाँधि भयो सुभ प्रेम-प्रचारक ॥
सत्यअहिंसापरक संदेस , धरमकरनहित तासु निदेस ।
होय अबसि जगहित कर साधक , वृजिनवृद्धिमारग महँ बाधक ॥
रामराज कर सुखद विचारा , जासु प्रचार कियो तिन भारा ।
राजन तासु सरूप बताई , करहु कृपा मो पै अति भाई ॥
राजन तब बोले मृदु बानी , राजगुपाल सुनहु गुनखानी ।
बरनहुँ रामराज कर सोभा , मानव-मन उपजावन लोभा ॥

रामराज महँ सतत सुख , होय न दुख लवलेस ।

मानव-तन-मन-आतमा , होवहिं विगत-कलेस ॥७४॥
प्रेमभाव-डंका सुभ बाजै , न्याय-भेरि-धुनि चहुँ दिसि गाजै ।
सबल मनुज नहिं निबल सतावैं , प्रेम परस्पर अधिक जतावैं ॥
बैठि परस्पर भेद मिटावैं , बैर-विरोध न कहूँ उपजावैं ।
बनिज-बिहार नीति-अनुकूला , करहिं न किंचित् नय-प्रतिकूला ॥
करहिं कुटिलबिबहारनिसेधू , बैरभाव - मत्सरप्रतिसेधू ।
मानव कहँ नहिं मानव मारै , दानव-भाव सकल तजि डारै ॥
साँति-समीर बहै सब ओरा , समर-प्रभंजन करहि न सोरा ।
जीवहिं प्रीति सहित सब लोका , पावहिं मोद सकल गतसोका ॥
सांतिनीर सों समन करि , बैरबहि दुखमूल ।
सुखी बसैं मानव सबै , पाय प्रेम सुखमूल ॥७५॥

सुखद सदा जग बहैं समीरा , बरसैं पयद समय पै नीरा ।
 सस्य-स्यामला छिति नित सोहै , प्राकृत-सुखमा नर-मन मोहै ॥
 ऋतु-अनुकूल समय-अनुसारा , देवहिं अमित अन्नफलभारा ।
 घातक रोग न देखिय एकू , आधि-व्याधिसंकट नहिं नेकू ॥
 विधवा-दीन-अपाहिज जोऊ , कहूँ दुख-दाब दहैं नहिं सोऊ ।
 सासकजन तिन कर दुख टारैं , खलजनकृतपातक परिहारैं ॥
 सिच्छारहित मनुज नहिं कोऊ , निज सप्तलाभ लहहिं सब कोऊ ।
 सुखसन बसहिं रंक अरु राऊ , अन्न-बसन-गृह-कस्ट न काऊ ॥

सब नर निज-आजीविका , पाय बसैं सुखसंग ।

भ्रातृभाव सन नित रहैं , न्हायें प्रेम-तरंग ॥७६॥
 विकट बैरवाधा सब नासैं , प्रेमभाव चहुँधा परकासैं ।
 मधुर बचन बोलैं सब लोकू , हरहिं अवर मनुजन हिय-सोकू ॥
 स्वार्थ तजहिं परार्थ लागी , जनहित कस्ट सहहिं बड़भागी ।
 परमधरम मानहिं उपकारू , ता त्रिनु गनहिं जियन निजभारू ॥
 पर-अधिकार गहै नहिं कोऊ , धरम-बिहार करैं सब कोऊ ।
 चहुँ दिसि धरम-दुंदुभी बाजै , सदगुन-सहित साँच छिति साजै ॥
 विस्वप्रेम कर भाव बिसाला , नासै सकल समरकृत ज्वाला ।
 रामराज-महिमा सरसावै , जन-प्रमुदाय सतत सुख पावै ॥

प्रजा बसहिं सुख सन सबै , न्यायसील नृप होयँ ।

सासक-जन निज धरमरत , करमसील नित होयँ ॥७७॥
 सासक होयँ न्यायव्रतधारी , सबल सुघर जनताहितकारी ।
 निरबल कहँ न सतावहिं बीरा , करहिं सदैव हरन परपीरा ॥
 घूसखोर निरदय अभिमानी , सासक करहिं अमित जनहानी ।
 सासकजन जहँ न्यायपरीता , होय देख दुखदास्दिरीता ॥

राजदंडबस करि अपराधी , हरहिं सुजनजनकस्ट-उपाधी ।
करहिं देसहित सतत विचारा , बरधन-हित सुखसांति अपारा ॥
सासनचक्र करहिं गतदूसन , होवहिं देसजाति कर भूसन ।
तिनहिं सदा प्रिय न्याय-विचारा , करम करहिं निज धरम-अधारा ।

प्रचुर होयँ धनधान्य अरु , सुखसमृद्धि चहुँ ओर ।

रामराज भारत लसै , सकल देस-मिरमौर ॥७८॥
रामराज मद्यप नहिं कोऊ , अथवा होय कृपन नर जोऊ ।
सकल देस महुँ तस्कर नाहीं , धरमनिस्त नरनारी लखाहीं ॥
दीसै पुरुष न कहूँ विभिचारी , किमि पुनि होवहि कुलटा नारी ।
मनुज असिच्छित नहिं कहूँ कोऊ , अथवा होय दुखी जन जोऊ ॥
बित्त प्रचुर देवहिं जन दानी , होवहिं नहिं किंचित अभिमानी ।
समुचित करम करहिं सब नागर , कारज-कुसल सकल गुन-सागर ॥
गतस्वारथ सेवाव्रतधारी , पर-उपकारनिरत नरनारी ।
बनिता-बाल-जुबक गुनखाना , देस-धरमहित देवहिं प्राणा ॥

होयँ अरुज अरु सबल सब , जरट-जुबक-तिय-बाल ।

त्रिविध ताप सों छूटि कै , सुख सन होयँ निहाल ॥७९॥
ऊँच नीच कर नहिं कछु भेदा , करम करहिं सब जन गतखेदा ।
स्वारथहीन सकल नरनारी , जनता प्रभु कर अटल पुजारी ॥
कारज करहिं जगतसुखसाधक , कबहुँ न होयँ परस्पर बाधक ।
ग्यानपियूख पियहिं सुखसारा , उन्नति सब विधि करहिं अपारा ॥
कृषि-बिपार अरु लाभद धंधे , जन अनुसरहिं सत्यव्रत बंधे ।
प्रजापाल सासकजन न्यायी , खलघातक साजन सुखदायी ॥
देसभगतजन धरमपरायन , पूजहिं देव दरिद्रनरायन ।
घर घर होवहिं मोद महाना , क्रंदन-सुर कहूँ परत न काना ॥

मानसहित जीवन सबै , निरभय करहिं वितीत ।

दुख-दारिद्र अनुभव सबै , दीसै सुपन अतीत ॥८०॥
 हिन्दू - मुसलिम - सिक्ख - ईसाई , रहैं परस्पर सादर भाई ।
 धरम-करम निज निज अनुसरहीं , अवर काज-बाधा नहिं करहीं ॥
 संप्रदाय - भगरे सब नासैं , सत्य-प्रेम-आलोक प्रकासैं ।
 होय अरथ-उन्नति अस भाँती , लखिय नहीं जा वक जन-पाँती ॥
 मनुज-समाज सुसंस्कृत ऐसा , कंचन विमल खोट विनु जैसा ।
 विधवा अरु अनाथ नहिं आरत , सुखसंपत्ति-परिपूरन भारत ॥
 देस-मुकुटमनिरूप सुहावै , निज प्रभाव पावन जस पावै ।
 आंगल - देस - रूस - अमरीका , भारत-जस गावहिं सब नीका ॥

दिनकर-सम भारत लसै , रहै न तमलबलेस ।

तस्कर-सम सिगरे नसैं , दारुन कस्ट - कलेस ॥८१॥
 सांति-समेत रहैं सब लोका , सुख-संपत्ति-पूरन गतसोका ।
 विप्र होयँ निगमागमप्रेमी , पूतचरित परकारजनेमी ॥
 रच्छा करहिं दीन कर बीरा , हरहिं तुरत आरतजनपीरा ।
 बनिक करहिं नित सुद्र-बिहारा , सुद्रन कहँ सेवाव्रत प्यारा ॥
 अहहिं छात्र विद्या-अनुरागी , संजमसील कुभाव - बिरागी ।
 अहहिं गृहस्थ धरमरत नीके , अनुयायी निज कुल-सरनी के ॥
 तापस होयँ ईस - अनुरागी , भगतिपरायन विसय-बिरागी ।
 परिव्राजक जनता - हितकारी , स्वारथ तजि मानव-सुखकारी ॥

चार वरन अरु आसरम , निज-निज धरम विचारि ।

करम करैं निज प्रेम सों , स्वारथ सकल बिसारि ॥८२॥
 रामराजमहिमा दरसाई , सोकनिसा निज दूर हटाई ।
 प्रेमप्रभाकर-तेज प्रकासा , सन्त-सुजन-हिय-नलिनविकासा ॥

मंत्र-अहिंसा कर निज साधा , टारी बैर-उरगकृत बाधा ।
 नाहर-नाद सत्य कर कीना , बृजिन-निसाचर-हिय भयकीना ॥
 ईसभगति-आयुध गहि हाथा , समर कीन पातक-रिपु साथा ।
 सम-दम-प्रेम-कुलिस कर धारी , बृजिन-वरूथ समूल उपारी ॥
 धरमराज थापन जिन कीना , विमलसुजस त्रिभुवन महँ लीना ।
 कलिजुग धरम-मेंड़ जिन बांधी , मोहनदास करमचंद गांधी ॥

सुरकिन्नर नर गावहीं , जासु सुजस सविनोद ।

तासु चरित बरनन कियो , राजन बाबु समोद ॥८३॥
 अकनि गांधि-गुन-गौरव-गाथा , सादर कीन सवन नत माथा ।
 धन्यवाद राजन कर कीना , तासु अनुग्रह बहु मन चीना ॥
 कहहिं बापु नवजीवनदाता , भारतभाग - पुनरनिरमाता ।
 देसपिता अति पुन प्रभाऊ , जनता कर गुन-करम-सुभाऊ ॥
 परवर्तित जिन सब करि डारा , आतम-मानभाव भरि भारा ।
 देस-प्रेम सुभ जोत जगाई , कायरता सब दूर भगाई ॥
 सत्य - अहिंसापाठ पढ़ाई , बृजिन-रोध कर सक्ति बढ़ाई ।
 आंगल कहँ जिन दीन चुनौती , पूरन कीन सुराज-मनौती ॥

असहयोग कर सख गहि , प्रेम-कवच सुभ धारि ।

सबल बैर-रिपुवार सब , गांधि दिये निरवारि ॥८४॥
 ताकर गुन गावहु मिलि मीता , जिन रिपु सबल प्रेम सन जीता ।
 विस्वप्रेम कर पाठ पढ़ावा , मनुजमात्र कहँ अस समुझावा ॥
 तजहु मीत सब समर-बिचारा , बैर-अगद नहिं सम-समसारा ।
 गौतम-सम अस कीन प्रचारा , बैर सों बैर टरै नहिं टारा ॥
 प्रकट कीन पुनि बिमा-प्रभाऊ , छाँड़त बैर-बीज नहिं काऊ ।
 देवत ताहि समूल उपारी , सीतल प्रेमतक्र सुभ डारी ॥

पसुबल-समन बिमा सन होवै , आतमबल ता कर मद खोवै ।
असहयोग पातक सन कीना , बृजिन-बिजयसुख देय नवीना ॥

तासु चरनरज सीस धरि , चित धरि चरित उदार ।

मानस राखि बिचार सुभ , करहु विमल बिबहार ॥८५॥
ध्यानमगन सब छिन इक ठाढ़े , मानहुँ चित्रफलक पै काढ़े ।
सुमिरिसुमिरिसुभ बापु विचारा , देव-समान चरित्र उदारा ॥
मनुजमात्र प्रति प्रेम अपारा , निजप्रति प्रनय-प्रदरसन भारा ।
उर महँ उमड़ि नेहसरिधारा , नसे सकल हियदोसबिकारा ॥
ताछिन बिसद भई नभवानी , धन्य धन्य गांधी गुनखानी ।
दुरितदनुज कहँ राम-प्रमाना , बैरसमन हित बुध-सम जाना ॥
करमजोग महँ कृस्न-समाना , भगति-जोग महँ नानक जाना ।
ईसा इव सुभ प्रेम-प्रकासी , मुहमद अटल ईस-बिसवासी ॥
बहु विधि स्लाघा अस करी , सुरगन गांधि सराहिं ।

करहिं आरति प्रेम सन , नहिं गुन गाय अवाहिं ॥८६॥
जय गांधि सकल कलि-गपहरं , अघताप भयावह सापहरं ।
जय गांधि अहिंसासत्यपरं , बहुमान - मदादिकदोसहरं ॥
जय गांधि धरमअवतारधरं , भ्रममूलमतादि - बिनासकरं ।
जय गांधि सुराजअधारवरं , दुखदारिद - रोग - नितान्तहरं ॥
जय गांधि समाज-सुधारकरं , बहुदीन - दलित - जन-कस्टहरं ।
जय गांधि सुदरसनचक्रधरं , सुभ वस्तुसुदेसिप्रचारकरं ॥
जय गांधि अविद्यातिमिरहरं , सुभ ग्यानप्रभाकरभासकरं ।
जय गांधि समरअभिसापहरं , जय मोहन प्रेमप्रसारकरं ॥

न्याय-दयाअवतार सुभ , हिंसा - अनयकुठार ।

सत्यधरमपालक परम , कलि - किलबिखसंहार ॥८७॥

तव प्रसाद अरु राजगुपाला , गांधी-भगत जवाहिरलाला ।
 अमृतकौर अरु अबुलकलामा , बल्लभभाई सकल गुनधामा ॥
 सुनि कै मृदुल सार-जुत बानी , मानहु मधुर अभियरससानी ।
 मानस महँ अतिसै मुद पायो , इस्टदेव कहँ मस्तक नायो ॥
 सरधासहित कीन ब्रतधारन , सरवस तजि भारत-हित कारन ।
 तनमनधन सन करि निज काजू , रखिहैं गांधि-दत्त थिर राजू ।
 प्रजा-लाभ हित करि सुभकरमा , पूरन करि सासकजन-धरमा ।
 करिहैं पालन बापु-निदेख , बाँड़ि सकल बाधा-अंदेख ॥

साजनजनमनसा सदा , पूरन करैं रमेस ।

देसभगत-मन तोस करि , टारैं सकल कलेस ॥८८॥

नासैं सकल कलेस , मुदमंगल होवै सदा ।

कृपा करैं कमलेस , वृद्धि होय धन-धान्य कर ॥८९॥

न्यायसील नृप होयँ , प्रजावसहिं सुखसन सबै ।

मान करैं सब कोय , गो-द्विज-पुन्त-सुरादिकर ॥९०॥



